फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 3 के दो हिस्से

1 गुफ़्तगू के आदाब

2 फ़ुज़ूल बातों से बचने की फ़ज़ीलत

सफ़हात 160

- 80 फ़ीसद गुनाह ज़बान से होते हैं 18
- हज़रते लुक़्मान हकीम के बारे में मा'लूमात 110
- बोलने से पहले तोलने का त़रीक़ा 116
- फ़ुज़ूल बातों से बचने के 25 वाक़िआत 131

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

DAWATEISLAMI INDIA

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
गुफ़्तगू के आदाब	13	नेकी की दा'वत फ़ौरन दीजिये	20
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	13	सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब	
बातचीत में आवाज़ बुलन्द करने की मज़म्मत	13	अच्छे अख़्लाक़ वाले होंगे	21
नर्म आवाज़ से बात करना सुन्नत है	13	"अच्छे अख़्लाक़" किसे कहते हैं ?	21
मुश्रिकीने अ़रब ऊंचा बोलने को फ़ख़्र समझते थे	14	सब से ज़ियादा नुक़्सान देह चीज़	21
गधा क्यूं बोलता है ?	14	कान शीशे की त़रह़ और फ़ुज़ूल कलाम	
ज़ोर से छींकना भी मक्रूह है	14	पथ्थरों की मानिन्द है	22
मिलने वाले की त़रफ़ चेहरा रखिये	14	ज़बान में हड्डी नहीं मगर हड्डियां तुड़वा देती है	22
गुफ़्तगू समझ में आए ऐसा अन्दाज़ होना चाहिये	14	किसी को गधा या ख़िन्ज़ीर कहना	22
सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की		मुसल्मान को बुरे लक़ब से पुकारना गुनाह है	22
मुबारक गुफ़्तगू आसान होती	14	फ़िरिश्ते ला'नत भेजते हैं	23
सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बात तीन बार दोहराते	16	बच्चों से भी सच बोलिये	24
गुफ़्तगूए मुस्त़फ़ा	16	ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर का ज़िक्रे ख़ैर	24
मुश्किल ज़बान बोलने वाला वज़ीर (चुटकुला)	16	माल व मकान दोनों रख लो (बाक़िआ़)	24
सब से ज़ियादा जहन्नम में ले जाने वाली दो चीज़ें	17	मां बाप के ना फ़रमान की इस्लाह़ कैसे हुई ?	25
वोह जन्नती है कौन ?	17	बच्चों को झुटा बहलावा देना	26
जन्नत की ज़मानत	17	बच्चों को फुस्लाने के लिये मोह़तात़ त़रीक़ा	
80% गुनाह ज़बान से होते हैं	18	इख़्तियार कीजिये	27
ज़बान से तमाम आ'ज़ा की इल्तिजा	18	ज़बान संभालने वाले के अ़मल भी संभल जाते हैं	27
इज्तिमाई ए'तिकाफ़ इस्लाह़ का ज़रीआ़ बन गया	18	मज़ाक़ में झूट बोलने वाले से	
आर पार नज़र आने वाले		सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी	27
ऊंचे ऊंचे जन्नती मकानात	20	जहन्नम की गहराई में गिरता है	27
अच्छी बात सदक़ा है	20	कॉमेडियन मुतवज्जेह हों !	28
सदक़ा या'नी ?	20	कॉमेडी शो का मस्अला	28

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
आख़िरत के काम में जल्दी करनी चाहिये	29
अच्छा बोलना तौफ़ीक़े इलाही और.....	29
अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त करो !	29
दूसरों के पास भी ज़बानें हैं	30
उस बात में कोई भलाई नहीं	30
अच्छे अन्दाज़ पर पुकार कर सवाब कमाइये	30
किसी के पुकारने पर जवाबन लब्बैक कहना	30
मज़ाक़ करने वाला नज़रों से गिर जाता है	31
आपस में नफ़रत का एक सबब	31
हंसी मज़ाक़ से दुश्मनी पैदा होती है	31
गुनाहे कबीरा की ता'रीफ़	32
ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़	32
70 साल के आ'माल बरबाद	33
गुनाह से भी बड़ा जुर्म	33
ख़ुद पसन्दी की अहम वज़ाहत	33
ख़ुद पसन्दी का एक मुजर्रब इ़लाज	34
ख़ुद पसन्दी के आठ अस्बाब व इ़लाज	35
बिगड़ा हुवा नौ जवान सुधरना शुरूअ़ हो गया	36
फ़ोहूश गोई के बारे में	
4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	37
गन्दी ज़बान ख़त़रनाक बीमारी है	37
कुत्ते की शक्ल वाला	38
फ़ोहूश बात की ता'रीफ़	38
8 आठ मदनी फूल	39
दुन्या व आख़िरत में काम आने वाली 15 बातें	40
नसीह़तों भरी 50 दिलचस्प बातें	42
ज़बान के मुतअ़ल्लिक़	
19 अ़रबी मुह़ावरे (मअ़ उर्दू तरजमा)	46
11 उर्दु मुह़ावरे (मअ़ मा'नी)	47
गुनाहों की आ़दतों से तौबा नसीब हो गई	48
फ़ुज़ूल बातों से बचने की फ़ज़ीलत	51
कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना काम आ गया	51
अल्लाह पाक को फ़ुज़ूल बातें ना पसन्द हैं	52
आयते मुबारका की तफ़्सीर	53
बेकार बातों से बचने की तरग़ीब	53
नजात क्या है ?	53
ज़बान की हिफ़ाज़त करने की ज़रूरत और इस के फ़वाइद व नुक़्सानात	54
खजूरों का थाल (वाक़िआ़)	54
लोग कहीं तुम्हारे दांत न तोड़ दें	54
एक फ़ुज़ूल सुवाल की अनोखी सज़ा (वाक़िआ़)	55
दोज़ख़ का अ़ज़ाब कोई बरदाश्त नहीं कर सकता	55
भारी आ'माल	55
आदमी की ख़ूब सूरती क्या है ?	56
आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नसीह़त	56

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
दुआ़ए मुस्त़फ़ा	56	आ'माल का जाएज़ा	66
अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की नज़रे इ़नायत फिर जाने की अ़लामत	56	**अल्लाह** पाक से ज़बान की तेज़ी की शिकायत	67
फ़ुज़ूल बोलने वाले के गुनाह सब से ज़ियादा	57	हमें ज़बान से बाहर मत निकाल	67
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी औफ़ा का ज़िक्रे ख़ैर	57	ज़बान को क़ैद ही में रहना चाहिये	67
ज़कात देने वाले के लिये दुआ़	57	ज़बान की ह़िफ़ाज़त से इ़बादत पर इस्तिक़ामत मिलती है	68
सह़ाबिये नबी से इमाम अबू ह़नीफ़ा की मुलाक़ात	58	फ़ुज़ूल बात पर ख़ुद को सज़ा (वाक़िआ़)	68
फ़ुज़ूल बात किसे कहते हैं ?	58	सख़्त गरमी का रोज़ा बरदाश्त मगर.....	69
ख़ामोशी फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली हो तो ग़फ़्लत है	59	ज़बान ह़िफ़ाज़त की ज़ियादा ह़क़दार है	69
ग़फ़्लत किसे कहते हैं ?	59	रोज़ी में तंगी का एक सबब	69
मुझे तुम पर ग़फ़्लत का ख़ौफ़ है	60	**अल्लाह** पाक तमाम बातें सुनता है	70
बल्कि नमाज़ें क़ज़ा होने पर रो रहा हूं	60	अगर फ़ुज़ूल बातें करने पर रक़म देनी पड़ती तो ?	70
रोता हुवा दाख़िले जहन्नम होगा	60	हर बात फ़िरिश्ते लिखते हैं	70
बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में बिशारत दी	61	फ़ुज़ूल गुफ़्तगू के मुतअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ़	71
बोलने और चुप रहने की दो क़िस्में	63	सात मदनी फूलों का "फ़ारूक़ी गुलदस्ता"	72
ज़बान की ह़िफ़ाज़त न करने वाले पर शैत़ान ग़लबा पा लेता है	64	फ़ुज़ूल बातों का ह़िसाब बहुत लम्बा होगा	72
शैत़ान का सब से बड़ा हथियार	64	न बोल, न मुसीबत में पड़	72
सिद्दीक़े अक्बर मुंह में पथ्थर रख लेते	65	बोलने वाले की अ़क़्ल का अन्दाज़ा हो जाता है	72
40 बरस तक ख़ामोशी की मश्क़ (वाक़िआ़)	65	बाज़ारी गुफ़्तगू करने वाले को नसीह़त	73
गुफ़्तगू लिख कर उस का जाएज़ा लेने वाले ताबेई़ बुज़ुर्ग	65	दा'वते इस्लामी ने नमाज़ी बना दिया	73
बातचीत के जाएज़े का त़रीक़ा	66	ज़बान गोया ह़म्ले के लिये तय्यार शेर	74
		फाड़ खाने वाला दरिन्दा	74
		माल की ह़िफ़ाज़त आसान है मगर ज़बान.....	74

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
आ़शिक़ों की 6 निशानियां	75	तल्वार का ज़ख़्म भर जाता है मगर	
जहालत की 6 निशानियां	75	ज़बान का ज़ख़्म नहीं भरता	87
फ़ालतू बातों के चार लरज़ा खे़ज़ नुक़्सानात	76	ज़बान को क़ैद कर के रखो	87
ख़ामोशी सीखो	77	जो बात दो होंटों में न समाई अब वोह कहीं न समाएगी	88
इ़बादत की शुरूआ़त ख़ामोशी से	78	घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात होता है	88
ख़ामोशी इ़बादत की चाबी है	78	बा'ज़ अवक़ात तो ऐसी बात मुंह से	
पांच बेहतरीन नसीहतें	78	निकल जाती है कि.....	89
ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	79	वोह बे फ़ाएदा कम बोलेगा	89
साठ साल की इ़बादत से बेहतर	79	ज़बान का फिसलना पाउं के फिसलने से	
भलाई की बात करो या चुप रहो	80	ज़ियादा ख़त़रनाक है	89
आक़ा त़वील ख़ामोशी वाले थे	80	न जाने कौन सी घड़ी क़बूलिय्यत की हो	90
अफ़्सोस ! तिलावत सुन कर बहुत से लोग उठ गए	80	फ़ुज़ूल बोलने वाले की क़ियामत में	
तिलावत सुनने का शौक़	81	पांच जगह परेशानी	90
एक आयत सुनने की फ़ज़ीलत	81	ख़ामोशी में सात हज़ार फ़ाएदे हैं	91
तिलावत में 20 बरस मशक़्क़त उठाई	81	जवानी दीवानी है इस के शर से बचो !	91
जन्नत दरकार हो तो ख़ैर के सिवा		न बोलने में नव गुन	91
कुछ ज़बान से मत निकालो	82	ज़बान की हिफ़ाज़त सोने चांदी की त़रह़ करो	91
गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली	82	ख़ामोशी "सोना" है	92
ख़ामोशी ईमान की सलामती का ज़रीआ़ है	84	साहिबे हिक्मत कौन ?	92
जन्नती होने का राज़ (वाक़िआ़)	84	कम कलाम ज़ियादा काम	92
हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती	85	चालीस साल की रातें फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ किया	92
तमाम सह़ाबा जन्नती हैं	86	ना फ़रमानी का एक लफ़्ज़ भी दोज़ख़ में	
ज़ियादा खाना भी ज़ियादा बोलने का एक सबब है	87	पहुंचा सकता है	93
बिग़ैर भूक के खाने वाला बातूनी होता है	87	बुरी सोह़बत ने बरबाद कर के रख दिया था	93

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
बात को फ़ुज़ूलिय्यात से पाक करने का बेहतरीन नुस्ख़ा	95	ह़िकायत की वज़ाह़त	104
दुन्यवी बात मुंह से निकल जाए तो कुछ ज़िक्रुल्लाह कर लेना चाहिये	96	मुतअस्सिर करने के लिये बातचीत के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ इख़्तियार करना	105
जब रह़मत की तवज्जोह हटा दी जाती है	97	बातें भी ज़ियादा ख़ताएं भी ज़ियादा	106
हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ से महरूम	97	जैसा सफ़र, वैसा ज़ादे सफ़र होना चाहिये	106
बोलने वाला बारहा पछताता है	97	घर में सुन्नतों भरा माह़ोल बनाने में ख़ामोशी का किरदार	107
"बोल कर" पछताने से "न बोल कर" पछताना अच्छा	98	ग़ैर ज़रूरी सुवालात की आफ़ात	108
ज़ियादा बोलने वाले को नदामत उठानी पड़ती है	98	सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ह़िक्मत	109
जो तोल कर बोलता है फ़ुज़ूल बातों से बच जाता है	98	ख़ामोशी दानाई है (वाक़िआ़)	110
केन्सर की मरीज़ा सिह़्ह़त याब हो गई	99	बे फ़ाएदा गुफ़्तगू किसे कहते हैं ?	110
कोई बीमारी ला इ़लाज नहीं	99	ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम के बारे में मा'लूमात	110
केन्सर का रूह़ानी इ़लाज	100	लुक़्मान ह़कीम कौन थे ?	111
बे वुकूफ़ जब तक ख़ामोश रहता है		ह़ज़रते लुक़्मान जन्नत के सरदारों में से हैं	111
पहचाना नहीं जाता	100	ह़िक्मत की 4 ता'रीफ़ात	112
आधी रात तक अगर सूरज न डूबे तो ? (वाक़िआ़)	100	ह़ज़रते लुक़्मान त़िब (या'नी इ़लाज) के भी ह़कीम थे	112
काश ! मैं गूंगा होता	101	वॉशरूम में देर तक बैठने के नुक़्सानात	112
काश ! येह गूंगी होती	101	ज़बान व दिल बिगड़ जाएं तो.....	112
घर अम्न का गहवारा कैसे बने !	101	फ़ुज़ूल सुवालात की मिसालें	113
सोशल मीडिया की एक क़ाबिले ग़ौर पोस्ट	102	फ़ुज़ूल गो का झूटे मुबालग़े से बचना दुश्वार होता है	114
सास बहू का झगड़ा निमटाने का नुस्ख़ा	102	अ़लाक़े में दीनी माह़ोल बनाने में ख़ामोशी का किरदार	114
ख़ामोशी की बरकत से दीदारे मुस्त़फ़ा	102	दीनी कामों के लिये ख़ामोशी	115
ज़बान की आफ़तें बहुत ज़ियादा हैं	104	बे वुकूफ़ बे सोचे बोलता है	116
उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ फूट फूट कर रोए	104		

https://www.dawateislamiindia.org/

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
ज़बान संभालो सब काम संभल जाएंगे	116
पहले तोलो, बा'द में बोलो	116
बोलने से पहले तोलने का त़रीक़ा	116
चुप रहने का त़रीक़ा	118
फ़ुज़ूल इशारे का भी हिसाब है	118
पहले "तोलो" बा'द में "बोलो" का फ़ाएदा	119
फ़ुज़ूल तज़्किरे	120
बातूनी शख़्स का दिल सख़्त हो जाता है	120
ह़ज़रते इमाम मालिक बातूनी शख़्स को समझाया करते	121
गुन्डा शरीफ़ बन गया	121
गुनाहों के 7 इलाज	122
जिस नेकी का करना मुश्किल हो उस का सवाब भी ज़ियादा होता है	123
फ़ुज़ूल गोई से रुक जाए	124
जन्नत में अफ़्सोस न होगा	125
क़लम का क़त़	125
जन्नत में दरख़्त लगवाइये !	125
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	126
बात करने का दीनी या दुन्यावी फ़ाएदा	126
سُبْحٰنَ اللّٰه कहने कहलवाने की निय्यत	127
साठ साल की इबादत से बेहतर	127
अनमोल लम्ह़ात की क़द्र	128
नदामत का बहुत बड़ा सबब	128
वक़्त तल्वार की त़रह़ है	128
सकरात में तिलावत	129
जब फ़ैज़ाने सुन्नत घर में दाख़िल हुई	129
फ़ुज़ूल बातों से बचने के बारे में 25 वाक़िआत	131
﴾1﴿ ऐसी बात न करो कि बा'द में मा'ज़िरत करनी पड़े	131
ह़दीसे पाक के दो हिस्सों की शर्ह़	131
﴾2﴿ अब्बूजान ! आप बोलते क्यूं नहीं ?	132
﴾3﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा पाने का त़रीक़ा	132
﴾4﴿ कोहे सफ़ा पर खड़े हो कर ज़बान को नसीह़त की	133
﴾5﴿ तुझ पर अफ़्सोस है	133
﴾6﴿ मुझे ख़ामोश रहना बोलने से ज़ियादा प्यारा है	134
﴾7﴿ पानी और हवा पर चलने वाले 3 बुज़ुर्ग	135
जन्नत में दरख़्त, वबाओं से हिफ़ाज़त	135
﴾8﴿ मुंह में जैसे कोई चीज़ डाल दी गई हो	136
काश ! लोहे का दरवाज़ा ह़ाइल हो	136
﴾9﴿ ज़बान पर ह़ुकूमत	137
अल्लाह पाक काम्याबी देने वाला है	137

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
﴾10﴿ चार उ़लमा, चार इर्शादात	137	बहुत बड़ा धोका	146
﴾11﴿ चार बादशाह, चार बातें	138	﴾19﴿ हिक्मत कैसे आती है ?	146
﴾12﴿ चालीस बरस तक नहीं हंसे	139	﴾20﴿ जवाब क्यूं नहीं देते ?	147
ख़ौफ़े ख़ुदा की फ़ज़ीलत	139	येह है बोलने से पहले तोलना	147
ह़दीसे मुबारका, ख़ौफ़े ख़ुदा रिज़्क़ और		﴾21﴿ अ़क़्लमन्द गूंगा, ना समझ बातूनी से	
उ़म्र में इज़ाफ़े का सबब	139	बेहतर है	148
ख़ौफ़े ख़ुदा से क्या मुराद है ?	140	लोगों को अपने शर से बचाओ	148
﴾13﴿ चुप रहने और बोलने वाले !	140	शर से बचाने की फ़ज़ीलत	149
﴾14﴿ नुक़्सान छुपाने के लिये		जन्नत में ले जाने वाले तीन आ'माल	149
ख़ामोश रहने की ताकीद	141	﴾22﴿ हर बेकार बात पर एक दिरहम ख़ैरात	150
दूसरे मुसल्मान के नुक़्सान पर		20 साल तक मुसल्सल कोशिश	150
ख़ुशी ज़ाहिर करना	141	कोशिश के मुतअ़ल्लिक़ आयते क़ुरआनी	150
﴾15﴿ ख़ामोशी अ़क़्ल मन्दों का शेवा है !	142	राहे ख़ुदा में कोशिश करने वालों को	
ग़लत़ मस्अला बताना	142	ख़ुश ख़बरी	151
जवाब देने से डरने वालों की तीन मिसालें	142	कम ज़हीन त़ालिबे इ़ल्म बहुत बड़े	
﴾16﴿ अ़क़्ल मन्दी दूसरे की बात न काटने में है	143	इमाम बन गए (वाक़िआ़)	151
ख़्वाह म ख़्वाह बीच में बोलने वाला		बादशाह और च्यूंटी (वाक़िआ़)	152
ना समझ होता है	143	बिल्ली ने कमाल कर दिया !	152
﴾17﴿ राज़दारी के लिये ख़ामोशी ज़रूरी है	144	﴾23﴿ तुम अपनी ख़ामोशी पर फ़ख़्र करना	153
वॉट्सएप के पैग़ामात दूसरों को भेजना	144	ख़ामोशी में कमाल है	153
किसी की बात दूसरों को न बताने के		﴾24﴿ परिन्दा बोल कर फंस गया !	154
मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा	144	﴾25﴿ "बहुत अफ़्सोस हुवा" कहना	154
﴾18﴿ सलामती चाहिये तो चुप रहना ज़रूरी है	145	"बेह़द बुख़ार है" कहना कैसा ?	155

https://www.dawateislamiindia.org/

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم.

"प्यारे अहमद रज़ा" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 12 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (مُعجَم کبیر ج ٦ ص ١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल

﴾1﴿ आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ क़ुरआनी आयात व ﴾6﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा और उन में बयान कर्दा अह़कामात पर अ़मल की कोशिश करूंगा ﴾7﴿ जहां जहां "**अल्लाह** पाक" का ज़ाती या सिफ़ाती नामे पाक आएगा वहां "पाक" या "करीम" वग़ैरा कलिमाते सना पढ़ूंगा और ﴾8﴿ जहां जहां "सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" का कोई भी ज़ाती या सिफ़ाती नामे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾9﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमाए किराम से पूछ लूंगा ﴾10﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾11﴿ अच्छी निय्यतों के साथ किताब पढ़ने पर जो सवाब ह़ासिल होगा वोह सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ﴾12﴿ इस किताब में दिये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ इस किताब से दर्स दूंगा।

1

गुफ़्तगू के आदाब

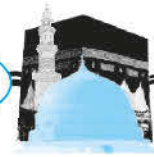

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ، وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ،
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ، بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔

गुफ़्तगू के आदाब

या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई "गुफ़्तगू के आदाब" के 37 सफ़हात पढ़ या सुन ले उसे सुन्नत के मुताबिक़ बातचीत करना आ जाए और उस की बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे।" (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث۴۸۴)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बेशक आदमी को बातचीत करने की ज़रूरत पड़ती रहती है मगर येह याद रहे कि ग़ैर ज़रूरी जाइज़ गुफ़्तगू से भी **ख़ामोशी** बेहतर है।

बातचीत में आवाज़ बुलन्द करने की मज़म्मत : अल्लाह पाक पारह 21 **सूरए लुक़्मान** आयत 19 में इर्शाद फ़रमाता है : وَاغۡضُضۡ مِنۡ صَوۡتِکَ ؕ اِنَّ اَنۡکَرَ الۡاَصۡوَاتِ لَصَوۡتُ الۡحَمِیۡرِ ﴿۱۹﴾

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपनी आवाज़ कुछ पस्त रख, बेशक सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

नर्म आवाज़ से बात करना सुन्नत है : ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस मुबारक आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : शोर मचाना और आवाज़ बुलन्द करना मक्रूह व ना पसन्दीदा है और इस में कुछ फ़ज़ीलत नहीं है, गधे की आवाज़ बा वुजूद

https://www.dawateislamiindia.org/

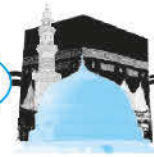

बुलन्द होने के मक्रूह (या'नी ना पसन्दीदा) और वहशत अंगेज़ (या'नी नफ़रत दिलाने वाली) है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नर्म आवाज़ से कलाम (या'नी बातचीत) करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को ना पसन्द रखते थे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 762)

मुश्रिकीने अ़रब ऊंचा बोलने को फ़ख़्र समझते थे : **हज़रते** अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : जब लोग आपस में गुफ़्तगू करें तो उन में सब से ज़ियादा बुरी और वहशत नाक (या'नी नफ़रत दिलाने वाली) आवाज़ उस की है जो गधे की त़रह़ ऊंची आवाज़ से बोलता है। मुश्रिकीने अ़रब ऊंचा बोलने को फ़ख़्र समझते थे, इस आयत में उन के इस फ़ख़्रिय्या त़रीक़े का रद फ़रमाया गया। (روح البیان ج۷ ص۸۷ سے خلاصہ)

गधा क्यूं बोलता है ? : **गधे** की आवाज़ का तज़्किरा हो रहा है तो इस बारे में एक मा'लूमाती रिवायत पेश की जाती है। चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जब तुम **मुर्ग़** की अज़ान सुनो तो **अल्लाह** पाक से फ़ज़्ल की दुआ करो क्यूं कि वोह फ़िरिश्ते को देखता है। और जब तुम **गधे** का रेंकना (या'नी बोलना) सुनो तो शैत़ान से **अल्लाह** पाक की पनाह मांगो क्यूं कि वोह शैत़ान को देखता है।" (بخاری ج۲ ص۴۰۵ حدیث۳۳۰۳) मसलन यूं कहिये : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم (تیسیر شرح جامع صغیر ج۱ ص۱۰۷)

ज़ोर से छींकना भी मक्रूह है : **हज़रते** अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ऊपर बयान की हुई आयते मुबारका के तअ़ल्लुक़ से मज़ीद लिखते हैं : इस से छींक का मस्अला भी वाज़ेह (या'नी ज़ाहिर) हो गया कि ज़ोर से छींकना मक्रूह (या'नी ना पसन्दीदा) है, इसी लिये हुक्म है कि जितना मुम्किन हो आहिस्ता आवाज़ से छींकने की कोशिश करे। (روح البیان ج۷ ص۸۸ ملخصا) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "ज़ोर से छींकना शैत़ान की त़रफ़ से है।" (عمل الیوم واللیلۃ ص۱۱۹ حدیث۲۶۵) सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। (شعب الایمان ج۷ ص۳۲ حدیث۹۳۵۶) हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के बारे में फ़रमाते हैं : मत़लब येह है कि मस्जिद में ज़ोर से छींकना ज़ियादा मक्रूह (या'नी सख़्त ना पसन्दीदा) है और मस्जिद के इ़लावा कम। (فیض القدیر ج۵ ص۳۱۱ تحت الحدیث ۷۱۵۶)

https://www.dawateislamiindia.org/

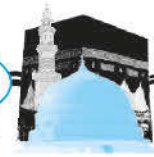

मिलने वाले की त़रफ़ चेहरा रखिये : **पारह** 21 **सूरए लुक़्मान** आयत 18 में इर्शादे इलाही है : وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ **आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** "और लोगों से बात करते वक़्त अपना रुख़्सार टेढ़ा न कर।" ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस मुबारक आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : जब आदमी बात करें तो उन्हें (या'नी जिस से बात कर रहे हैं उन को) ह़क़ीर जान कर उन की त़रफ़ से रुख़ फेरना, जैसा कि मुतकब्बिरीन (या'नी मग़रूरों) का त़रीक़ा है, इख़्तियार न करना, ग़नी व फ़क़ीर (या'नी अमीर व ग़रीब) सब के साथ ब तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी से) पेश आना। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 761)

ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तफ़्सीरे रूहुल बयान में लिखते हैं कि सलाम व कलाम और मुलाक़ात के वक़्त बत़ौरे तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी के त़ौर पर) अपना पूरा चेहरा लोगों के सामने लाइये, उन से चेहरा न हटाइये और न इस का कुछ ह़िस्सा छुपाइये, मुतकब्बिरीन की आ़दत होती है कि लोगों को ऐसे ही ह़क़ारत की निगाह से देखते हैं और फ़ुक़रा व मसाकीन को ग़ुस्से से देखते हैं, बल्कि तुम्हारे हां अमीर व ग़रीब दोनों अच्छे सुलूक के मुआ़मले में बराबर हों। (روح البیان ج۷ص۸٤)

गुफ़्तगू समझ में आए ऐसा अन्दाज़ होना चाहिये : **बाज़ारी** अन्दाज़ में चिल्ला चिल्ला कर बातें करने से बचना चाहिये कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी भी इस त़रह़ बातें नहीं करते थे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू शरीफ़ में आवाज़ न ज़ियादा बुलन्द होती, न इतनी धीमी कि सामने वाले को सुनने में दुश्वारी पेश आए।

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गुफ़्तगू आसान होती : **उम्मुल मुअमिनीन** (या'नी तमाम मुसल्मानों की मां) ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ गुफ़्तगू फ़रमाते, हर सुनने वाला उसे समझ लेता था।

(ابوداؤد ج٤ ص٣٤٣ حدیث ٤٨٣٩)

https://www.dawateislamiindia.org/

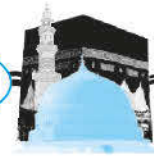

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बात तीन बार दोहराते : **ख़ादिमुन्नबी,** हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब कोई बात फ़रमाते तो उस को तीन मरतबा दोहराते ताकि उसे समझ लिया जाए। (بخاری ج۱ ص۵۲ حدیث۹۵)

शर्हे हदीस : "मिरआत शरीफ़" में है : या'नी मसाइल बयान करते वक़्त एक एक मस्अला तीन तीन बार फ़रमाते ताकि लोगों के ज़ेहन में उतर जाए, (यहां) हर कलाम (तीन बार दोहराना) मुराद नहीं। (मिरआत, जि. 1, स. 194)

गुफ़्तगूए मुस्तफ़ा : सिरातुल जिनान जिल्द 7 सफ़हा 502 पर है : सीरत की किताबों में मज़्कूर (या'नी बयान किया गया) है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत तेज़ी के साथ जल्दी जल्दी गुफ़्तगू नहीं फ़रमाते थे बल्कि ठहर ठहर कर कलाम (या'नी बातचीत) फ़रमाते थे और आप का कलाम इतना साफ़ और वाज़ेह होता था कि सुनने वाले उस को समझ कर याद कर लेते थे और अगर कोई अहम बात होती तो उस जुम्ले को कभी कभी तीन तीन मरतबा फ़रमा देते ताकि सुनने वाले उस को अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लें। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिला ज़रूरत गुफ़्तगू नहीं फ़रमाते थे बल्कि अक्सर **ख़ामोश** ही रहते थे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को "जामेअ़ कलिमात" का मो'जिज़ा अ़ता किया गया था कि मुख़्तसर से जुम्ले में लम्बी चौड़ी बात को बयान फ़रमा दिया करते थे।

मुश्किल ज़बान बोलने वाला वज़ीर (चुटकुला) : बोलने में अल्फ़ाज़ सादा और साफ़ साफ़ होने चाहिएं, मुश्किल अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने में हो सकता है कि अगले पर आप की "ज़बान दानी" की धाक तो बैठ जाए मगर आप कहना क्या चाह रहे हैं वोह उस की समझ में न आए। मेरी इस बात को इस "फ़र्ज़ी चुटकुले" से समझने की कोशिश कीजिये : एक बार वज़ीरे ज़राअ़तो आबपाशी (या'नी Minister for irrigation) एक गाउं के दौरे (या'नी Visit) पर थे, किसानों का एक वफ़्द (या'नी Delegation) मिलने आया, उन लोगों ने वज़ीर से इजाज़त लेने के लिये एक किसान को अन्दर भेजा, वज़ीर साहिब ने सर उठा कर देखा और पूछा : "तुम्हारी

https://www.dawateislamiindia.org/

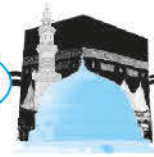

किश्ते ज़ार पर इम्साल तक़ातुरे अम्तार हुवा या नहीं ?" अनपढ़ किसान (FARMER) ने जब येह जुम्ला सुना तो फ़ौरन बाहर निकल आया और साथियों से कहने लगा : "वज़ीर साहिब तिलावत फ़रमा रहे हैं।"

ऐ आशिक़ाने रसूल ! वज़ीर साहिब अगर मुश्किल ज़बान न बोलते तो किसान परेशान न होता, हालां कि वोह तिलावत नहीं थी, बात ज़रा बना सजा कर पेश की गई थी, वज़ीर के जुम्ले का मा'ना है : "तुम्हारे खेत पर इस साल बारिश हुई या नहीं ?" लिहाज़ा जब भी किसी से बातचीत करें या तक़रीर व बयान फ़रमाएं या मज़्मून व किताब वग़ैरा लिखने की तरकीब करें तो सुनने पढ़ने वालों की समझ में आ सकें ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने की कोशिश फ़रमाएं।

सब से ज़ियादा जहन्नम में ले जाने वाली दो चीज़ें : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़बान को क़ाबू में रखना बहुत ज़रूरी है, बे शुमार लोग ऐसे भी होंगे जो सिर्फ़ ज़बान की वज्ह से जहन्नम में दाख़िल होंगे, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा गया कौन सा अ़मल लोगों को कसरत से जन्नत में दाख़िल करेगा ? आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह तक़्वा और अच्छा अख़्लाक़ है। और पूछा गया : क्या चीज़ लोगों को कसरत से जहन्नम में दाख़िल करेगी ? फ़रमाया : "दो चीज़ें : मुंह और शर्मगाह।"

(ابن ماجه ج٤ ص٤٨٩ حديث ٤٢٤٦)

वोह जन्नती है कौन ? : हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक ने जिस को जबड़ों के दरमियान और टांगों के दरमियान वाली चीज़ों (या'नी मुंह और शर्मगाह) की बुराई से बचा लिया वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(ترمذی ج٤ ص١٨٤ حديث ٢٤١٧)

जन्नत की ज़मानत : जो अपने मुंह और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे या'नी उन का ख़िलाफ़े शरीअ़त इस्ति'माल न करे वोह जन्नती है। चुनान्चे सहाबिये रसूल, हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ عَنْه का कहना है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुझे अपने जबड़ों और टांगों के दरमियान वाली चीज़ों (या'नी मुंह और शर्मगाह) की ज़मानत (GUARANTEE) दे मैं उसे

https://www.dawateislamiindia.org/

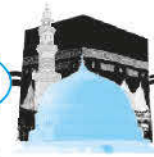

जन्नत की ज़मानत (या'नी गारन्टी) देता हूं।" (بخاری ج٤ص٢٤٠ حدیث ٦٤٧٤) या'नी मुंह और शर्मगाह को शरीअ़त की मन्अ़ की हुई चीज़ों से बचाने पर जन्नत का वा'दा है।

80% गुनाह ज़बान से होते हैं : **दो** जबड़ों के दरमियान की चीज़ ज़बान और तालू वग़ैरा है और दो पाउं के बीच की चीज़ शर्मगाह है या'नी अपनी ज़बान को झूट ग़ीबत ना जाइज़ बातें करने से बचाए, अपने मुंह को ह़राम ग़िज़ा से मह़फ़ूज़ रखे, अपनी शर्मगाह को बदकारी के क़रीब न जाने दे। ज़ाहिर बात है कि ऐसा मुसल्मान मुत्तक़ी (या'नी परहेज़ गार) होगा। ख़याल रहे कि तक़रीबन अस्सी (80) फ़ीसदी (या'नी ज़ियादा तर) गुनाह ज़बान से होते हैं। जो अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे तो वोह चोरी डकैती क़त्ल भी नहीं करता, इन्सान जुर्म जब ही करता है जब वोह झूट बोलने पर आमादा (या'नी तय्यार) हो जाए कि अगर पकड़ा गया तो मैं इन्कार कर दूंगा। झूट तमाम गुनाहों की जड़ है। ख़याल रहे कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की येह ज़मानत (या'नी गारन्टी) ता क़ियामत इन्सानों के लिये है और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़मानत ख़ुदा की ज़मानत (या'नी गारन्टी) है। (मिरआत, जि. 6, स. 447 ब तग़य्युर)

ज़बान से तमाम आ'ज़ा की इल्तिजा : **सह़ाबिये नबी** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब इन्सान सुब्ह़ करता है तो उस के आ'ज़ा (या'नी बदन के ह़िस्से) झुक कर ज़बान से कहते हैं : हमारे बारे में **अल्लाह** पाक से डर ! क्यूं कि हम तुझ से मुतअ़ल्लिक़ हैं, अगर तू सीधी रहेगी, हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी होगी हम भी टेढ़े हो जाएंगे।" (ترمذی ج ٤ ص١٨٣ حدیث ٢٤١٥)

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ इस्लाह़ का ज़रीआ़ बन गया : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** अगर हम ने **ज़बान** का सह़ीह़ इस्ति'माल किया तो इस का जो कुछ फ़ाएदा होगा वोह जिस्म के सारे आ'ज़ा (PARTS) पाएंगे और अगर येह सीधी न चली किसी को गाली वग़ैरा दे दी तो ज़बान को कोई तक्लीफ़ हो या न हो पिटाई बदन के दीगर आ'ज़ा (या'नी ह़िस्सों) की होगी। ज़बान की एह़तियात़ का ज़ेह़न बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये

https://www.dawateislamiindia.org/

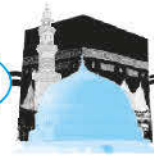

अल्लाह करीम तौफ़ीक़ दे तो माहे रमज़ानुल मुबारक में **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल कीजिये سُبْحٰنَ الله ! ए'तिकाफ़ की भी क्या ख़ूब बरकतें हैं ! आइये ! एक **''मदनी बहार''** आप के गोश गुज़ार करूं। एक इस्लामी भाई की बयान कर्दा तफ़्सीलात के मुत़ाबिक़ वोह दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आने से पहले مَعَاذَ الله नशा किया करते थे, शराब और चरस की ऐसी लत लग चुकी थी कि नशा आवर चीज़ें ख़रीदने के लिये चोरी और डकैती भी शुरूअ़ कर दी थी जिस की वज्ह से उन के घर, बल्कि अ़लाक़े वाले भी परेशान थे। उन का सुधरने की मन्ज़िल की त़रफ़ सफ़र इस त़रह़ शुरूअ़ हुवा कि उन्हें रमज़ान के बरकत वाले महीने में दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नते ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल हो गई, ए'तिकाफ़ में अच्छी सोह़बत भी मिली और किताब **''फ़ैज़ाने सुन्नत''** का मुत़ालआ़ भी करते रहे। कुछ अ़र्से बा'द उन्हें अपने शह्र में क़ाइम **दा'वते इस्लामी** के मदनी मर्कज़ **''फ़ैज़ाने मदीना''** में होने वाले हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में शिर्कत का मौक़अ़ मिला जहां इस्लामी ह़ुल्ये में मौजूद आ़शिक़ाने रसूल की कसीर ता'दाद देख कर दिल की ह़ालत बदलने लगी। एक हफ़्ते बा'द मुक़र्ररा वक़्त पर येह फिर हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पहुंच गए और बयान सुनने लगे, बयान में कुछ ऐसा असर था कि इन के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई और येह अपने गुनाहों से तौबा कर के ही घर लौटे। वोह न सिर्फ़ पांच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ों की पाबन्दी करने लगे बल्कि उन के चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सज गई और उन का लिबास भी सुन्नतों के सांचे में ढल गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! उन्हें **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र कर के नेकी की दा'वत की धूमें मचाने का मौक़अ़ भी मिला।

भाई सुधर जाओगे, اِنْ شَآءَالله *मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

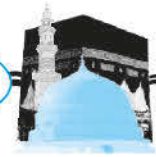

आर पार नज़र आने वाले ऊंचे ऊंचे जन्नती मकानात : **मुसल्मानों** के चौथे ख़लीफ़ा, हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (या'नी ऊंचे ऊंचे मकानात) हैं जिन के बाहरी हिस्से अन्दर से और अन्दर के हिस्से बाहर से नज़र आते हैं। एक आ'राबी (या'नी गाउं के रहने वाले साहिब) ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये होंगे ? आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अच्छी गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए, हमेशा रोज़े रखे और रात को नमाज़ अदा करे जब लोग सोए हुए हों।" (ترمذی ج۳ ص۳۹۶حدیث۱۹۹۱)

अच्छी बात सदक़ा है : **अच्छी** बात करना चुप रहने से अफ़्ज़ल है और चुप रहना फ़ुज़ूल बात कहने से अफ़्ज़ल जब कि बुरी बात कहना तो बुरा ही बुरा है और अच्छी बात सदक़ा है, हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अच्छी बात सदक़ा है।" (بخاری ج۲ ص۳۰۶ حدیث ۲۹۸۹)

सदक़ा या 'नी ? : यहां "सदक़े" से मुराद "सदक़े का सवाब मिलना" है। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : हर भलाई सदक़ा है। (بخاری ج٤ص١٠٥حدیث ٦٠٢١) **शर्हे हदीस :** या'नी सदक़ा सिर्फ़ माल ही से नहीं होता बल्कि हर मा'मूली (या'नी छोटी से छोटी) नेकी (भी) अगर इख़्लास से की जाए तो उस पर **सदक़े का सवाब मिलता है** हत्ता कि मुसल्मान भाई से मीठी और नर्म बातें करना भी सदक़ा है। (मिरआत, जि. 3, स. 95)

नेकी की दा'वत फ़ौरन दीजिये : **ऐसी** कोई भी फ़ाएदे मन्द बात तर्क न करे (या'नी अधूरी न छोड़े) जिस के मुतअ़ल्लिक़ जानता हो कि हाज़िरीन उस के लिये दूसरी मजलिस (या'नी निशस्त) के मोहताज (या'नी ज़रूरत मन्द) होंगे (अल ग़रज़ फ़ौरन पूरी बात बता दे, येह न कहे कि बाक़ी आइन्दा बताऊंगा) क्यूं कि (बताने वाले का और जिस को बताना है उस के) दूसरी मजलिस तक ज़िन्दा रहने का कोई भरोसा नहीं। (الحدیقة الندیة ج۱ص۹۵ ,इस्लाहे आ'माल, स. 360)

https://www.dawateislamiindia.org/

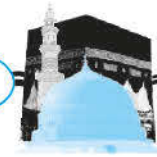

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब अच्छे अख़्लाक़ वाले होंगे : **सहाबिये रसूल** हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक तुम में से मुझे सब से ज़ियादा प्यारे और क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक तर वोह लोग होंगे जो तुम में से ज़ियादा अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं। और तुम में से मुझे सब से ज़ियादा ना पसन्द और क़ियामत के दिन मुझ से ज़ियादा दूर वोह लोग होंगे जो बुरे अख़्लाक़ वाले हैं, जो ज़ियादा बातें करने वाले मुंहफट, बाछें खोल कर और मुंह भर कर बातें करने वाले हैं।" (شعب الایمان ج ٦ ص ٢٣٤ حدیث ٧٩٨٩)

"अच्छे अख़्लाक़" किसे कहते हैं ? : **हज़रते** मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : क्यूं कि अच्छे अख़्लाक़ वाला आदमी अक्सर नेक आ'माल ज़ियादा करता है, गुनाह उस से कम सरज़द होते हैं। दियानत दारी (या'नी ईमानदारी, अमानत दारी, सच्चाई), वा'दा पूरा करना, मुआ़मलात (या'नी लेनदेन वग़ैरा) का दुरुस्त होना सब ही ख़ुश ख़ुल्क़ी (या'नी अच्छे अख़्लाक़) में दाख़िल हैं। और बद ख़ुल्क़ (या'नी बद अख़्लाक़ लोग) अक्सर बद अ़मल होते हैं, बद ख़ुल्क़ी (या'नी बद अख़्लाक़ी) ख़ुद भी बद अ़मली है और बहुत सी बद अ़मलियों का ज़रीआ़। झूट, (अमानत में) ख़ियानत, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद मुआ़मलगी (या'नी लेनदेन में हेराफेरी वग़ैरा) सब ही बद अख़्लाक़ी की शाख़ें (Branches) हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 436 मुलख़्ख़सन)

सब से ज़ियादा नुक़्सान देह चीज़ : **ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ज़बान** की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है क्यूं कि सब से ज़ियादा फ़सादात व नुक़्सानात इसी से ज़ाहिर होते हैं। सह़ाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि मैं ने एक बार दरबारे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मेरे लिये सब से ज़ियादा ख़त़रनाक व नुक़्सान देह चीज़ किसे क़रार देते हैं ? तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ी फिर फ़रमाया : "इसे।" (ترمذی ج٤ ص ١٨٤ حدیث ٢٤١٨)

https://www.dawateislamiindia.org/

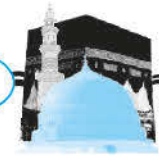

कान शीशे की त़रह़ और फ़ुज़ूल कलाम पथ्थरों की मानिन्द है : **ह़ज़रते** अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने शैख़ अफ़्ज़लुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़रमाते सुना कि कान शीशे की त़रह़ और फ़ुज़ूल कलाम पथ्थरों की त़रह़ है, जब भी इस शीशे में पथ्थर फेंके जाएं तो शीशा टूट कर चूरा चूरा हो जाएगा। (المنن الکبری ص٥٤٧)

ज़बान में हड्डी नहीं मगर हड्डियां तुड़वा देती है : **कहा जाता है :** "ज़बान में हड्डी नहीं मगर हड्डियां तुड़वा देती है, ज़बान तल्वार नहीं मगर ख़ून बहा देती है।" किसी ने कितनी ख़ूब सूरत बात कही है : "जिन बातों पर झगड़ा कर के लोग मनों मिट्टी तले जा सोते हैं उन ही बातों पर हलकी सी मिट्टी डाल कर दुन्या में पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारी जा सकती है।"

किसी को गधा या ख़िन्ज़ीर कहना : **ताबेई** बुज़ुर्ग ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स किसी को **गधा** (DONKEY) **या ख़िन्ज़ीर** (PIG) कह कर पुकारेगा तो क़ियामत के दिन उस (पुकारने वाले) से पूछा जाएगा : बता ! क्या मैं ने इसे गधा बनाया था ? बता ! क्या मैं ने इसे ख़िन्ज़ीर पैदा किया था ? (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 494, احیاء العلوم ج٣ص٢٠٠)

मुसल्मान को बुरे लक़ब से पुकारना गुनाह है : **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** मुसल्मान को बुरे नाम से पुकारना ब हुक्मे क़ुरआनी मन्अ़ है। **अल्लाह** पाक पारह 26 **सूरतुल ह़ुजुरात** आयत 11 में फ़रमाता है : وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ **आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** "और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो।"

मा'लूम हुवा मुसल्मान का बुरा नाम रखना मन्अ़ है, मुफ़स्सिरीने किराम ने जुदा जुदा अल्फ़ाज़ में इस आयते मुबारका की वज़ाह़त फ़रमाई है उन में से **सिरातुल जिनान** जिल्द 9 सफ़ह़ा 431 ता 432 से दो वज़ाह़तें पेशे ख़िदमत हैं : ﴿1﴾ बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : बुरे नाम रखने से

https://www.dawateislamiindia.org/

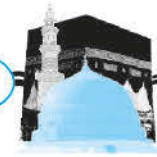

मुराद किसी मुसल्मान को कुत्ता, या गधा, या सुवर कहना है। ﴿2﴾ बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब (TITALES) मुराद हैं जिन से मुसल्मान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो (लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों मम्नूअ़ नहीं, जैसे कि (मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा) ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ عَنْه का लक़ब अ़तीक़ और (दूसरे ख़लीफ़ा) ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْه का फ़ारूक़ और (तीसरे ख़लीफ़ा) ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه का ज़ुन्नूरैन और (चौथे ख़लीफ़ा) ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه का अबू तुराब और (सह़ाबिये रसूल) ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللهُ عَنْه का सैफ़ुल्लाह था) और जो अल्क़ाब गोया कि नाम बन गए और अल्क़ाब वाले को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी मम्नूअ़ नहीं, जैसे (मश्हूर मुह़द्दिसीन) आ'मश (या'नी कमज़ोर नज़र वाला) और आ'रज (या'नी एक पाउं से मा'ज़ूर) वग़ैरा। (خازن ج٤ص١٧٠)

फ़िरिश्ते ला'नत भेजते हैं : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस किसी ने मुसल्मान को उस के नाम के इ़लावा किसी लफ़्ज़ (या'नी बुरे नाम) से पुकारा उस पर फ़रिश्ते ला'नत करते हैं। (جامع صغیر ص ٥٢٥ حدیث ٨٦٦٦)

शर्ह़े ह़दीस : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 1031 हिजरी) बयान फ़रमाते हैं : (''उस के लिये फ़रिश्ते ला'नत करते हैं'' का मत़लब येह है कि) मुसल्मान को बुरे नाम से पुकारने वाले के लिये फ़रिश्ते नेक लोगों के मक़ामो मर्तबे से मह़रूमी की दुआ़ करते हैं। जब कि नाम के इ़लावा किसी और लफ़्ज़ से पुकारने से मुराद येह हो सकती है कि ऐसे नाम (या लक़ब) से पुकारना जो उसे बुरा लगे हां अगर ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारा जो बुरे न लगते हों तो ह़रज नहीं, जैसे ''किसी को उस के अस्ल नाम के बजाए ऐ अ़ब्दुल्लाह !'' (ऐ भाई !) वग़ैरा कह कर पुकारना। (خلاصہ از:فیض القدیر ج٦ص١٦٣تحت الحدیث٨٦٦٦)

https://www.dawateislamiindia.org/

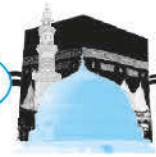

बच्चों से भी सच बोलिये : सहाबिये नबी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه (अपने बचपन शरीफ़ का वाक़िआ़ बयान करते हुए) फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक दिन हमारे घर तशरीफ़ फ़रमा थे कि मेरी अम्मीजान ने मुझे अपने पास बुलाते हुए कहा कि "इधर आओ मैं तुम्हें कुछ दूंगी।" रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मेरी अम्मीजान से) पूछा : "तुम ने उसे क्या देने का इरादा किया है?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं उसे खजूर दूंगी।" आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तुम उसे कुछ न देतीं तो तुम्हारा एक **झूट** लिख दिया जाता।"

(ابوداؤد ج٤ ص ٣٨٧ حديث ٤٩٩١)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर का ज़िक्रे ख़ैर : आइये ! येह रिवायत बयान करने वाले सहाबिये नबी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه के मुबारक हालात सुनते हैं, आप का नाम मुबारक : अ़ब्दुल्लाह इब्ने आ़मिर इब्ने कुरैज़, आप कुरैशी हैं, मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه के मामूंज़ाद भाई हैं। विलादत (या'नी BIRTH) के बा'द इन्हें सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया गया, आप ने इन पर दम किया। हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में बसरे और ख़ुरासान के गवर्नर रहे, हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه ने आप को इस ओ़हदे पर क़ाइम रखा, नहरे बसरा आप ने ही खुदवाई, बड़े सख़ी थे। 57 या 58 हिजरी में वफ़ात पाई।

(الاصابه لابن حجر ج٥ ص١٤تا١٥)

माल व मकान दोनों रखो (वाक़िआ़) : **सहाबिये नबी** हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه ने ताबेई़ बुज़ुर्ग हज़रते ख़ालिद बिन उ़क़्बा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से उन का बाज़ार वाला मकान 70 या 80 हज़ार दिरहम में ख़रीदा। रात हुई तो हज़रते ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के घर वालों के रोने की

https://www.dawateislamiindia.org/

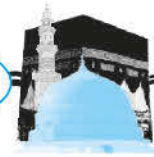

आवाज़ सुनी, तो अपने घर वालों से पूछा : येह क्यूं रो रहे हैं ? उन्हों ने कहा : मकान के फ़रोख़्त (या'नी SALE) हो जाने की वज्ह से। तो (आप رَضِیَ اللهُ عَنْه का दरियाए सख़ावत जोश में आया और) अपने ग़ुलाम से फ़रमाया : ऐ ग़ुलाम ! ह़ज़रते ख़ालिद बिन उ़क़्बा के पास जा कर कहो : तुम मकान भी और उस की जो रक़म तै़ हुई वोह भी अपने पास रख लो। (شعب الایمان ج ۷ ص ٤٣٨ قول نمبر ١٠٨٨٧) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

मां बाप के ना फ़रमान की इस्लाह़ कैसे हुई ? : सह़ाबा व अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत बढ़ाने, मुसल्मानों के नाम बिगाड़ने से बचने का ज़ेह़न बनाने और बच्चों के साथ भी हमेशा सच बोलने की आ़दत अपनाने का जज़्बा पाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये। **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल की बरकत से एक मां बाप के ना फ़रमान नौ जवान की इस्लाह़ हो जाने की एक "**मदनी बहार**" सुनिये और झूमिये : एक नौ जवान पहले पहल बे नमाज़ी और मां बाप के ना फ़रमान थे, यूं येह **अल्लाह** पाक का भी और बन्दों का भी ह़क़ ज़ाएअ़ कर रहे थे। एक मरतबा इन के वालिद साह़िब की दुकान पर एक रिश्तेदार मुलाक़ात के लिये आए जो **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से तअ़ल्लुक़ रखते थे। उस वक़्त येह भी वहां मौजूद थे, उन इस्लामी भाई ने **दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की जो इन्हों ने क़बूल कर ली और जुमे'रात को इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए। इन्हें इज्तिमाअ़ में कुछ ऐसा रूह़ानी सुकून नसीब हुवा कि फिर बा क़ाइदा हर जुमे'रात को इज्तिमाअ़ में शिर्कत करना इन का मा'मूल बन गया। इतना ही नहीं, रिश्तेदार इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी

https://www.dawateislamiindia.org/

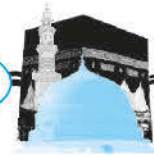

कोशिश की बदौलत इन्हों ने सुन्नतें सीखने सिखाने के तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में भी सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल ने इन्हें **सुन्नतों भरा कोर्स** करने का ज़ेह्न दिया। जब येह मदनी क़ाफ़िले से घर लौटे तो मां बाप की ना फ़रमानियों पर शरमिन्दा थे, इन्हों ने मां बाप के क़दमों में बैठ कर रोते हुए उन से मुआ़फ़ी मांगी, उन्हों ने भी शफ़्क़त करते हुए इन्हें मुआ़फ़ कर दिया। इस के बा'द इन्हों ने मां बाप से अ़र्ज़ की : ज़िन्दगी बहुत थोड़ी है, न जाने कब ख़त्म हो जाए! मैं जीते जी इ़ल्मे दीन सीखना चाहता हूं, इस त़रह़ की गुफ़्तगू कर के इन्हों ने सुन्नतों भरे कोर्स के लिये मां बाप को राज़ी कर लिया और इजाज़त मिलने पर ख़ुशी ख़ुशी अपना सामान उठा कर सुन्नतों भरे कोर्स में शरीक हो गए जहां इन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला। इन की ज़िन्दगी का अन्दाज़ कुछ ऐसा बदला कि जो पहले वालिदैन की ना फ़रमानी करते थे, अब घर से निकलने से पहले उन के क़दम चूमते। फिर इन्हों ने **फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स** भी किया, बढ़ते बढ़ते इन्हें **दा'वते इस्लामी** के तन्ज़ीमी सेटअप में ह़ल्क़ा मुशावरत के निगरान की ज़िम्मेदारी भी मिली। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** इन्हें और हमें **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बच्चों को झूटा बहलावा देना : ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : गुफ़्तगू (आ'माल नामे में) लिखी जाती है ह़त्ता कि एक शख़्स अपने बेटे को चुप कराने के लिये कहता है : मैं तुम्हारे लिये फुलां फुलां चीज़ें ख़रीदूंगा (ह़ालां कि ख़रीदने की निय्यत नहीं होती) तो उसे **झूटा** लिखा जाता है। (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 350, احیاء العلوم ج ۳ ص ۱۴۲)

https://www.dawateislamiindia.org/

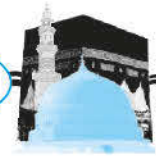

बच्चों को फुस्लाने के लिये मोहतात़ त़रीक़ा इख़्तियार कीजिये : अफ़्सोस ! आज कल बच्चों को बहलाने के लिये ब कसरत **झूट** बोले जाते हैं, मसलन निय्यत न होने के बा वुजूद कहा जाता है : तुम्हें खिलोने, झूला, टॉफ़ियां, फुलां बिस्किट ला कर देंगे, फुलां डिश पका कर खिलाएंगे, फुलां जगह सैर कराने (या'नी घुमाने फिराने) ले जाएंगे वग़ैरा वग़ैरा। हमारा सच्चा **अल्लाह** अपने सच्चे ह़बीब के तुफ़ैल हमें हमेशा सच बोलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ज़बान संभालने वाले के अ़मल भी संभल जाते हैं : ह़ज़रते यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "जो शख़्स ज़बान को संभाल कर इस्ति'माल करता है मैं उस को नेक आ'माल करते देखता हूं।" (الصمت مع موسوعة للامام ابن ابی الدنیا ج ۷ ص ٦٣ قول نمبر ٦٠)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो कोई ज़बान को बे सोचे समझे क़ैंची की त़रह़ चलाता है उस से फिर झूट, ग़ीबत सब कुछ सादिर होता रहता है, ज़ियादा बोलने वाले का हंसी मज़ाक़ से बचना भी मुश्किल होता है, और हंसी मज़ाक़ में झूट की आमेज़िश (या'नी मिलावट) भी होती है। याद रखिये ! मज़ाक़ में भी झूट जाइज़ नहीं।

मज़ाक़ में झूट बोलने वाले से सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : हलाकत है उस के लिये जो बात करता है और लोगों को हंसाने के लिये झूट बोलता है, उस के लिये हलाकत है, उस के लिये हलाकत है। (ترمذی ج٤ ص١٤٢ حدیث٢٣٢٢)

जहन्नम की गहराई में गिरता है : फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "बन्दा बात करता है और महज़ (या'नी सिर्फ़) इस लिये करता है कि लोगों को हंसाए ! इस की वज्ह से जहन्नम की इतनी गहराई में गिरता है जो आस्मानो ज़मीन के दरमियान के फ़ासिले से ज़ियादा है और ज़बान की वज्ह से जितनी लग़्ज़िश होती है वोह इस से कहीं ज़ियादा है जितनी क़दम से लग़्ज़िश होती है।"

(شعب الایمان ج٤ ص٢١٣ حدیث ٤٨٣٢)

https://www.dawateislamiindia.org/

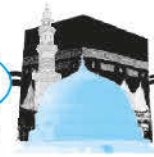

हज़रते अल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि यहां हंसाने वाली बात से मुराद ऐसी बात है जिस में ग़ीबत, ईज़ाए मुस्लिम (या'नी मुसल्मान को तक्लीफ़ देने) (या कोई गुनाह) का पहलू पाया जाए वरना महज़ मिज़ाह वाली बात पर येह वईद नहीं है। (فیض القدیر ج ۲ ص ٤٢٥ تحت الحدیث ١٩٨٤)

कॉमेडियन मुतवज्जेह हों ! : "**मिरआत**" जिल्द 6 सफ़ह़ा 463 पर है : इस फ़रमाने आ़ली से आज कल के मस्ख़रे (या'नी कॉमेडियन) वग़ैरा इ़ब्रत पकड़ें जो लोगों को हंसा कर गुज़ारा करते हैं, जिन की कमाई लोगों की हंसाई है। इस हिस्सए ह़दीस : "ज़बान की वज्ह से जितनी लग़्ज़िश....." के तह़्त है : "पाउं की फिस्लन से ज़बान की लग़्ज़िश (या'नी फिस्लन) ज़ियादा ख़त़रनाक है कि पाउं की लग़्ज़िश (या'नी फिस्लन) से बदन चोट खाता है मगर ज़बान की लग़्ज़िश (या'नी फिस्लन) से दिल, जान, ईमान ज़ख़्मी होता है। ज़बान की लग़्ज़िश (या'नी फिसलने) से ही क़त्लो ख़ून होते हैं, ज़बान ही की लग़्ज़िश से इन्सान काफ़िर व बेदीन हो जाता है, इब्लीस (या'नी शैत़ान) अपनी ज़बान की लग़्ज़िश की सज़ा अब तक पा रहा है।"

कॉमेडी शो का मस्अला : कॉमेडियन का मज़ाक़ मस्ख़री का शो (SHOW) मज्मूई़ त़ौर पर ना जाइज़ है कि इस में दीगर लोगों का मज़ाक़ उड़ाना या देखने वालों को मज़ाक़ उड़ाने की ता'लीम और कई लोगों की दिल आज़ारी पाई जाती है, यूंही फ़ोह़ूश (या'नी बे ह़याई वाली ह़रकतों) का इस्ति'माल भी इशारे किनाए में मौजूद होता है, फ़िक्स (FIX) अफ़राद की ग़ीबत या उन की मजबूरियों का मज़ाक़ उड़ाना भी आ़म होता है, जो मौजूद हों उन की और ग़ाइब हों उन की शक्लो सूरत का मज़ाक़ उड़ाना भी पाया जाता है और ग़ीबत के साथ साथ बोहतान की सूरतें भी पेश आती रहती हैं। कई मवाक़ेअ़ पर तो مَعَاذَ الله कुफ़्र भी सरज़द हो रहा होता है। अल ग़रज़ इन तमाम उमूर से ख़ाली होना बहुत मुश्किल है इस लिये ऐसे प्रोग्राम पर ना जाइज़ का हुक्म होगा। ऐसा शो करना, करवाना, देखना, दिखलाना, इस की उजरत लेना देना, इस की वीडियोज़, ऑडियोज़

https://www.dawateislamiindia.org/

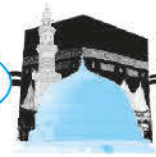

सुनना सुनाना, लोग देखें सुनें इस के लिये वायरल करना वग़ैरा ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

आख़िरत के काम में जल्दी करनी चाहिये : **मक्की** मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर चीज़ में इत्मीनान से काम करना अच्छा है, सिवाए आख़िरत के कामों में।

(ابوداؤد ج٤ ص٣٣٥حديث٤٨١٠)

शर्ह़े ह़दीस : या'नी दुन्यावी काम में देर लगाना अच्छा है कि मुम्किन है वोह काम ख़राब हो और देर लगाने में उस की ख़राबी मा'लूम हो जाए और हम उस से बाज़ रहें मगर आख़िरत का काम तो अच्छा ही अच्छा है उसे मौक़अ़ (Chance) मिलते ही कर लो कि देर लगाने में शायद मौक़अ़ जाता रहे। बहुत देखा गया कि बा'ज़ को (जब ह़ज का) मौक़अ़ मिला (उस वक़्त) न किया फिर न कर सके। **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ (**तरजमा :** भलाइयों में जल्दी करो) (پ٢، البقرة:١٤٨) शैत़ान कारे ख़ैर (या'नी नेक काम) में देर लगवा कर आख़िर में उस से रोक देता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 627 मुलख़्ख़सन)

अच्छा बोलना तौफ़ीक़े इलाही और..... : **ह़ज़रते** इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **ज़बान** का बोलना जिस्म के तमाम आ'ज़ा (या'नी PARTS) पर असर अन्दाज़ होता है, अच्छा बोले तो तौफ़ीक़े इलाही और बुरा बोले तो ज़िल्लतो रुस्वाई। (मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 142, منهاج العابدين ص٦٥)

अल्फ़ाज़ की ह़िफ़ाज़त करो ! : **किसी** ने कहा है : ख़यालों की ह़िफ़ाज़त करो येह अल्फ़ाज़ बन जाते हैं, अल्फ़ाज़ की ह़िफ़ाज़त करो येह आ'माल बन जाते हैं, आ'माल की ह़िफ़ाज़त करो येह किरदार बन जाते हैं, किरदार की ह़िफ़ाज़त करो येह पहचान बन जाते हैं।

https://www.dawateislamiindia.org/

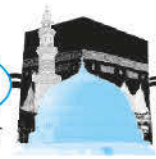

दूसरों के पास भी ज़बानें हैं : **अपनी** ज़बान दूसरों के ऐबों से आलूदा न करो क्यूं कि ऐब तुम्हारे भी हैं और ज़बानें दूसरे लोगों के पास भी।

उस बात में कोई भलाई नहीं : **मुसल्मानों** के पहले ख़लीफ़ा, हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : "उस बात में कोई भलाई नहीं जिस का मक़्सद **अल्लाह** पाक को राज़ी करना न हो।" (حِلْیَۃُ الاولیاء ج۱ص۷۱ قول نمبر ۸۲)

अच्छे अन्दाज़ पर पुकार कर सवाब कमाइये : **होंटों** से "शिश शी" की आवाज़ निकाल कर किसी को बुलाना या मुतवज्जेह करना अच्छा अन्दाज़ नहीं, मा'लूम होने की सूरत में बेहतर येह है कि नाम या कुन्यत से पुकारे कि **सुन्नत** है, अगर नाम मा'लूम न हो तो उस मक़ाम के उ़र्फ़ के मुताबिक़ मुहज़्ज़ब अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पुकारा जाए। जब भी किसी मुसल्मान को पुकारा जाए तो उस का दिल ख़ुश करने का सवाब कमाने की निय्यत के साथ अच्छे में अच्छा अन्दाज़ हो और नाम भी पूरा लिया जाए नीज़ मौक़अ़ की मुनासबत से आख़िर में लफ़्ज़ "भाई" या "साहिब" वग़ैरा का भी इज़ाफ़ा हो, ह़ज किया है तो "ह़ाजी" का लफ़्ज़ भी शामिल कर लिया जाए।

किसी के पुकारने पर जवाबन लब्बैक कहना : **जिस** को पुकारा गया उस के लिये बेहतर है कि वोह "लब्बैक" (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं) कहे। ताहम मौक़अ़ महल देख लिया जाए ऐसा न हो कि आप के "लब्बैक" कहने से सामने वाला कन्फ़्यूज़ हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه الکریم दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में किसी की पुकार पर बा'ज़ अवक़ात जवाबन "लब्बैक" कहा जाता है जो कि सुनने में बहुत भला मा'लूम होता है और इस से मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल हो सकती है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْه के वालिदे माजिद ह़ज़रते अ़ल्लामा नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْه लिखते हैं : "जो आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को पुकारता जवाब में "लब्बैक" (या'नी ह़ाज़िर हूं) फ़रमाते।" (سُرُوْرُ الْقُلُوْب ص۱۸۲) **अल्लाह** पाक के सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी

https://www.dawateislamiindia.org/

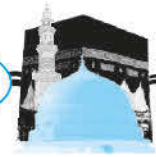

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पुकारने पर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का "लब्बैक" के साथ जवाब देना अह़ादीसे मुबारका में बयान किया गया है, इस के इ़लावा एक वलिय्युल्लाह के फ़े'ल से भी इस का सुबूत मिलता है। चुनान्चे करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मस्अला मा'लूम करने के लिये उन्हें जब कोई अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करता तो अक्सर "लब्बैक" फ़रमाते। (مناقب امام احمد بن حنبل للجوزی ص ۲۹۸) मस्नून दुआ़ओं की मश्हूर किताब : "ह़िस्ने ह़सीन" में है : "जब कोई शख़्स तुझे बुलाए तो जवाब में कहे : लब्बैक।" (حصنِ حصین ص۱۰٤)

या अल्लाह पाक ! हमें मुसल्मानों को अच्छे नामों से पुकार कर उन के दिलों में ख़ुशियां दाख़िल करने वाली नेकियां कमाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मज़ाक़ करने वाला नज़रों से गिर जाता है : **मुसल्मानों** के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : "जो मज़ाक़ करता है वोह लोगों की नज़रों से गिर जाता है।" (احیاء العلوم ج۳ ص۱۵۸, Ehyaul Uloom (Urdu), Vol. 3, P. 389)

आपस में नफ़रत का एक सबब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "आपस में मज़ाक़ मस्ख़री मत किया करो कि इस त़रह़ (हंसी ही हंसी में) दिलों में नफ़रत बैठ जाती है।" (سیرت ابن عبد الحکم ص۱۱٤)

हंसी मज़ाक़ से दुश्मनी पैदा होती है : **ह़ज़रते** इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "कहा जाता है कि हर चीज़ का बीज होता है और दुश्मनी का बीज मिज़ाह़ (या'नी हंसी मज़ाक़) है और येह भी कहा गया है कि मिज़ाह़ (या'नी हंसी मज़ाक़) अ़क़्ल को छीन लेता और दोस्तों को जुदा कर देता है।" (احیاء العلوم ج۳ ص۱۵۹, Ehyaul Uloom (Urdu), Vol. 3, P. 392)

ऐ प्यारे प्यारे अल्लाह पाक ! हमें लोगों का मज़ाक़ उड़ाने और दिल दुखाने वाली मस्ख़रियों से बचा और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

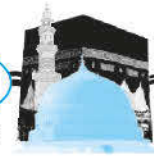

गुनाहे कबीरा की ता'रीफ़ : पारह 27 **सूरतुन्नज्म** आयत 32 के हिस्से اَلَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ (**आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** वोह जो बड़े गुनाहों और बे ह़याइयों से बचते हैं) की तफ़्सीर में **सिरातुल जिनान** जिल्द 9 सफ़ह़ा 567 पर है : **गुनाह** वोह अ़मल है जिस का करने वाला अ़ज़ाब का ह़क़दार हो या यूं कह लें कि ना जाइज़ काम करने को गुनाह कहते हैं। बहर ह़ाल गुनाह की दो क़िस्में हैं : (1) सग़ीरा (2) कबीरा। **कबीरा गुनाह** वोह है जिस के करने पर दुन्या में ह़द जारी हो (या'नी शरीअ़त के हुक्म के मुत़ाबिक़ सज़ा दी जाए) जैसे क़त्ल, ज़िना और चोरी वग़ैरा या उस पर आख़िरत में अ़ज़ाब की वईद (या'नी सज़ा) हो जैसे ग़ीबत, चुग़ल ख़ोरी, ख़ुद पसन्दी और रियाकारी वग़ैरा और फ़वाह़िश (या'नी बे ह़याइयों) में हर क़बीह़ क़ौल, फ़े'ल (या'नी बुरी बात और बुरा काम) और तमाम सग़ीरा, कबीरा (या'नी सभी छोटे बड़े) गुनाह दाख़िल हैं, अलबत्ता यहां (या'नी इस आयत में) फ़वाह़िश (या'नी बे ह़याइयों) से वोह कबीरा (या'नी बड़े) गुनाह मुराद हैं जिन की क़बाह़त (या'नी बुराई) और फ़साद बहुत ज़ियादा हो जैसे ज़िना करना, क़त्ल करना और चोरी करना वग़ैरा।

(خازن ج٤ ص١٩٦-١٩٧، مدارك ص١١٨١، ابو سعود ج٥ ص٦٤٨ ملتقطاً)

ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़ : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बयान कर्दा तफ़्सीर में गुनाहों के तज़्किरे में **ख़ुद पसन्दी** का भी ज़िक्र किया गया है, ख़ुद पसन्दी को अ़रबी में "**उ़ज्ब**" कहते हैं। मक्तबतुल मदीना की 352 सफ़ह़ात की किताब, "बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात" सफ़ह़ा 36 ता 37 पर उ़ज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़ यूं लिखी है : अपने कमाल (मसलन इ़ल्म या अ़मल या माल) की अपनी त़रफ़ निस्बत करना और इस बात का ख़ौफ़ न होना कि येह छिन जाएगा। गोया ख़ुद पसन्द शख़्स ने'मत को मुन्इ़मे ह़क़ीक़ी (या'नी **अल्लाह** पाक) की त़रफ़ मन्सूब करना ही भूल जाता है। (या'नी मिली हुई ने'मत मसलन सिह़्ह़त या हुस्नो जमाल या दौलत या ज़िहानत या ख़ुश इल्ह़ानी या मन्सब वग़ैरा को अपना कारनामा समझ बैठना और येह भूल जाना कि

https://www.dawateislamiindia.org/

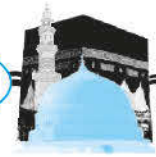

सब रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की इ़नायत है और **अल्लाह** पाक जब चाहे दिया हुवा कमाल या अ़ता की हुई ख़ूबी वापस भी ले सकता है) (बातिनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 36 ता 37, إحياءُ العُلوم ج٣ ص٤٠٤ ملخصًا)

70 साल के आ'माल बरबाद : ख़ुद पसन्दी नेकियों के लिये सख़्त तबाह कुन है जैसा कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उ़ज्ब (या'नी ख़ुद पसन्दी) 70 साल के आ'माल बरबाद करता है। (جامع صغير ص١٢٧ حديث٢٠٧٤)

गुनाह से भी बड़ा जुर्म : मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद पसन्दी की तबाहकारी से ख़बरदार करते हुए फ़रमाते हैं : "अगर्चे तुम से कोई गुनाह सरज़द न हो लेकिन मुझे तुम पर गुनाह से भी बड़े जुर्म का ख़ौफ़ है और वोह उ़ज्ब (या'नी ख़ुद पसन्दी) है।" (شُعَبُ الْإِيمان ج٥ ص٤٥٣ حديث٧٢٥٥) इस फ़रमाने मुबारक में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़ज्ब को बहुत बड़ा गुनाह क़रार दिया। (إحياءُ العُلوم ج٣ ص٤٥٣)

और किसी भी ज़ाहिरी व बातिनी गुनाह से बचना हर मुसल्मान पर लाज़िम है। चुनान्चे **अल्लाह** पाक क़ुरआने पाक के पारह 8 **सूरतुल अन्आ़म** आयत 120 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ज़ाहिरी और बातिनी सब गुनाह छोड़ दो।

ख़ुद पसन्दी की अहम वज़ाहत : हज़रते इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं कि जो शख़्स इ़ल्म, अ़मल और माल के ज़रीए अपने नफ़्स (या'नी ख़ुद) में कमाल (या'नी ख़ूबी) जानता हो उस की दो हालतें हैं : **(1)** उन में से एक येह है कि उसे उस कमाल के ज़वाल का ख़ौफ़ हो और उस को इस बात का डर हो कि इस ख़ूबी में कोई तब्दीली आ जाएगी या बिल्कुल ही ख़त्म हो जाएगी तो ऐसा आदमी ख़ुद पसन्द नहीं होता **(2)** दूसरी हालत येह है कि वोह उस के ज़वाल (या'नी कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं रखता बल्कि वोह इस बात पर मुत्मइन व ख़ुश होता है कि **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** ने मुझे येह ने'मत इ़नायत फ़रमाई है इस में मेरा अपना कोई कमाल नहीं। येह भी ख़ुद पसन्दी नहीं है और इस के लिये एक

https://www.dawateislamiindia.org/

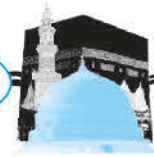

तीसरी ह़ालत भी है जो ख़ुद पसन्दी है और वोह येह है कि उसे उस कमाल के ज़वाल (या'नी उस ख़ूबी के कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि वोह उस पर मुत्मइन व ख़ुश होता है और उस की ख़ुशी का बाइ़स येह होता है कि येह कमाल ने'मत और भलाई और सर बुलन्दी है, वोह इस लिये ख़ुश नहीं होता कि येह **अल्लाह** पाक की इ़नायत व ने'मत है बल्कि इस (या'नी ख़ुद पसन्द बन्दे) की ख़ुशी की वज्ह येह होती है कि वोह उसे अपना वस्फ़ (या'नी ख़ूबी) और ख़ुद अपना ही कमाल समझता है वोह इसे **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की अ़त़ा व इ़नायत तसव्वुर नहीं करता। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۴۵۴)

ख़ुद पसन्दी का एक मुजर्रब इलाज : **इमाम** ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अपने ज़ोहदो तक़्वा के बा वुजूद येह तमन्ना किया करते कि काश ! वोह मिट्टी, भूसा या परिन्दा होते। तो साह़िबे बसीरत (या'नी अ़क़्लमन्द) शख़्स कैसे अपने अ़मल पर **ख़ुद पसन्दी** कर सकता है या इतरा सकता है और क्यूंकर अपने नफ़्स से बे ख़ौफ़ हो सकता है ? येह ख़ुद पसन्दी का इ़लाज है जिस से ख़ुद पसन्दी का माद्दा बिल्कुल जड़ से कट जाता है। जब ख़ुद पसन्दी में मुब्तला शख़्स इस त़रीक़ए इ़लाज के मुत़ाबिक़ ख़ुद पसन्दी का इ़लाज करता है तो जिस वक़्त उस के दिल पर ख़ुद पसन्दी ग़ालिब आती है तो ने'मत छिन जाने का ख़ौफ़ उसे इतराने (या'नी तकब्बुर करने) से बचाता है बल्कि जब वोह काफ़िरों और फ़ासिक़ों को देखता है कि किसी गुनाह के बिग़ैर उन को ईमान व इत़ाअ़ते इलाही की दौलत से मह़रूमी मिली है तो वोह डरते हुए येह सोचता है कि जिस ज़ात को इस बात की परवा नहीं कि वोह बिग़ैर किसी जुर्म के किसी को मह़रूम कर दे या बिग़ैर किसी वसीले के किसी को अ़त़ा करे तो वोह दी हुई ने'मत को वापस भी ले सकता है। कितने ही ईमान वाले मुरतद हो कर और इत़ाअ़त गुज़ार (या'नी नेक मुसल्मान) फ़ासिक़ हो कर बुरे ख़ातिमे का शिकार हुए। जब आदमी इस त़रह़ सोचेगा तो **ख़ुद पसन्दी** उस में बाक़ी नहीं रहेगी। (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 1106, اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۴۵۸)

https://www.dawateislamiindia.org/

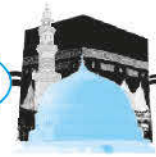

हुब्बे जाहो ख़ुद पसन्दी की मिटा दे आ़दतें

या इलाही ! बाग़े जन्नत की अ़ता कर राहतें

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ख़ुद पसन्दी के आठ अस्बाब व इलाज : **इमाम** अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने "एह़याउल उ़लूम" में उ़ज्ब या'नी **ख़ुद पसन्दी** के येह 8 अस्बाब और उन के इ़लाज बयान फ़रमाए हैं :

﴿1﴾ **पहला सबब :** "अपनी जिस्मानी ख़ूब सूरती के ह़वाले से ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना।" इस का इ़लाज येह है कि बन्दा अपनी बात़िनी गन्दगियों पर ग़ौर करे और अपने आग़ाज़ व अन्जाम (या'नी शुरूअ़ में गन्दा क़त़रा था और आख़िर में सड़ा हुवा मुर्दा होगा इस) के बारे में ग़ौर करे।

﴿2﴾ **दूसरा सबब :** "अपनी त़ाक़तो क़ुव्वत पर नाज़ करना।" इस का इ़लाज येह है कि बन्दा येह सोचे कि **अल्लाह** पाक मा'मूली सी आज़्माइश (मसलन बीमारी, ह़ादिसे वग़ैरा) में मुब्तला फ़रमा कर भी येह क़ुव्वत वापस ले सकता है।

﴿3﴾ **तीसरा सबब :** "अ़क़्लो ज़िहानत के ह़वाले से ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना।" इस का इ़लाज येह है कि बन्दा येह सोचे कि किसी भी मरज़ या ह़ादिसे वग़ैरा के सबब येह ने'मत छीनी जा सकती है।

﴿4﴾ **चौथा सबब :** "आ़ली नसब (या'नी ऊंचा ख़ानदान) होने पर फ़ख़्र करना है।" इस का इ़लाज येह है कि बन्दा येह सोचे कि अपने आबाओ अज्दाद (या'नी बाप दादाओं) की त़रह़ नेक आ'माल न करने के बा वुजूद उन के दरजे तक कैसे पहुंच सकता है ?

﴿5﴾ **पांचवां सबब :** "ज़ालिम की ह़िमायत पर इतराना है, और अहले दीन और अहले इ़ल्म की त़रफ़ अपनी निस्बत को अहम्मिय्यत न देना है।" इस का इ़लाज येह है कि बन्दा इन ज़ालिम लोगों के उख़्वी अन्जाम पर नज़र रखे और येह सोचे कि ज़ालिम लोग तो **अल्लाह** पाक के ग़ज़ब के लाइ़क़ हैं।

https://www.dawateislamiindia.org/

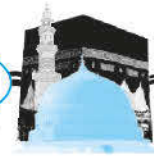

﴾6﴿ **छटा सबब :** "अपने नोकर चाकर वग़ैरा पर इतराना।" इस का इ़लाज येह है कि बन्दा अपनी कमज़ोरी पर नज़र रखे और येह ज़ेह्न नशीन कर ले कि तमाम लोग **अल्लाह** पाक के आ़जिज़ बन्दे हैं।

﴾7﴿ **सातवां सबब :** "मालो दौलत पर इतराना।" इस का इ़लाज येह कि बन्दा मालो दौलत की आफ़ात, इस के हुक़ूक़ और इस से पैदा होने वाले फ़ितनों को पेशे नज़र रखे।

﴾8﴿ **आठवां सबब :** "अपनी ग़लत़ राय पर इतराना।" इस का इ़लाज येह है कि बन्दा अपनी राय की सिह़्ह़त पर हरगिज़ हरगिज़ भरोसा न करे। (या'नी ग़ौर करे कि हो सकता है मेरी राय ग़लत़ हो) (बातिनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 38 ता 43, اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۱۱۰۷ تا ۱۱۱۹ ملخصًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बिगड़ा हुवा नौ जवान सुधरना शुरूअ़ हो गया : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ख़ुद पसन्दी और दीगर बुराइयों की मा'लूमात पाने, गुनाहों की आ़दत मिटाने और नेकियों का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में बिगड़े हुए लोगों का सुधार होता है इस की एक "मदनी बहार" आप के गोश गुज़ार करता हूं : एक नौ जवान खेलने के निहायत शौक़ीन थे, सुब्ह़ से शाम तक खेल, खेल और बस खेल ही इन का काम था, इन के अब्बूजान जो एक मस्जिद के इमाम भी हैं वोह इन्हें बहुत समझाते लेकिन येह बाज़ न आते। खेल का शौक़ इतना बढ़ा कि इन्हों ने مَعَاذَاللہ **जूआ** खेलना भी शुरूअ़ कर दिया। खेल के मैदान के इ़लावा दोस्तों के साथ रात गए तक गलियों और बाज़ारों में घूमना फिरना, इन्टरनेट कैफ़े में जाना इन का पसन्दीदा मश्ग़ला था। सच बोलने की भी आ़दत नहीं थी जिस की वज्ह से जब रात को देर से घर पहुंचते तो ताख़ीर होने की वज्ह भी ग़लत़ बताते थे। इन की ज़िन्दगी में तब्दीली कुछ इस त़रह़ आई कि इन के अब्बूजान ने **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई को इन की कैफ़िय्यत बताई और इन की इस्लाह़ करने की दरख़्वास्त की। उस इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश से येह दो तीन बार **सुन्नतों भरे**

https://www.dawateislamiindia.org/

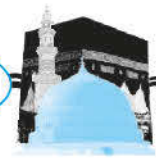

इज्तिमाअ़ में शिर्कत के बा'द तीन दिन के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में इन्हें वोह सुन्नतें वग़ैरा सीखने को मिलीं जो येह पहले नहीं जानते थे। जब येह मदनी क़ाफ़िले से लौटे तो अ़ज़्म येह था कि अब मुआ़शरे में शरीफ़ व नेक इन्सान बन कर ज़िन्दगी गुज़ारनी है। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत से येह **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए।

रब के दर पर झुकें, इल्तिजाएं करें
बाबे रह़मत खुलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 671)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ोह़ूश गोई के बारे में 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **फ़ोह़ूश गो** (या'नी बे ह़याई भरी बातें करने वाला) इन्सान बेबाक (या'नी बे अदब व बे ख़ौफ़) होता है और इस की सब से बड़ी मह़रूमी येह है कि **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे शख़्स को पसन्द नहीं करते और फ़ोह़ूश गो का ठिकाना जहन्नम है, इस सिल्सिले में **4 फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये : (1) फ़ोह़ूश गोई (या'नी बे ह़याई भरी बातें) बद अख़्लाक़ी की एक शाख़ है और बद अख़्लाक़ी जहन्नम में (ले जाने वाली) है। (ترمذی ج۳ص۴۰۶ حدیث ۲۰۱۶) (2) बुरे कामों और बुरी (बे ह़याई भरी) बातों का इस्लाम से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। (مسند احمد بن حنبل ج۷ ص۴۳۱ حدیث۲۰۹۹۷) (3) फ़ोह़ूश गोई और बद ज़बानी को **अल्लाह** पाक पसन्द नहीं फ़रमाता। (مسلم ص۹۲۰ حدیث ۵۶۰۹) (4) फ़ोह़ूश गोई अगर इन्सानी शक्ल में होती तो बुरे आदमी की सूरत में होती। (اَلصَّمت لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا مع موسوعه ج۷ ص۲۰۶ حدیث۳۳۱)

गन्दी ज़बान ख़त़रनाक बीमारी है : ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते अह़नफ़ बिन क़ैस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मरतबा लोगों से फ़रमाया : मैं तुम्हें बद तरीन बीमारियां न बताऊं ? लोगों ने कहा : ज़रूर,

https://www.dawateislamiindia.org/

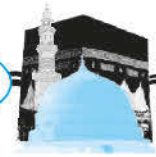

आप ने फ़रमाया : बद अख़्लाक़ी और गन्दी ज़बान सब से ज़ियादा ख़तरनाक बीमारियां हैं।

(ادب الدنیا والدین ص۳۸۳)

या रब्बल मुस्तफ़ा ! मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शर्मो हया का सदक़ा हमें फ़ोहूश बातों और बे हयाई के कामों से बचा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

कुत्ते की शक्ल वाला : हज़रते इब्राहीम बिन मैसरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं, कहा जाता है : "फ़ोहूश कलामी (या'नी बे हयाई की बातें) करने वाला क़ियामत के दिन **कुत्ते** की शक्ल में आएगा।"

(اَلصَّمت لِابْنِ اَبِی الدُّنیا مع موسوعه ج۷ص ۲۰۵ قول نمبر ۳۲۹)

फ़ोहूश बात की ता'रीफ़ : कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें ! जो सिर्फ़ अच्छी गुफ़्तगू के लिये **ज़बान** को हरकत में लाते और ख़ूब ख़ूब "नेकी की दा'वत" लोगों तक पहुंचाते हैं। **अफ़्सोस !** आज कल लोगों की कम बैठकें (या'नी गेदरिंग। GATHERINGS) ऐसी होती होंगी जो फ़ोहूश बातों से पाक हों हत्ता कि मज़्हबी हुल्ये में नज़र आने वाले अफ़राद भी बसा अवक़ात इस से बच नहीं पाते, शायद अ़वाम को येही नहीं पता होता कि फ़ोहूश (या'नी शर्मनाक) बात किसे कहते हैं ! तो सुनिये : **फ़ोहूश बात की ता'रीफ़** येह है : اَلتَّعْبِیْرُ عَنِ الْاُمُوْرِ الْمُسْتَقْبَحَۃِ بِالْعِبَارَاتِ الصَّرِیحَۃِ या'नी शर्मनाक बातों और कामों का खुले अल्फ़ाज़ में तज़्किरा करना। (احیاء العلوم ج۳ص۱۵۱) तो वोह नौ जवान जो "मख़्सूस ख़्वाहिश" की तस्कीन की ख़ातिर फ़ोहूश या'नी बे हयाई की बातें करने वाले बल्कि सिर्फ़ सुन कर दिल बहलाने वाले, गन्दी गालियां ज़बान पर लाने वाले, बे शर्मी वाले इशारे करने वाले, उन गन्दे इशारों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने वाले और "गन्दी लज़्ज़तों" के हुसूल की ख़ातिर फ़िल्में ड्रामे (कि इन में उ़मूमन बे हयाई की भरमार होती है) देखने वाले एक दिल हिला देने वाली रिवायत बार बार पढ़ें और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़ें, चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स पर **जन्नत हराम** है जो फ़ोहूश (या'नी बे हयाई के क़ौल या फ़े'ल[1]) से काम लेता है।" (اَلصَّمت ج۷ص۲۰۴حدیث۳۲۵) ग़ैर औ़रतों या अम्रदों के बारे में आने वाले गन्दे वस्वसों पर तवज्जोह जमाने, जान बूझ कर शर्मनाक ख़यालात में ख़ुद

https://www.dawateislamiindia.org/

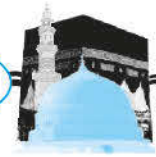

को गुमाने और مَعَاذَاللہ, "गन्दी ह़रकत" के तसव्वुर के ज़रीए लज़्ज़त उठाने वालों को बयान कर्दा रिवायत से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये। (1)سراج منیر شرح جامع صغیر ج۳ص۸٤

आएं न मुझ को वस्वसे और गन्दे ख़यालात

अल्लाह ! निकल जाए हर इक दिल से बुरी बात

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"अच्छा बोलो" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से 8 मदनी फूल

﴿1﴾ **मुस्कुरा** कर और ख़न्दा पेशानी से बातचीत करना सुन्नत है।

﴿2﴾ **बातचीत** करते हुए छोटों के साथ शफ़्क़त भरा और बड़ों के साथ अदब वाला लहजा रखिये, اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم दोनों के यहां आप इ़ज़्ज़त पाएंगे।

﴿3﴾ **चिल्ला चिल्ला** कर बातचीत करना सुन्नत नहीं।

﴿4﴾ **दौराने गुफ़्तगू** एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं है कि येह मुअ़ज़्ज़ज़ व मुहज़्ज़ब (या'नी अच्छे) लोगों के त़रीक़े के ख़िलाफ़ है। (सिरातुल जिनान, जि. 7, स. 502 ता 503)

﴿5﴾ **बातचीत** करते हुए दूसरे के सामने बार बार नाक सहलाते रहना, नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना, बदन का मैल उतारना, पर्दे की जगहों को छूना या खुजाते रहना अच्छी बात नहीं, अकेले में भी बिला वज्ह येह काम नहीं करने चाहिएं।

﴿6﴾ **जब** तक दूसरा बात कर रहा हो, इधर उधर देखे बिग़ैर उस की त़रफ़ पूरी त़रह़ मुतज्जेह हो कर इत्मीनान से सुनना चाहिये, बीच में बोलना भी नहीं चाहिये कि किसी की बात काटना ख़िलाफ़े अदब है। **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी की बात को न काटते अलबत्ता अगर कोई ह़द से तजावुज़ करने लगता तो उसे रोक देते या वहां से उठ जाते। (شمائل ترمذی ص ۲۰۰ مُلَخَّصًا)

https://www.dawateislamiindia.org/

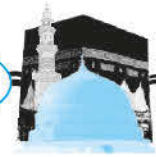

﴾7﴿ **हक्ले** या'नी रुक रुक कर बात करने वाले या तुतले की पीछे से नक़्ल न उतारें कि ग़ीबत है और उस के सामने से नक़्ल उतारना उस की दिल आज़ारी का भी सबब है।

﴾8﴿ **ज़ियादा** बातें करने और दौराने गुफ़्तगू क़ह्क़ह़े लगाते रहने से इ़ज़्ज़तो रो'ब में कमी आती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"ख़ामोशी भी ने'मत है" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से दुन्या व आख़िरत में काम आने वाली 15 बातें

﴾1﴿ **ह़ज़रते** लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा गया : आप इस मक़ामो मर्तबे तक कैसे पहुंचे ? उन्हों ने फ़रमाया : सच कहने, अमानत अदा करने और बेकार बातों को छोड़ देने से।

(حلیۃ الاولیا ج٦ ص٣٥٨ حدیث٨٩٢٥, **अल्लाह** वालों की बातें, जि. 6, स. 462)

﴾2﴿ **फ़रमाने** इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه : जो बात (किसी को उस की इस्लाह़ के लिये) सब लोगों के सामने की जाए उसे डांट डपट और बे इ़ज़्ज़ती करना शुमार किया जाता है और जो बात (किसी की इस्लाह़ के लिये) तन्हाई (या'नी अकेले) में की जाए वोह शफ़्क़त व नसीह़त समझी जाती है।

(एह़याउ़ल ऊलूम (उर्दू), जि. 2 स. 659)

﴾3﴿ **चार** चीज़ें चार चीज़ों की त़रफ़ ले जाती हैं : (1) "ख़ामोशी" सलामती की त़रफ़ (2) "नेकी" बुज़ुर्गी की त़रफ़ (3) "सख़ावत" सरदारी की त़रफ़ और (4) "शुक्र" ने'मत की ज़ियादती की त़रफ़। (दीनो दुन्या की अनोखी बातें, जि. 1, स. 84)

﴾4﴿ **"आदमी** का बात करना" उस की फ़ज़ीलत का बयान और अ़क़्ल का तरजुमान होता है लिहाज़ा इसे अच्छी और थोड़ी बात तक ही महदूद रखो। (या'नी बोलने से बन्दे की समझदारी की पहचान होती है, लिहाज़ा कम बोले ताकि पर्दा रहे कि बातें करते चले जाने से उस के अन्दर छुपी हुई कम अ़क़्ली और नादानी ज़ाहिर हो सकती है)

https://www.dawateislamiindia.org/

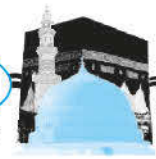

﴾5﴿ **आदमी** अपनी बातचीत के ज़रीए पहचाना जाता और अपने काम के ज़रीए मश्हूर होता है, लिहाज़ा दुरुस्त बात कहो (और सिर्फ़ अच्छे काम करो)।

﴾6﴿ **जो** अपने आप को पहचान ले, अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे, फ़ुज़ूल कामों में न पड़े और अपने मुसल्मान भाई की बे इ़ज़्ज़ती न करे तो वोह हमेशा सलामत रहता और उसे शरमिन्दगी कम उठानी पड़ती है।

﴾7﴿ **ख़ामोशी** इख़्तियार करो और सच्चे बन कर रहो क्यूं कि ख़ामोशी हिफ़ाज़त करने वाली और सच्चाई इ़ज़्ज़त दिलाने वाली है।

﴾8﴿ **जो** ज़ियादा बोलता है समझदार लोग उस से कतराते और दूर भागते हैं।

﴾9﴿ **जो** अपनी गुफ़्तगू में सच बोलता है उस की ख़ुश अख़्लाक़ी में इज़ाफ़ा होता है।

﴾10﴿ **ऐसी** ख़ामोशी जिस से सलामती मिले उस गुफ़्तगू से बेहतर है जिस से शरमिन्दगी उठानी पड़े।

﴾11﴿ **जो** ना मुनासिब गुफ़्तगू करता है उसे ना पसन्दीदा बातें सुननी पड़ती हैं।

﴾12﴿ **ज़बान** का ज़ख़्म तल्वार के ज़ख़्म से ज़ियादा सख़्त है।

﴾13﴿ **जाहिल** की बेहूदा और तक्लीफ़ देह बात पर ख़ामोश रहना उस के लिये भरपूर जवाब और उस जाहिल के लिये ख़ूब तक्लीफ़ का बाइ़स है।

﴾14﴿ **ज़बान** ऐसी काट करने वाली तल्वार है जिस के वार से बचना मुम्किन नहीं और कलाम (या'नी बात) ऐसा निकला हुवा तीर है जिसे वापस लाना मुम्किन नहीं।

(दीनो दुन्या की अनोखी बातें, जि. 1, स. 85 ता 88 ब तग़य्युरे क़लील)

﴾15﴿ **किसी** को अपना राज़ मत बताओ कि जो बात दो होंटों में नहीं समाती वोह कहीं भी नहीं समा सकती।

https://www.dawateislamiindia.org/

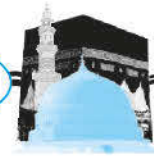

नसीहतों भरी 50 दिलचस्प बातें

(येह बातें सोशल मीडिया वग़ैरा से ले कर बित्तसर्रुफ़ या'नी तब्दीली के साथ पेश की गई हैं)

﴾1﴿ **धागा** और लम्बी ज़बान उ़मूमन उलझ जाती हैं इस लिये धागा लपेट कर और ज़बान समेट कर रखिये।

﴾2﴿ **शूगर** (की बीमारी) मीठा खाने से होती है, मीठा बोलने से नहीं।

﴾3﴿ **जब** चाकू, ख़न्जर, तीर और तल्वार बैठे सोच रहे थे कि कौन ज़ियादा गहरा ज़ख़्म देता है तब अल्फ़ाज़ पीछे बैठ कर मुस्कुरा रहे थे। (या'नी अल्फ़ाज़ के ज़ख़्म सब से गहरे होते हैं)

﴾4﴿ **जिन** बातों पर झगड़ा कर के लोग मनों मिट्टी तले सो जाते हैं उन्ही बातों पे हलकी सी मिट्टी डाल कर दुन्या में पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारी जा सकती है।

﴾5﴿ **छुरी** ही से नहीं लफ़्ज़ों से भी ज़ब्ह़ किया जाता है, गोली ही सिर्फ़ हलाक नहीं करती, रवय्ये (या'नी ग़लत़ बरताव) भी मार देते हैं, बेशक गोली और छुरी दुन्या से तअ़ल्लुक़ ख़त्म करवा देती है लेकिन लफ़्ज़ों की काट और रवय्यों की मार ह़ल्क़ का फन्दा बन कर न जीने देती है न मरने।

﴾6﴿ **तब** बोलिये जब आप के अल्फ़ाज़ आप की ख़ामोशी से ज़ियादा मुफ़ीद व ख़ूब सूरत हों।

﴾7﴿ **तो़ता** मिर्चें खा कर भी मीठा बोलता है जब कि इन्सान बसा अवक़ात मीठा खा कर भी कड़वा बोलता है।

﴾8﴿ **मीठा** बोलने वाले का "**ज़ह्र**" भी बिक जाता है जब कि कड़वा बोलने वाले का "**शह्द**" भी नहीं बिकता।

﴾9﴿ **जिस** त़रह़ फल ख़रीदते वक़्त "**मीठे फल**" का इन्तिख़ाब करते हैं ऐसे ही बोलते वक़्त भी "**मीठे बोल**" मुन्तख़ब कीजिये।

https://www.dawateislamiindia.org/

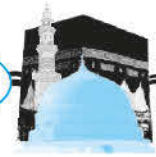

﴾10﴿ **जिस** त़रह़ छोटे छोटे सूराख़, बन्द कमरे में सूरज निकलने का पता दे देते हैं, इसी त़रह़ छोटी छोटी बातें भी इन्सान का किरदार नुमायां करती हैं।

﴾11﴿ **बेशक** अल्फ़ाज़ की भी अहम्मिय्यत होती है मगर बा'ज़ अवक़ात लहजों का असर बहुत ज़ियादा होता है।

﴾12﴿ **हमेशा** "मीठा" बोलो कि अगर कभी वापस लेना पड़े तो "कड़वा" न लगे।

﴾13﴿ **कुछ** सुवालात के जवाबात ज़बान नहीं वक़्त देता है और वक़्त जो जवाबात देता है वोह ला जवाब होते हैं।

﴾14﴿ **कहते हैं :** ज़रा सी बात से तअ़ल्लुक़ टूट गया ह़ालां कि उस "ज़रा सी बात" के पीछे बा'ज़ दफ़्आ़ "बहुत सी बातें" होती हैं और वोह ज़रा सी बात दर अस्ल बरदाश्त की आख़िरी ह़द होती है।

﴾15﴿ **इन्सान** अपनी ज़बान के पीछे छुपा हुवा है अगर उसे समझना है तो उसे बोलने दीजिये।

﴾16﴿ **लफ़्ज़ों** के दांत नहीं होते मगर येह काट लेते हैं और जब येह काटते हैं तो इन का ज़ख़्म आसानी से नहीं भरता।

﴾17﴿ **बा'ज़** अवक़ात लोग नर्म लहजे से इतनी गर्म बात कर जाते हैं कि उन लफ़्ज़ों की तपिश (या'नी गरमी) ठन्डी होने (या'नी भूलने) में उ़म्र लग जाती है।

﴾18﴿ **अ़क़्ल** छोटी हो जाए तो ज़बान लम्बी हो जाती है।

﴾19﴿ **"मशीन"** को ज़ंग लग जाए तो पुरज़े (या'नी PARTS) शोर करते हैं और जब "अ़क़्ल" को ज़ंग लगे तो ज़बान फ़ुज़ूल बोलने लग जाती है।

﴾20﴿ **सोच** समझ कर बोलिये कि आप के अल्फ़ाज़ किसी का दिल बुरी त़रह़ तोड़ भी सकते हैं।

﴾21﴿ **उ़म्दा** लहजे में बोले गए अल्फ़ाज़ से बात समझ में आती, और दिल में उतर जाती है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात जादू अल्फ़ाज़ में कम और लहजे में ज़ियादा होता है।

https://www.dawateislamiindia.org/

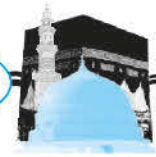

﴾22﴿ **यूं** तो बोलना सभी को आता है मगर किसी का दिमाग़ बोलता है तो किसी का अख़्लाक़।

﴾23﴿ **"गुफ़्तगू"** एक ऐसा अ़मल है जिस के ज़रीए़ या तो इन्सान किसी के **"दिल में उतर"** जाता है या फिर किसी के **"दिल से उतर"** जाता है।

﴾24﴿ **दो** मीठे बोल, पुर ख़ुलूस अल्फ़ाज़ और मुअद्दिबाना (या'नी बा अदब) लहजा किसी की रूह़ को तरो ताज़ा कर सकते हैं।

﴾25﴿ **ह़क़ारत** भरे ज़हरीले अल्फ़ाज़ बसा अवक़ात किसी को जीते जी मार डालने के लिये काफ़ी होते हैं।

﴾26, 27﴿ **सारी** दुन्या का शह्द जम्अ़ कर लीजिये मगर ज़बान का एक **"मीठा बोल"** उस (दुन्या भर के शह्द) से ज़ियादा मीठा है और सारी दुन्या का ज़ह्र जम्अ़ कर लीजिये मगर ज़बान के एक **"कड़वे बोल"** का ज़ह्र उस (सारे ज़ह्र) से ज़ियादा कड़वा है।

﴾28﴿ **अपनी** ज़बान को कड़वी बातों से बचाना बहुत बड़ी काम्याबी है।

﴾29﴿ **प्यार** और **"मीठे बोल"** से सारी दुन्या फ़त्ह़ की जा सकती है।

﴾30﴿ **ज़बान** का साइज़ अगर्चे कम है मगर बहुत कम लोग इसे संभाल पाते हैं।

﴾31﴿ **सिर्फ़** अपनी ज़बान पर क़ाबू पा लेने से आप बहुत सारी मुश्किलात से बच सकते हैं।

﴾32﴿ **अगर** किसी की इस्लाह़ करनी हो तो नर्म लहजे में कीजिये, क्यूं कि नर्म लहजा इस्लाह़ के जज़्बे को जगाता है जब कि सख़्त लहजा ज़िद पैदा करता है।

﴾33﴿ **कुछ** बातों का जवाब सिर्फ़ ख़ामोशी है और ख़ामोशी बहुत ख़ूब सूरत जवाब है।

﴾34﴿ **परिन्दे** अपने पाउं और इन्सान अपनी ज़बान की वज्ह से जाल में फंसते हैं।

﴾35﴿ **गुफ़्तगू** में नरमी इख़्तियार कीजिये अल्फ़ाज़ से ज़ियादा लहजे का असर होता है।

﴾36﴿ **चम्मच** नापाक हो जाए तो थोड़े से पानी से पाक की जा सकती है मगर ज़बान नापाक हो जाए तो उसे सात समुन्दर का पानी भी पाक नहीं कर सकता।

﴾37﴿ **अगर** कोई खाने में ज़ह्र घोल दे तो इस का इ़लाज मुम्किन, मगर कोई कान में ज़ह्र घोल दे तो इस का इ़लाज बहुत मुश्किल हो जाता है।

https://www.dawateislamiindia.org/

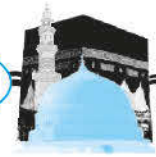

﴾38﴿ **अपनी** ज़बान को मुसल्मानों को सलाम करने का आ़दी बना लीजिये इस से दोस्त बढ़ते और दुश्मन कम होते हैं।

﴾39﴿ **बच्चे** की ज़बान बसा अवक़ात इन्सान की अच्छी या बुरी शख़्सिय्यत का राज़ उगल दिया करती है।

﴾40﴿ **हमेशा** छोटी छोटी बातों में भी एह़तियात़ करनी चाहिये कि इन्सान पहाड़ों ही से नहीं पथ्थरों से भी ठोकर खाता है।

﴾41﴿ **बद गुमानी** और बद ज़बानी दो ऐसे ऐ़ब हैं जो इन्सान के हर कमाल (या'नी ख़ूबी) को ज़वाल (या'नी नुक़्सान) में बदल सकते हैं।

﴾42﴿ **छोटी** छोटी बातों का ख़याल रखने से बड़ी बड़ी मह़ब्बतें पैदा होती हैं।

﴾43﴿ **ज़बान** की हिफ़ाज़त कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم इ़ज़्ज़त पाएंगे, ब सूरते दीगर ज़िल्लत के इस्तिक़्बाल के लिये तय्यार रहिये।

﴾44﴿ **आवाज़** बुलन्द करने के बजाए अपनी दलील को बुलन्द कीजिये, फूल बारिश से खिलते हैं बादलों के गरज्ने से नहीं।

﴾45﴿ **एक** बार का झूट आप की हमेशा की सच्चाई पर सुवालिया निशान बना सकता है!

﴾46﴿ **अ़क़्लमन्द** इन्सान उस वक़्त तक नहीं बोलता जब तक सब ख़ामोश नहीं हो जाते।

﴾47﴿ **बुरी** बातें सुन कर ह़ौसला न हारो, शोर खिलाड़ी नहीं तमाशाई करते हैं।

﴾48﴿ **किसी** को चार पैसे दे कर ख़ुश नहीं कर सकते तो "**दो मीठे बोल**" ही बोल कर ख़ुश कर दीजिये।

﴾49﴿ **लोगों** के साथ **हमेशा अच्छा सुलूक** कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم उन के दिल में आप के लिये **हमेशा इ़ज़्ज़त** बनी रहेगी।

﴾50﴿ **मेरे** ऐ़ब मेरी इस्लाह़ की निय्यत से मुझे ही बताइये, मेरी कोई दूसरी ब्रान्च नहीं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

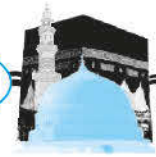

''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से ज़बान के मुतअ़ल्लिक़ 19 अ़रबी मुहावरे (मअ़ उर्दू तरजमा)

﴿1﴾ خَيْرُ الْكَلَامِ مَا قَلَّ وَدَلَّ (बेहतरीन बात वोह है जो क़लील या'नी मुख़्तसर व पुर दलील हो)

﴿2﴾ عَيْبُ الْكَلَامِ تَطْوِيْلُهٗ (कलाम या'नी बात का (बिला ज़रूरत) लम्बा करना कलाम का ऐब है)

﴿3﴾ بَلَاءُ الْاِنْسَانِ مِنَ اللِّسَانِ (इन्सान पर आज़्माइश ज़बान की वज्ह से आती है)

﴿4﴾ لِسَانُكَ دَاءٌ مَا لَهٗ دَوَاءٌ (तेरा ज़बान का ग़लत इस्ति'माल करना ऐसी बीमारी है जिस की कोई दवा नहीं)

﴿5﴾ لَا تُكْثِرْ كَلَامَكَ فَيَقِلَّ مَقَامُكَ (ज़ियादा गुफ़्तगू न करो वरना तुम्हारा मक़ामो मर्तबा कम हो जाएगा)

﴿6﴾ حِفْظُ اللِّسَانِ سَلَامَةُ الْاِنْسَانِ (ज़बान की हिफ़ाज़त में इन्सान की सलामती है)

﴿7﴾ يَمُوْتُ الْفَتٰى مِنْ عَثْرَةٍ بِلِسَانِهٖ وَ لَيْسَ يَمُوْتُ مِنْ عَثْرَةِ الرِّجْلِ (नौ जवान अपनी ज़बान के फिसलने से मरता है, पाउं के फिसलने से नहीं)

﴿8﴾ خَيْرُ الْخِلَالِ حِفْظُ اللِّسَانِ (ज़बान की हिफ़ाज़त बेहतरीन ख़स्लतो आ़दत है)

﴿9﴾ صَدْرُكَ اَوْسَعُ لِسِرِّكَ (तेरा सीना तेरे अपने राज़ के लिये वसीअ़ तरीन जगह है लिहाज़ा अपनी कमज़ोरियां किसी को मत बता)

﴿10﴾ مَا اَصْغَرَ اللِّسَانَ وَمَا اَكْثَرَ نَفْعَهٗ وَضَرَرَهٗ (ज़बान कितनी छोटी सी है लेकिन इस का नफ़्अ़ व नुक़्सान कितना ज़ियादा होता है)

﴿11﴾ جُرْحُ اللِّسَانِ اَنْكٰى مِنْ جُرْحِ السِّهَامِ (ज़बान का ज़ख़्म तीर के ज़ख़्म से ज़ियादा तक्लीफ़ देह है)

﴿12﴾ مَنْ حَفِظَ لِسَانَهٗ نَجَا مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ (जिस ने अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त की उस ने (बहुत) सारी बुराइयों से नजात पाई)

﴿13﴾ لَا تَتْرُكْ لِسَانَكَ يَقْطَعُ عُنُقَكَ (अपनी ज़बान को ऐसा खुला मत छोड़ो कि तुम्हारी गरदन कटवा दे)

https://www.dawateislamiindia.org/

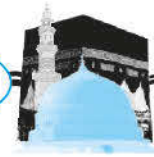

﴾14﴿ مَنْ كَثُرَ كَلَامُهٗ قَلَّ فِعْلُهٗ (जिस की बातें ज़ियादा हों उस का काम कम होता है)

﴾15﴿ مَنْ كَثُرَ كَلَامُهٗ كَثُرَ مَلَامُهٗ (जिस की गुफ़्तगू ज़ियादा हो उसे शरमिन्दगी का सामना भी ज़ियादा होता है)

﴾16﴿ مَنْ عَذُبَ لِسَانُهٗ كَثُرَ اِخْوَانُهٗ (जिस की ज़बान मीठी हो उस के दोस्त ज़ियादा होते हैं)

﴾17﴿ اَللِّسَانُ مِفْتَاحُ الْخَيْرِ وَالشَّرِّ (भलाई और बुराई की चाबी ज़बान है)

﴾18﴿ اَلْحَرْبُ اَوَّلُهَا كَلَامٌ (लड़ाई की इब्तिदा बातों से होती है)

﴾19﴿ لِيْنُ الْكَلَامِ قَيْدُ الْقُلُوْبِ (नर्म बोल दिलों को लूट लेते हैं)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"या रब ! करम फ़रमा" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से 11 उर्दू मुहावरे (मअ मआनी)

(मुहावरा या'नी वोह अल्फ़ाज़ या जुम्ला जिसे अहले ज़बान ने लुग़वी मा'ना की मुनासबत या ग़ैर मुनासबत से किसी ख़ास मफ़्हूम के लिये मख़्सूस कर लिया हो ।)

﴾1﴿ **ज़बान** बदलने से गली बदलना बेहतर है (या'नी वा'दा वफ़ा न करने से नुक़्सान उठाना बेहतर है)

﴾2﴿ **ज़बान** पर सर देना (या'नी अ़हद पूरा करने के लिये जान की बाज़ी लगा देना)

﴾3﴿ **ज़बान** से फूल झड़ना (या'नी निहायत मीठा बोलना)

﴾4﴿ **ज़बान** क़ैंची की त़रह़ चलना (या'नी बहुत तेज़ी से गुफ़्तगू करना)

﴾5﴿ **ज़बान** को लगाम दो (या'नी सोच समझ कर बोलो)

﴾6﴿ **ज़बान** हिलाने से काम निकलता है (या'नी कहने सुनने ही से काम होता है, सिफ़ारिश से मक़्सद ह़ासिल होता है)

﴾7﴿ **पहले** तोलो बा'द में बोलो (या'नी पहले ग़ौर कर लो, बात करने जैसी हो तो करो वरना चुप रहो)

https://www.dawateislamiindia.org/

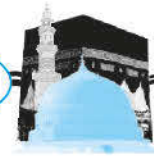

﴾8﴿ **एक** चुप सो सुख (या'नी ख़ामोशी में आराम ही आराम है)

﴾9﴿ **एक** चुप सो को हराए (या'नी चुप रहने वाला ही काम्याब होता है)

﴾10﴿ **जो** बात दो होंटों में नहीं समाती वोह कहीं भी नहीं समाती (या'नी किसी को राज़ बता कर येह उम्मीद रखना बेकार है कि दूसरों को पता नहीं चलेगा)

﴾11﴿ **ज़बान** में खुजली होना (या'नी तू तू मैं मैं करने को जी चाहना)

गुनाहों की आ़दतों से तौबा नसीब हो गई : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बेशक बातचीत भी अ़मल है अगर रिज़ाए इलाही के मुताबिक़ हो तो सवाब, गुनाह भरी हो तो अ़ज़ाब और फ़ुज़ूल हो तो बरोज़े आख़िरत हि़साब। इन चीज़ों की मा'लूमात और अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतें सीखने सिखाने के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना मुफ़ीद है। एक ''मदनी बहार'' पेश की जाती है : एक नौ जवान दीनी माहोल में आने से पहले गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। झूट बोलना, मां बाप की ना फ़रमानी करना, बात बात पर गुस्सा करना, ना जाइज़ अंगूठी और छल्ले पहनना और छुंगली के नाखुन खूब बढ़ा कर रखना वग़ैरा गोया इन की ज़िन्दगी का हि़स्सा बन चुका था, लोगों के समझाने के बा वुजूद भी फ़ाएदा न होता। बिल आख़िर इस्लामी भाइयों की इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से इन को **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतें सीखने सिखाने के तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत हा़सिल हुई, मदनी क़ाफ़िले की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि इन्हों ने झूट बोलने की गन्दी आ़दत से तौबा की और खूब बढ़ाया हुवा नाखुन जो मन्अ़ करने के बा वुजूद भी नहीं काटते थे उसे दौराने मदनी क़ाफ़िला ही काट दिया। मज़ीद येह कि इन्हों ने अपनी बुरी आ़दतों से तौबा करते हुए अच्छी अच्छी निय्यतें कीं कि वालिदैन से मुआ़फ़ी मांग कर उन को राज़ी करूंगा, अपने गुस्से पर क़ाबू रखूंगा, **दा'वते इस्लामी** के दीनी कामों में खुद भी हि़स्सा लूंगा और दूसरों को भी इस की दा'वत दूंगा।

https://www.dawateislamiindia.org/

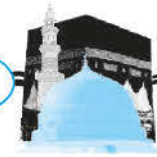

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस मदनी बहार में आप ने सुना कि वोह नौ जवान इस्लामी भाई "ना जाइज़ अंगूठी और छल्ले पहना करते थे," इस ह़वाले से मक्तबतुल मदीना की किताब "रफ़ीक़ुल ह़रमैन" सफ़ह़ा नम्बर 82 पर है : इस्लामी भाई जब कभी अंगूठी पहनें तो सिर्फ़ चांदी की साढ़े चार माशे (या'नी 4 ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम वज़्न की एक ही अंगूठी पहनें एक से ज़ियादा न पहनें और उस एक अंगूठी में नगीना भी एक ही हो एक से ज़ियादा नगीने न हों और बिग़ैर नगीने के भी न पहनें। नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं। चांदी या किसी और धात का छल्ला (चाहे मदीने शरीफ़ ही का क्यूं न हो) या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इ़लावा किसी भी धात (मेटल, METAL मसलन सोना, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील वग़ैरा) की अंगूठी नहीं पहन सकते। सोने चांदी या किसी भी धात की ज़ंजीर गले में पहनना गुनाह है।

नीज़ बयान कर्दा मदनी बहार में येह भी था कि वोह नौ जवान "छुंगली या'नी हाथ की सब से छोटी उंगली का नाख़ुन ख़ूब बढ़ा कर रखते थे," इस बारे में शरई मस्अला येह है कि "चालीस रोज़ से ज़ियादा नाख़ुन या मूए बग़ल या मूए ज़ेरे नाफ़ (या'नी नाफ़ के नीचे के बाल) रखने की इजाज़त नहीं, बा'द चालीस रोज़ के गुनाहगार होंगे, एकआध बार में गुनाहे सग़ीरा (या'नी छोटा गुनाह) होगा, आ़दत डालने से कबीरा (या'नी बड़ा गुनाह) हो जाएगा, फ़िस्क़ होगा।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 678)

सुन्नतें सीखने तीन दिन के लिये

हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 670)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बल मुस्तफ़ा ! हमें गुफ़्तगू करने के आदाब पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। और हमारी ज़बान से कभी भी तेरी नाराज़ी वाली बात न निकले। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

https://www.dawateislamiindia.org/

नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)

हम अल्लाह पाक के गुनाहगार बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम हैं। यक़ीनन ज़िन्दगी मुख़्तसर है, हम हर वक़्त मौत के क़रीब होते जा रहे हैं। हमें जल्द ही अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात **अल्लाह** पाक का हुक्म मानने और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में है।

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" का एक मदनी क़ाफ़िला ..... से आप के अ़लाक़े की ..... मस्जिद में आया हुवा है। हम "नेकी की दा'वत" देने के लिये ह़ाज़िर हुए हैं। मस्जिद में अभी दर्स जारी है, दर्स में शिर्कत करने के लिये मेह्रबानी फ़रमा कर अभी तशरीफ़ ले चलिये, हम आप को लेने के लिये आए हैं, आइये ! तशरीफ़ ले चलिये ! (अगर वोह तय्यार न हों तो कहें कि) अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिये। नमाज़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه सुन्नतों भरा बयान होगा। आप से दरख़्वास्त है कि बयान ज़रूर सुनियेगा। **अल्लाह** पाक हमें और आप को दोनों जहानों की भलाइयां नसीब फ़रमाए, आमीन।

https://www.dawateislamiindia.org/

2

फ़ुज़ूल बातों

से बचने की फ़ज़ीलत

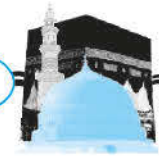

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

फ़ुज़ूल बातों से बचने की फ़ज़ीलत

या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई "फ़ुज़ूल बातों से बचने की फ़ज़ीलत" के 105 सफ़हात पढ़ या सुन ले उसे फ़ुज़ूलिय्यात से बचा, नेक बना और बार बार ह़ज व दीदारे मदीना का शरफ़ अ़ता फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना काम आ गया : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्ह़ूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त होलनाकियों से दो चार (या'नी मुसीबत में मुब्तला) हुवा, **मुन्कर नकीर** के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : **"दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वज्ह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है।"** अब अ़ज़ाब के फ़रिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े। इतने में एक ख़ूब सूरत उ़म्दा ख़ुश्बू वाले साहिब मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान आड़ हो गए और उन्हों ने मुझे **मुन्कर नकीर** के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए आप कौन हैं ? फ़रमाया : **"तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी मदद पर मामूर किया गया है।"** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٢٦٠)

https://www.dawateislamiindia.org/

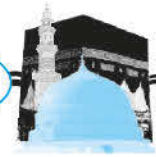

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला

हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहां आज कल बद क़िस्मती से ख़ामोश रहने वाले बहुत कम मिलते हैं। बा'ज़ों की ज़बान दिन भर चलती रहती है, सिर्फ़ सोते वक़्त ज़बान को कुछ आराम मिलता होगा, और बा'ज़ तो नींद में भी बातें करने लग जाते हैं ! जो ज़ियादा बोलता है बसा अवक़ात उस के मुंह से झूट भी निकल सकता है, ग़ीबत भी हो सकती है, चुग़ल ख़ोरी भी कर बैठता होगा, राज़ भी फ़ाश कर डालता होगा, दिल आज़ारियां भी करता रहता होगा, लोगों की हर बात को क़ैंची की त़रह़ काटते रहने की वज्ह से अपना वक़ार भी खो बैठता होगा, बारहा ऐसा भी होता होगा कि बोल कर पछताता होगा, फिर बातूनी शख़्स के "बक बक" करने से दूसरों को भी तो बोरियत होती है, लोग बेज़ार हो कर उस से पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं। अल ग़रज़ ज़ियादा बातें करने में बे शुमार नुक़्सानात हैं। इसी लिये तो किसी ने कहा है कि "न बोलने में नव गुन" (या'नी न बोलने में 9 ख़ूबियां) क्यूं कि ख़ामोश आदमी बहुत सारी आफ़तों से अम्न में रहता है। **अल्लाह** करीम हम सब को बे ज़रूरत बातें करने से महफ़ूज़ फ़रमाए और ज़बान की आफ़तों से बचाए। आमीन

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह पाक को फ़ुज़ूल बातें ना पसन्द हैं : **अल्लाह** पाक को फ़ुज़ूल बातें ना पसन्द हैं, क़ुरआने करीम, पारह 18 **सूरतुल मुअमिनून** आयत 3 में फ़ुज़ूल बातों के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाता है : وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ (**आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** और वोह जो फ़ुज़ूल बात से मुंह फेरने वाले हैं)

https://www.dawateislamiindia.org/

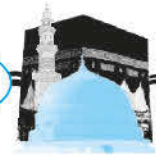

आयते मुबारका की तफ़्सीर : **इस** आयते मुबारका में काम्याबी ह़ासिल करने वाले मोमिनों की दूसरी ख़ूबी का बयान फ़रमाया गया है कि वोह हर लह्वो बात़िल से बचे रहते हैं। इस आयते मुबारका में "लग़्व" का तज़्किरा है इस सिल्सिले में "तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" जिल्द 6 सफ़ह़ा 499 ता 501 पर है : अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "लग़्व से मुराद हर वोह क़ौल, फ़े'ल और ना पसन्दीदा या मुबाह़ काम है जिस का मुसल्मान को दीनी या दुन्यवी कोई फ़ाएदा न हो जैसे मज़ाक़ मस्ख़री, बेहूदा (या'नी फ़ुज़ूल) गुफ़्तगू, खेलकूद, फ़ुज़ूल कामों में वक़्त ज़ाएअ़ करना, शहवात (या'नी ख़्वाहिशात) पूरी करने में ही लगे रहना वग़ैरा वोह तमाम काम जिन से **अल्लाह** पाक ने मन्अ़ फ़रमाया है। ख़ुलासा येह है कि मुसल्मान को अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये नेक आ'माल करने में मसरूफ़ रहना चाहिये या वोह अपनी ज़िन्दगी बसर करने के लिये ब क़द्रे ज़रूरत (ह़लाल) माल कमाने की कोशिश में लगा रहे।" (تفسیر صاوی ج ٤٠٣ ص ١٣٥٦-١٣٥٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बेकार बातों से बचने की तरग़ीब : **अह़ादीस** में भी ला या'नी और बेकार कामों से बचने की तरग़ीब दी गई है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी के इस्लाम की अच्छाई में से येह है कि वोह लाया'नी चीज़ छोड़ दे।" (موطا امام مالك ج٢ ص٤٠٣ حديث ١٧١٨) या'नी जो चीज़ कारआमद न हो उस में न पड़े, ज़बान, दिल और दीगर आ'ज़ा को बेकार बातों की त़रफ़ मुतवज्जेह न करे। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 520)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नजात क्या है ? : **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : नजात क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो और तुम्हारा घर तुम्हारे लिये गुन्जाइश रखे (या'नी बेकार इधर उधर न जाओ) और अपनी ख़त़ा पर आंसू बहाओ। (ترمذی ج٤ ص١٨٢ حدیث٢٤١٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

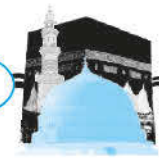

ज़बान की हिफ़ाज़त करने की ज़रूरत और इस के फ़वाइद व नुक़्सानात : **याद रहे** कि ज़बान की हिफ़ाज़त व निगहदाश्त और फ़ुज़ूलिय्यात व लग़्विय्यात से इसे बाज़ रखना बहुत ज़रूरी है क्यूं कि ज़ियादा सरकशी और सब से ज़ियादा फ़साद व नुक़्सान इसी ज़बान से रूनुमा होता है और जो शख़्स ज़बान को खुली छुट्टी दे देता और इस की लगाम ढीली छोड़ देता है तो शैतान उसे हलाकत में डाल देता है। ज़बान की हिफ़ाज़त करने का **एक फ़ाएदा** येह भी है कि इस से नेक आ'माल की हिफ़ाज़त होती है क्यूं कि जो शख़्स ज़बान की हिफ़ाज़त नहीं करता बल्कि हर वक़्त गुफ़्तगू में मसरूफ़ रहता है तो ऐसा शख़्स लोगों की ग़ीबत में मुब्तला होने से बच नहीं पाता, यूंही उस से कुफ़्रिय्या अल्फ़ाज़ निकल जाने का बहुत अन्देशा (या'नी RISK) रहता है और येह दोनों ऐसे अ़मल हैं जिस से बन्दे के नेक आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते हैं।

खजूरों का थाल (वाक़िआ़) : **ह़ज़रते** इमाम ह़सन बसरी رَضِیَ اللهُ عَنْه से किसी शख़्स ने कहा : फ़ुलां शख़्स ने आप की ग़ीबत की है। येह सुन कर आप ने ग़ीबत करने वाले आदमी को खजूरों का थाल भर कर रवाना किया और साथ में येह कहला भेजा : सुना है कि तुम ने मुझे अपनी नेकियां हदिय्या (या'नी GIFT) की हैं, तो मैं ने उन का बदला देना बेहतर जाना (इस लिये खजूरों का येह थाल ह़ाज़िर है)। (منهاج العابدين ص ٦٥)

लोग कहीं तुम्हारे दांत न तोड़ दें : और **दूसरा फ़ाएदा** येह है कि ज़बान की हिफ़ाज़त करने से इन्सान दुन्या की आफ़ात से महफ़ूज़ रहता है, चुनान्चे ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़बान से ऐसी बात न निकालो जिसे सुन कर लोग तुम्हारे दांत तोड़ दें। और एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अपनी ज़बान को बे लगाम न छोड़ो ताकि येह तुम्हें किसी फ़साद में मुब्तला न कर दे। (منهاج العابدين ص ٦٦)

https://www.dawateislamiindia.org/

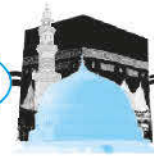

एक फ़ुज़ूल सुवाल की अनोखी सज़ा (वाक़िआ) : **नीज़** ज़बान की हिफ़ाज़त न करने का **एक नुक़्सान** येह है कि बन्दा ना जाइज़ व हराम, लग़्व और बेकार बातों में मसरूफ़ हो कर गुनाहों में मुब्तला होता और अपनी ज़िन्दगी की क़ीमती तरीन चीज़ "वक़्त" को ज़ाएअ़ कर देता है। हज़रते हस्सान बिन सिनान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में मरवी है कि आप एक बालाख़ाने (या'नी मकान की छत पर बनाए जाने वाले कमरे) के पास से गुज़रे तो उस के मालिक से पूछा : "येह बालाख़ाना बनाए तुम्हें कितना अ़र्सा गुज़रा है?" येह सुवाल करने के बा'द आप को दिल में सख़्त नदामत (या'नी शरमिन्दगी) हुई और नफ़्स को मुख़ातब करते हुए यूं फ़रमाया : "ऐ मग़रूर नफ़्स! तू फ़ुज़ूल और लाया'नी सुवालात में क़ीमती तरीन वक़्त को ज़ाएअ़ करता है!" फिर उस फ़ुज़ूल सुवाल के कफ़्फ़ारे में आप ने एक साल रोज़े रखे। (منهاج العابدين ص ٦٥)

दोज़ख़ का अ़ज़ाब कोई बरदाश्त नहीं कर सकता : और **दूसरा नुक़्सान** येह है कि ना जाइज़ व हराम गुफ़्तगू की वज्ह से इन्सान क़ियामत के दिन जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला हो सकता है जिसे बरदाश्त करने की ताक़त किसी में नहीं। लिहाज़ा आ़फ़ियत इसी में है कि बन्दा अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे और इसे उन बातों के लिये इस्ति'माल करे जो उसे दुन्या और आख़िरत में नफ़्अ़ दें। **अल्लाह** पाक तमाम मुसल्मानों को ज़बान की हिफ़ाज़त व निगहदाश्त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन। (सिरातुल जिनान, जि. 6, स. 499 ता 501)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

भारी आ'माल : हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ऐसा अ़मल न बताऊं जो बदन पर हलका और मीज़ान (या'नी SCALE) में भारी हो?" मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं? इर्शाद

https://www.dawateislamiindia.org/

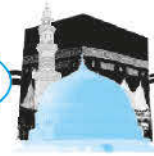

फ़रमाया : वोह ख़ामोशी, अच्छे अख़्लाक़ और बे फ़ाएदा गुफ़्तगू को छोड़ देना है।

(اَلصَّمت لِابْنِ اَبِی الدُّنیا مع موسوعه ج۷ ص۸۷ حدیث ۱۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

आदमी की ख़ूब सूरती क्या है ? : **हमारे** प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने चचाजान ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी ख़ूब सूरती ने मुझे तअ़ज्जुब में डाल दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आदमी की ख़ूब सूरती क्या है ? आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस की ज़बान। (ادب الدنیا والدین ص۲٤۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नसीह़त : **जन्नत** के नौ जवानों के सरदार, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते इमाम ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं : मैं ने अपने नानाजान, मक्के मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जो नसीह़तें फ़रमाते सुना उन में से एक येह भी है : "ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से रुका रहा।" (حلیة الاولیا ج۳ ص۲۳٦ حدیث ۳۸۱۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

दुआए मुस्त़फ़ा : **ह़ज़रते** अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार येह बात इर्शाद फ़रमाई : "**अल्लाह** पाक उस पर रह़म फ़रमाए ! जो बात करता है तो फ़ाएदा (या'नी सवाब) पाता है और **ख़ामोश** रहता है तो सलामत रहता है।"

(شعب الایمان ج٤ ص۲٤۱ حدیث ٤۹۳۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की नज़रे इनायत फिर जाने की अ़लामत : **फ़रमाने** इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه : **बन्दे** का बे फ़ाएदा कामों में मश्ग़ूल होना इस बात की अ़लामत (या'नी निशानी) है कि **अल्लाह** पाक ने उस से अपनी नज़रे रह़मत फेर ली है। (التمهید لابن عبدالبر ج٤ ص ۱۷۹)

https://www.dawateislamiindia.org/

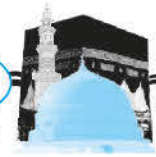

फ़ुज़ूल बोलने वाले के गुनाह सब से ज़ियादा : सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا बयान करते हैं : मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **क़ियामत** के दिन लोगों में सब से ज़ियादा उस के गुनाह होंगे जो सब से ज़ियादा लाया'नी (या'नी बेकार, फ़ुज़ूल) बातें करे। (جامع صغیر ص٨٦ حدیث ١٣٨٦)

शर्हे हदीस : इस लिये कि जो ज़ियादा बातें करेगा उस में बेकार और ख़िलाफ़े शरीअ़त बातें भी ज़ियादा होंगी तो ख़िलाफ़े शरीअ़त बातों से उस के गुनाह बढ़ेंगे और इस त़रफ़ उस की तवज्जोह भी न होगी। (التیسیر شرح الجامع الصغیر ج١ ص٢٠٠, फ़तावा रज़विय्या, जि. 28, स. 645 तस्हीलन)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी औफ़ा का ज़िक्रे ख़ैर : आइये ! येह रिवायत बयान करने वाले सहाबिये नबी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के मुबारक हालात सुनते हैं, आप का नाम : अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा और कुन्यत : अबू मुआविया है।

ज़कात देने वाले के लिये दुआ : सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا बयान करते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मेरे वालिद (अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه) ज़कात ले कर हाज़िर हुए तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह दुआ दी : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اٰلِ اَبِیْ اَوْفٰى- या'नी ऐ **अल्लाह** ! अबू औफ़ा की आल पर रह़मत नाज़िल फ़रमा !

(بخاری ج١ ص٥٠٤ حدیث١٤٩٧ مختصرا)

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में लिखते हैं : हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़ख़्रिय्या त़ौर पर ख़ुदा का शुक्र अदा कर रहे हैं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआएं हमें और हमारे वालिदे मोह़तरम को भी मिल चुकी हैं। बा'ज़ ने फ़रमाया कि यहां लफ़्ज़े आल ज़ाइद है मगर ह़क़ येह है कि आल अपने मा'ना ही में है, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ उन लोगों ही को नहीं बल्कि उन के बाल बच्चों सारे घर वालों को भी दुआएं देते हैं। (मिरआत, जि. 3, स. 11)

https://www.dawateislamiindia.org/

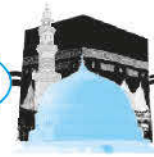

सहाबिये नबी से इमाम अबू ह़नीफ़ा की मुलाक़ात : **मिरआत** में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا कूफ़े में 87 हिजरी में वफ़ात पाने वाले आख़िरी सहाबी हैं। आप उन सहाबा से हैं जिन से ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) की मुलाक़ात है क्यूं कि आप की वफ़ात के वक़्त इमामे आ'ज़म की उ़म्र 7 साल (और बा'ज़ के नज़्दीक 17 साल (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 70 माख़ूज़न)) थी। (मिरआत, जि. 5, स. 382) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْن صلى الله عليه واٰله وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ुज़ूल बात किसे कहते हैं ? : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه "एह़याउल उ़लूम" में फ़रमाते हैं : अगर एक कलिमे (या'नी लफ़्ज़) से इस (बात करने वाले) का मक़्सूद (या'नी मत़लब) ह़ासिल हो सकता हो और वोह दो कलिमे (या'नी दो अल्फ़ाज़) इस्ति'माल करे तो **दूसरा कलिमा** फ़ुज़ूल या'नी ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) से ज़ियादा होगा। (اِحْيَاءُ الْعُلُوم ج۳ ص۱٤۱) अगर एक लफ़्ज़ से काम न चलता हो तो ऐसी सूरत में दो या ज़रूरत के मुत़ाबिक़ जितने भी अल्फ़ाज़ बोले गए वोह **फ़ुज़ूल** नहीं। जिन चीज़ों में नुक़्सान है और मुआख़ज़ा (या'नी पूछगछ) और अ़ज़ाब है उन से बचना तो हर इन्सान की अ़क़्ल का भी तक़ाज़ा है, लेकिन जो बातें ऐसी हों जिन से न नफ़्अ़ हो न नुक़्सान वोह भी दर ह़क़ीक़त नुक़्सान ही की बातें हैं क्यूं कि जितनी देर ऐसी बातें कीं उतनी देर ज़िक्रो दुरूद हो सकता था, तिलावत कर सकते थे। इन मनाफ़ेअ़ (या'नी फ़ाएदों) का ज़ाएअ़ होना नुक़्सान नहीं तो और क्या है ? फिर जब फ़ुज़ूल बातें शुरूअ़ हो जाती हैं तो बढ़ते बढ़ते (बसा अवक़ात) लोगों की बुराइयों और ग़ीबतों तक नौबत पहुंच जाती है। इस लिये ख़ैर (या'नी भलाई) इसी में है कि ख़ामोश रहे

https://www.dawateislamiindia.org/

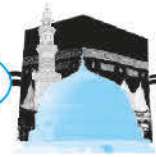

या **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करे, और ब क़दरे ज़रूरत दुन्या की थोड़ी बहुत बात करे जो जाइज़ उमूर से मुतअ़ल्लिक़ हो, दुन्या की जाइज़ बातों की कसरत भी दिल में क़सावत या'नी सख़्ती पैदा होने का ज़रीआ़ बन जाती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ामोशी फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली हो तो ग़फ़्लत है : **हज़रते** ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इर्शादे मुबारक है कि **अल्लाह** पाक के ज़िक्र से जो गुफ़्तगू ख़ाली है वोह लग़्व (या'नी फ़ुज़ूल) है और जो ख़ामोशी फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली है वोह **ग़फ़्लत** है। और जो निगाह इ़ब्रत से ख़ाली है वोह फ़ुज़ूल व बेकार है। वोह शख़्स मुबारक (या'नी बरकत वाला) है जिस की बातचीत में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र है, जिस की ख़ामोशी में ग़ौरो फ़िक्र है, जिस की आंख में इ़ब्रत है। (تنبیہ الغافلین ص۱۱۵)

ग़फ़्लत किसे कहते हैं ? : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस फ़रमाने ईसा عَلَيْهِ السَّلَام में येह भी है कि "जो ख़ामोशी फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली है वोह **ग़फ़्लत** है।" आइये ! जानते हैं कि ग़फ़्लत क्या है। "अत्ता'रीफ़ात" में है : اَلْغَفْلَة : مُتَابَعَةُ النَّفْسِ عَلٰى مَا تَشْتَهِيْهِ । या'नी नफ़्स को ख़्वाहिशात के पीछे लगाए रखना **ग़फ़्लत** कहलाता है। (التعریفات للجرجانی ص۱۱۶)

ग़ाफ़िलों की मज़म्मत में क़ुरआने करीम पारह 9 **सूरतुल आ'राफ़** आयत 205 में इर्शादे इलाही है :

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿۲۰۵﴾

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने रब को अपने दिल में याद करो गिड़गिड़ाते हुए और डरते हुए और बुलन्दी से कुछ कम आवाज़ में सुब्हो शाम, और ग़ाफ़िलों में से न होना।

https://www.dawateislamiindia.org/

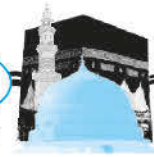

मुझे तुम पर ग़फ़्लत का ख़ौफ़ है : **बुख़ारी** शरीफ़ की एक ह़दीसे पाक में येह भी है : **अल्लाह** पाक की क़सम ! मुझे तुम पर फ़क़्र (या'नी ग़ुर्बत) का ख़ौफ़ नहीं लेकिन मुझे डर है कि तुम पर दुन्या फैला दी जाएगी जैसा कि तुम से पहली क़ौमों पर फैलाई गई थी, पस तुम भी इस दुन्या की ख़ातिर पहले लोगों की त़रह़ बाहम (या'नी आपस में) मुक़ाबला करोगे, और येह तुम्हें **ग़फ़्लत** में डाल देगी जिस त़रह़ इस ने पिछली क़ौमों को ग़ाफ़िल कर दिया। (بخاری ج٤ص٢٢٥ تا ٢٢٦ حدیث٦٤٢٥)

बल्कि नमाज़ें क़ज़ा होने पर रो रहा हूं : "**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली दक़्क़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बहुत बड़े वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सख़्त बीमार थे, मैं इयादत के लिये ह़ाज़िर हुवा, इर्द गिर्द मो'तक़िदीन का हुजूम था, वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रो रहे थे। मैं ने अ़र्ज़ की : **ऐ शैख़ !** क्या दुन्या छूटने पर रो रहे हैं ? फ़रमाया : नहीं, बल्कि नमाज़ें क़ज़ा होने पर रो रहा हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप की नमाज़ें क्यूंकर क़ज़ा हो गईं ? फ़रमाया : मैं ने जब भी सज्दा किया तो **ग़फ़्लत** के साथ और जब सज्दे से सर उठाया तो **ग़फ़्लत** के साथ और अब **ग़फ़्लत** ही में मौत से हम आग़ोश हो रहा हूं, फिर एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींच कर चार अ़रबी अश्आ़र पढ़े जिन का तरजमा येह है : ﴿1﴾ मैं ने अपने ह़श्र (या'नी उठाए जाने), क़ियामत के दिन और क़ब्र में अपने रुख़्सार (या'नी गाल) के पड़ा होने के बारे में ग़ौर किया ﴿2﴾ (मुझे मिली हुई) इतनी इ़ज़्ज़तो रिफ़अ़त (या'नी बुलन्दी) के बा'द (भी) मैं अकेला पड़ा होउंगा और अपने जुर्म की बिना पर रह्न (या'नी गिरवी) होउंगा और ख़ाक ही मेरा तक्या होगी ﴿3﴾ मैं ने अपने ह़िसाब की त़वालत (या'नी लम्बा होने) और नामए आ'माल दिये जाने के वक़्त की रुस्वाई के बारे में भी सोचा ﴿4﴾ मगर ऐ मुझे पैदा करने वाले और मुझे पालने वाले ! मुझे तुझ से रह़मत की उम्मीद है, तू ही मेरी ख़त़ाओं को बख़्शने वाला है। (مُكاشَفَةُ القُلوب ص٢٢)

रोता हुवा दाख़िले जहन्नम होगा : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** इस वाक़िए़ में किस क़दर इ़ब्रत है ! ज़रा इन **अल्लाह** वालों को देखिये जिन का हर लम्ह़ा यादे इलाही में बसर होता

https://www.dawateislamiindia.org/

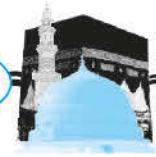

है मगर फिर भी आ़जिज़ी का आ़लम येह है कि अपनी इ़बादातो रियाज़ात को किसी ख़ातिर में नहीं लाते और **अल्लाह** पाक की बे नियाज़ी और उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से डरते हुए गिर्या व ज़ारी करते (या'नी रोते धोते) हैं। उन ग़फ़्लत के मारों पर सद करोड़ अफ़्सोस कि नेकी के नून का नुक़्ता तक जिन के पल्ले नहीं, इख़्लास का दूर दूर तक नामो निशान नहीं मगर ह़ाल येह है कि अपनी इ़बादतों के बुलन्द बांग दा'वे करते नहीं थकते ! **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे गुनाहों से मह़फ़ूज़ होने के बा वुजूद ख़ौफ़े इलाही से थरथराते कपकपाते और टप टप आंसू गिराते हैं, मगर ग़फ़्लत शिआ़र बन्दों का ह़ाल येह है कि बे धड़क मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) का सिल्सिला चलाते, अपने गुनाहों का आ़म ए'लान सुनाते और फिर इस पर ज़ोर ज़ोर से क़ह्क़हे लगाते ज़रा नहीं लजाते, कान खोल कर सुनिये ! "मुकाशफ़तुल क़ुलूब" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "जो हंस हंस कर गुनाह करेगा वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा।"

(مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص۲۷۵)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही !
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में बिशारत दी : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़फ़्लत की नींद उड़ाने, गुनाहों की आ़दत छुड़ाने और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतें सीखने सिखाने के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ **"मदनी बहार"** पेशे ख़िदमत है : चुनान्चे एक इस्लामी भाई दीनी माह़ोल में आने से पहले मुख़्तलिफ़ त़रह़ के गुनाहों में मुब्तला थे, वोह जिस्मानी त़ौर पर अगर्चे सिह़्ह़त मन्द थे लेकिन इ़बादत के मुआ़मले में बहुत कमज़ोर थे, जैसे जैसे जवानी के क़रीब होते रहे वैसे वैसे नेकियों से दूर होते चले गए। बुराइयों में ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। गाने बाजे, फ़िल्में ड्रामे, झूट, ग़ीबत और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में वक़्त बरबाद होता रहा और सिर्फ़ येही नहीं बल्कि उन की डाउन लोडिंग की

https://www.dawateislamiindia.org/

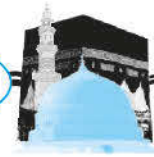

दुकान थी जिस के ज़रीए वोह ख़ुद तो गुनाह करते ही थे मज़ीद दूसरों के मोबाइल में फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे डाउन लोड कर के उन के इस गुनाह में शामिल हो जाते थे और इस के पैसे भी लेते थे। उन की ज़िन्दगी गुनाहों के अंधेरे में डूबी हुई थी, ह़त्ता कि वोह अपने आप को दुन्या का सब से बुरा इन्सान समझने लगे, अलबत्ता दा'वते इस्लामी से उन्हें बचपन ही से मह़ब्बत थी जिस बिना पर वोह किसी त़रह़ इस्लामी भाइयों से राबित़ा कर के तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। मदनी क़ाफ़िले में उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला, जिस की वज्ह से उन की मह़ब्बत **दा'वते इस्लामी** से मज़ीद बढ़ गई। एक रोज़ जब येह घर के ह़ालात की वज्ह से परेशान थे और इसी परेशानी के आ़लम में जब येह सोए तो ख़्वाब में देखा कि एक बुज़ुर्ग इन से फ़रमा रहे हैं कि "छोटे भाई को ले कर फ़ैज़ाने मदीना आ जाना, اِنْ شَآءَاللّٰه सब कुछ ठीक हो जाएगा।" इतना सुनना था कि इन की आंख खुल गई। फिर उन्हों ने घर वालों को येह ख़्वाब बताया और छोटे भाई को ले कर फ़ैज़ाने मदीना जाने की इजाज़त चाही, जिस पर उन के घर वाले राज़ी हो गए। फ़ैज़ाने मदीना पहुंच कर इन दोनों ने पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ए'तिकाफ़ की बरकत से उन्हों ने अपने तमाम बुरे कामों से तौबा की और सर पर इ़मामे शरीफ़ का ताज सजाने के साथ साथ हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीदों में भी शामिल हो गए।

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! जवानी में तौबा कर लेना और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में मश्ग़ूल हो जाना बहुत बड़ी सआ़दत है। **अल्लाह** के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ुशियों भरा फ़रमान है : "जवानी में तौबा करने वाला शख़्स **अल्लाह** पाक का मह़बूब (या'नी प्यारा) है।" (كتاب التوبة مع موسوعه امام ابن ابى دنيا ج ٣ ص ٤٢٢ حديث ١٨٤) अपनी जवानी इ़बादत में गुज़ार देने वाले को क़ियामत के दिन अ़र्श का साया नसीब होगा। (مسلم ص ٣٩٩ حديث ٢٣٨٠) नीज़ सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि जवानी की इ़बादत बुढ़ापे की इ़बादत से अफ़्ज़ल है कि इ़बादात का अस्ल वक़्त जवानी है।

https://www.dawateislamiindia.org/

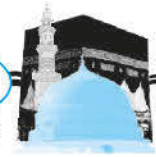

कर जवानी में इबादत काहिली अच्छी नहीं जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं

है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी येह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 167)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त हमें ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक अपना फ़रमां बरदार रखे और इबादत में इख़्लास व लज़्ज़त इनायत अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बोलने और चुप रहने की दो क़िस्में : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** اِمْلَاءُ الْخَيْرِ خَيْرٌ مِّنَ السُّكُوْتِ وَالسُّكُوْتُ خَيْرٌ مِّنْ اِمْلَاءِ الشَّرِّ या'नी अच्छी बात कहना ख़ामोशी से बेहतर है और ख़ामोश रहना बुरी बात कहने से बेहतर है। (شُعَبُ الْاِیمان ج ٤ ص ٢٥٦ حدیث ٤٩٩٣) ह़ज़रते अ़ली बिन उ़स्मान हिजवेरी ह़नफ़ी अल मा'रूफ़ **दाता गन्ज बख़्श** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **"कश्फ़ुल महजूब"** में फ़रमाते हैं : **कलाम** (या'नी बोलना) दो त़रह़ का होता है। **एक** कलामे ह़क़ (या'नी अच्छी गुफ़्तगू) और **दूसरा** कलामे बात़िल (या'नी ग़लत़ व बेकार गुफ़्तगू), इसी त़रह़ **ख़ामोशी** भी दो त़रह़ की होती है : (1) बा मक़्सद ख़ामोशी (मसलन फ़िक्रे आख़िरत या शरई अह़काम पर ग़ौरो ख़ौज़ वग़ैरा के लिये चुप रहना) (2) ग़फ़्लत भरी (या مَعَاذَاللہ गन्दे तसव्वुरात या दुन्या के बे जा ख़यालात से भरपूर) ख़ामोशी। हर शख़्स को सुकूत (या'नी ख़ामोशी) की ह़ालत में ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना चाहिये कि अगर इस का बोलना ह़क़ (या'नी अच्छा) है तो अब बोलना उस की ख़ामोशी से बेहतर है और अगर उस का बोलना बात़िल (या'नी ग़लत़ या फ़ुज़ूल) है तो ऐसे मौक़अ़ पर उस की ख़ामोशी उस के बोलने से बेहतर है। हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه गुफ़्तगू के ह़क़ या बात़िल होने के मुतअ़ल्लिक़ समझाने के लिये एक **वाक़िआ़** बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मरतबा बग़दाद शरीफ़ के एक

https://www.dawateislamiindia.org/

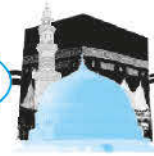

महल्ले से गुज़रते हुए एक शख़्स को सुना वोह कह रहा था : اَلسُّكُوْتُ خَيْرٌ مِّنَ الْكَلَامِ या'नी "ख़ामोशी बोलने से बेहतर है।" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसे फ़रमाया : "(चूंकि हर सूरत में ख़ामोशी अच्छी नहीं लिहाज़ा) तेरे (येह जुम्ले) बोलने से तेरा ख़ामोश रहना अच्छा है और मेरा बोलना ख़ामोश रहने से बेहतर है।" (ماخوذ از کشف المحجوب ص۴۰۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ज़बान की हिफ़ाज़त न करने वाले पर शैतान ग़लबा पा लेता है : **ज़ियादा** "बक बक" करने वालों पर शैतान ग़ालिब आ जाता है, क्यूं कि जब आदमी ज़ियादा बातूनी होता है तो ख़ताओं का इम्कान बढ़ जाता है। और हो सकता है कि शैतान उस से गुनाह करवाने में काम्याब हो जाए। अलबत्ता जो ख़ामोश रहने का आदी है वोह शैतान पर ग़लबा (या'नी बरतरी, जीत) पा लेता है। हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, एक आदमी ने मक्की मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक का तक़्वा लाज़िम पकड़ लो कि तमाम भलाइयों की अस्ल (या'नी जड़) है और जिहाद को लाज़िम पकड़ लो कि येह अहले इस्लाम की रहबानिय्यत (या'नी गोशा नशीनी) है और ज़िक्रुल्लाह व तिलावते क़ुरआने पाक की पाबन्दी करो कि येह तुम्हारे लिये ज़मीन में नूर और आस्मानों में तुम्हारे तज़्किरे का बाइस होगा। और कलिमए ख़ैर (या'नी अच्छी बात) के सिवा अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करो कि इस की बदौलत तुम शैतान पर ग़लबा पा लोगे। (معجم صغیر ج۲ ص۶۶)

शैतान का सब से बड़ा हथियार : **हज़रते** इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **"एह्याउल उलूम"** में फ़रमाते हैं : इन्सान को बहकाने में ज़बान शैतान का सब से बड़ा हथियार है। (احیاء العلوم ج۳ ص۱۳۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

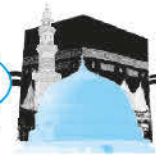

सिद्दीक़े अक्बर मुंह में पथ्थर रख लेते : मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा आशिक़े अक्बर, हज़रते **सिद्दीक़े** अक्बर رضی اللہ عنہ क़त्ई (या'नी यक़ीनी) जन्नती होने के बा वुजूद **ज़बान** के मुआमले में काफ़ी एहतियात फ़रमाया करते थे, "एहयाउल उ़लूम" में है : "**हज़रते** अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ अपने **मुबारक मुंह** में पथ्थर रख लिया करते थे ताकि बात करने का मौक़अ़ ही न रहे ।" (إحياءُ العُلوم ج٣ ص١٣٧)

40 बरस तक ख़ामोशी की मश्क़ (वाक़िआ़) : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप वाक़ेई ख़ामोशी की आदत बनाना चाहते हैं तो इस को सन्जीदा (या'नी सीरियस, SERIOUS) लेना होगा, और चुप रहने की ख़ूब मश्क़ (या'नी PRACTICE) करनी पड़ेगी, वरना मा'मूली सी कोशिश से ख़ामोशी की आदत बनना दुश्वार है । ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की तबाह कारियों से ख़ुद को डराते हुए ख़ामोशी की आदत बनाने की भरपूर कोशिश फ़रमाइये إنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيم काम्याबी आप के क़दम चूमेगी । आइये ! एक कोशिश करने वाले की इस्तिक़ामत का **वाक़िआ़** सुनते हैं, हज़रते अरत़ाह बिन मुन्ज़िर رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : एक साहिब **चालीस साल** तक ख़ामोश रहने की इस त़रह "मश्क़" (या'नी PRACTICE) करते रहे कि अपने मुंह में पथ्थर रख लेते, यहां तक कि (नमाज़ या अज़्कार या) खाने या पीने या सोने के इ़लावा वोह पथ्थर मुंह से न निकालते । (اَلصّمت مع موسوعه ابن اَبِی الدُّنیا ج ٧ ص ٢٠٦ قول نمبر٤٣٨)

गुफ़्त्गू लिख कर उस का जाएज़ा लेने वाले ताबेई बुज़ुर्ग : ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رحمۃ اللہ علیہ ने 20 साल तक दुन्यावी बात ज़बान से नहीं की, जब सुब्ह़ होती तो क़लमो दवात (या'नी INKPOT) और काग़ज़ ले लेते और दिन भर जो बोलते उसे लिख लेते और शाम को अपना **मुह़ासबा** (या'नी ख़ुद से पूछगछ) फ़रमाते । या'नी उस लिखे हुए के मुताबिक़ अपनी गुफ़्त्गू का **जाएज़ा** लेते । (एहयाउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 339, احیاء العلوم ج٣ ص١٣٧)

https://www.dawateislamiindia.org/

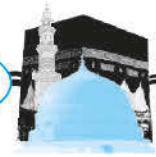

बातचीत के जाएज़े का त़रीक़ा : **अपनी** बातचीत का "जाएज़ा" लेने का त़रीक़ा येह है कि अपनी हर हर बात पर ग़ौर कर के अपने आप से पूछगछ करे, मसलन बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल ही दिल में ख़ुद से पूछे कि फ़ुलां बात तुम ने क्यूं की ? उस मक़ाम पर बोलने की क्या ज़रूरत थी ? फ़ुलां गुफ़्तगू इतने अल्फ़ाज़ में भी निमटाई जा सकती थी मगर उस में फ़ुलां फ़ुलां लफ़्ज़ ज़ाइद क्यूं बोले फ़ुलां से बात करते हुए समझ जाने के बा'द क्या ? जी ? क्या कहा ? वग़ैरा क्यूं कहा ? और सामने वाले को अपनी बात दोहराने की तक्लीफ़ क्यूं दी ? फ़ुलां से जो जुम्ला तुम ने कहा वोह दिल आज़ार त़न्ज़ था, तुम ने उस का नाह़क़ दिल दुखा दिया चलो अब तौबा भी करो और उस इस्लामी भाई से मुआ़फ़ी भी मांगो, फ़ुलां बैठक (या'नी गेदरिंग, GATHERING) में क्यूं गए जब कि मा'लूम है कि वहां फ़ुज़ूल बातें भी होती हैं और फ़ुलां फ़ुलां बात में तुम ने हां में हां क्यूं मिलाई थी ? वहां तुम्हें ग़ीबत भी सुननी पड़ गई थी बल्कि तुम ने ग़ीबत सुनने में दिलचस्पी भी ली थी चलो पक्की तौबा और ऐसी बैठकों (GATHERINGS) से दूर रहने का भी अ़ज़्म करो। इस त़रह़ समझदार आदमी अपनी गुफ़्तगू बल्कि रोज़मर्रा के तमाम मुआ़मलात का **जाएज़ा** ले सकता है। यूं गुनाह, बे एह़तियातियां, अपनी बा'ज़ कमज़ोरियां और ख़ामियां सामने आ सकतीं हैं और इस्लाह़ का सामान हो सकता है। **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में मुह़ासबे को **जाएज़ा** कहते हैं और **दा'वते इस्लामी** के "दीनी माह़ोल" में रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट आ'माल का जाएज़ा करने और इस दौरान **नेक आ'माल** का रिसाला पुर करने का ज़ेह़न दिया जाता है।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 305)

आ'माल का जाएज़ा : **तमाम** आ़शिक़ाने रसूल को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट अपने दिन भर के आ'माल का "जाएज़ा" लें और **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना

https://www.dawateislamiindia.org/

के रिसाले "**नेक आ'माल**" में दिये हुए ख़ाने पुर करें और हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के "शो'बए इस्लाहे आ'माल" के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाएं। اِنْ شَآءَاللّٰه हुस्ने अख़्लाक़ और तक़्वे का ढेरों ढेर ख़ज़ाना हाथ आएगा और इश्क़े रसूल के छलक्ते जाम पीने नसीब होंगे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह पाक से ज़बान की तेज़ी की शिकायत : **मुसल्मानों** के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने देखा कि मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه अपनी ज़बान मुबारक को हाथ से पकड़ कर खींच रहे हैं, पूछा कि ऐ नाइबे रसूल! आप येह क्या कर रहे हैं? आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया कि येह मुझे हलाकत (या'नी तबाही) की जगहों पर ले गई है, और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस्म में कोई ऐसा उ़ज़्व नहीं कि **अल्लाह** पाक से ज़बान की तेज़ी की शिकायत न करता हो।"

(एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 335, احیاء العلوم ج۳ ص۱۳۵)

हमें ज़बान से बाहर मत निकाल : **देखा** आप ने! मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه जैसे बख़्शे बख़्शाए सह़ाबी ज़बान की आफ़तों से बहुत डरते थे, यक़ीनन इस में हम लोगों के लिये काफ़ी नसीह़त है, क्यूं कि हम तो जी में जो आया वोह ज़बान से बोल पड़ते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : बहुत सी बातें ऐसी होती हैं जो बोलने वाले शख़्स से कहती हैं : "हमें ज़बान से बाहर न निकाल।"

(मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 145, منهاج العابدين ص۶۶)

ज़बान को क़ैद ही में रहना चाहिये : **अ़रबी** मक़ूला (या'नी कहावत) है : مَا شَیْءٌ اَحَقُّ بِطُوْلِ السِّجْنِ مِنَ اللِّسَانِ कोई भी शै ज़बान से बढ़ कर क़ैद में रहने की ह़क़दार नहीं।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 210, منهاج العابدين ص۹۶)

https://www.dawateislamiindia.org/

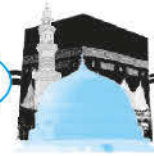

ज़बान की ह़िफ़ाज़त से इ़बादत पर इस्तिक़ामत मिलती है : **सात** आ़बिदों (या'नी इ़बादत गुज़ारों) में से एक आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) ने (**अल्लाह** पाक के प्यारे नबी) ह़ज़रते यूनुस (عَلَیْہِ السَّلَام) की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : जो लोग पूरी कोशिश से इ़बादत में मश्ग़ूल रहते हैं उन को इ़बादत पर जो इस्तिक़ामत (या'नी ठहराव) नसीब होती है वोह ज़बान की पूरी त़रह़ ह़िफ़ाज़त करने का नतीजा है। फिर उस आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) ने अ़र्ज़ की : आप के नज़्दीक कोई भी चीज़ ज़बान की ह़िफ़ाज़त से ज़ियादा पसन्दीदा नहीं होनी चाहिये क्यूं कि दिल को हर क़िस्म के वस्वसों से पाक रखने का ज़रीआ़ येही है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 210, منهاج العابدين ص۹۶تا۹۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़ुज़ूल बात पर ख़ुद को सज़ा (वाक़िआ़) : **ह़ज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन ज़ैग़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे माजिद ने बताया कि ह़ज़रते क़ैसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ हमारे यहां अ़स्र के बा'द तशरीफ़ लाए और मेरे वालिद साह़िब के बारे में पूछा : हम ने कहा : "वोह सो रहे हैं।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "क्या वोह अ़स्र के बा'द सो रहे हैं ? इस वक़्त ? क्या येह वक़्त सोने का है ?" फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ तशरीफ़ ले गए। हम ने एक शख़्स को उन के पीछे भेजा कि उन से कहे कि आप चलिये ! मैं उन को आप के लिये जगा दूंगा। वोह शख़्स मग़रिब के बा'द वापस आया तो हम ने उस से पूछा : क्या तुम ने उन्हें पैग़ाम दे दिया था ? कहा : वोह अपने आप में इतने मसरूफ़ थे कि मेरी बात पर तवज्जोह न दी, मैं ने उन्हें देखा, वोह क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो रहे थे और अपने आप को मलामत करते (या'नी डांटते) हुए कह रहे थे : "बन्दा जब चाहे सोए, तू ने येह क्यूं कहा कि येह कौन सा सोने का वक़्त है ! तुझे फ़ुज़ूल सुवाल नहीं करना चाहिये था,

https://www.dawateislamiindia.org/

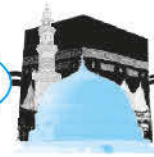

अब मैं **अल्लाह** पाक से अ़हद करता हूं और इसे कभी नहीं तोड़ूंगा कि मैं तुझे पूरा एक साल सोने नहीं दूंगा।" जब मैं ने येह बात सुनी तो उन्हें छोड़ कर वापस आ गया।

(**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 6, स. 269 ता 270)

سُبْحٰنَ اللہ ! एक त़रफ़ हमारे बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल है और अफ़्सोस ! दूसरी त़रफ़ हमारी बिगड़ी हुई ह़ालत कि बे जा ए'तिराज़ात, फ़ुज़ूल तन्क़ीदात और ग़ैर ज़रूरी सुवालात से फ़ुरसत नहीं पाते। काश ! हमारी ज़बानों पर लगाम लगने की कोई सूरत बन जाए।

सख़्त गरमी का रोज़ा बरदाश्त मगर..... : ह़ज़रते यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ (बत़ौरे आ़जिज़ी) फ़रमाते हैं : **मेरा** नफ़्स (इराक़ के शह्र) बसरे की शदीद गरमी में रोज़ा रखने की तक्लीफ़ (तो) बरदाश्त कर सकता है मगर फ़ुज़ूल बातों में से एक लफ़्ज़ (भी) छोड़ने की त़ाक़त नहीं रखता। (منہاج العابدین ص٦٤, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 141)

ज़बान ह़िफ़ाज़त की ज़ियादा ह़क़दार है : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! यक़ीनन शर्मगाह की गुनाहों से ह़िफ़ाज़त न करना भी सख़्त गुनाह व ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाला काम है और वाक़ेई अच्छा बोलने में अच्छाई और बुरा बोलने में बुराई है। ज़बान महशर में शायद बड़ों बड़ों को फंसा कर रख देगी। इस की ह़िफ़ाज़त की बहुत ज़रूरत है। ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मोमिन को चाहिये कि अपनी शर्मगाह से ज़ियादा ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे। (**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 3, स. 331, حلیۃ الاولیا ج٣ص٢٦٧ قول نمبر ٣٩٠٩)

रोज़ी में तंगी का एक सबब : ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब तुम अपने दिल में सख़्ती, जिस्म में कमज़ोरी और रिज़्क़ में तंगी देखो तो जान लो कि तुम ने ज़रूर कोई फ़ुज़ूल बात मुंह से निकाली है। (منہاج العابدین ص٦٥, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 142)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

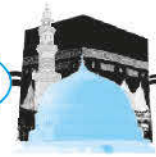

अल्लाह पाक तमाम बातें सुनता है : **हज़रते** सय्यिदुना बिश्र हाफ़ी رحمۃ اللہ علیہ निहायत कम गुफ़्तगू करते और अपने दोस्तों को फ़रमाते : "तुम गौर करो कि अपने आ'माल नामों में क्या लिखवा रहे हो, क्यूं कि वोह तुम्हारे रब्बे करीम के सामने पेश होंगे। तो जो शख़्स बुरी गुफ़्तगू करता है उस पर अफ़्सोस है, अगर अपने दोस्त को कुछ लिखवाते हुए कभी उस में बुरे अल्फ़ाज़ लिखवाओ तो येह उस के साथ तुम्हारी बे हयाई तसव्वुर होगी फिर **अल्लाह** पाक के साथ तुम्हारा क्या मुआमला है ?" (تنبیہ المغترین ص۱۹۰)

अगर फ़ुज़ूल बातें करने पर रक़म देनी पड़ती तो ? : **हज़रते** मालिक बिन दीनार رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : "**तुम्हारे** आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्ते अगर रोज़ाना तुम से उन सहीफ़ों (या'नी किताबों) की क़ीमत तलब करें जिन में वोह तुम्हारे आ'माल लिखते हैं तो (पैसे बचाने की ख़ातिर) तुम अपनी बहुत सी फ़ुज़ूल बातें छोड़ दो, लेकिन येह मा'लूम होने के बा वुजूद कि (तुम्हारी फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से भरपूर) उन सहीफ़ों (BOOKS) को तुम्हारे रब्बे पाक की बारगाहे आली में पेश होना है तो तुम अपने आप को (फ़ुज़ूल बातों से) क्यूं नहीं रोकते ?" (ابنِ عساکر ج٥٦ص٤١٨)

हर बात फ़िरिश्ते लिखते हैं : **पुर वक़ार** शख़्सिय्यात जब सामने होती हैं या कभी "अरबाबे कुरसी" या'नी हुक्कामे दुन्यादार के सामने जाना पड़ जाता है तो ज़बान ख़ूब संभल जाती है, मगर येह मा'लूम होने के बा वुजूद कि इ़ज़्ज़त वाले फ़िरिश्ते हर बात लिख रहे हैं फिर भी न जाने बे शर्मी और बे हयाई की बातें लोगों को क्यूंकर सूझती हैं ! ज़बान पर गाली वग़ैरा कैसे आ जाती है ! हज़रते इमाम हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि इन्सान पर तअ़ज्जुब है कि किरामन कातिबीन (या'नी इ़ज़्ज़त वाले, लिखने वाले फ़िरिश्ते) उस के पास हैं और इस की ज़बान उन का क़लम, और इस का थूक उन की सियाही है, फिर भी वोह बेहूदा कलाम (या'नी फ़ुज़ूल और गन्दी बातें) करता है। (تنبیہ المغترین ص۱۹۰)

इलाही ! बुरी गुफ़्तगू से बचाना मेरी यावह गोई की आ़दत मिटाना

यावह गोई के मा'ना : फ़ुज़ूल बातें करना।

https://www.dawateislamiindia.org/

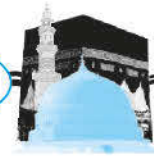

फ़ुज़ूल गुफ़्तगू के मुतअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ : **हज़रते** अबू उ़बैद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बयान करते हैं : हम ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सूक़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न सुनाऊं जिस ने मुझे फ़ाएदा पहुंचाया और हो सकता है वोह तुम्हें भी फ़ाएदा पहुंचाए ? एक मरतबा ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबू रबाह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ भतीजे ! तुम से पहले गुज़रे हुए लोग फ़ुज़ूल गुफ़्तगू ना पसन्द करते थे, वोह क़ुरआने करीम की तिलावत करने, नेकी का हुक्म देने, बुराई से मन्अ़ करने और ज़रूरी बातचीत के इ़लावा तमाम क़िस्म की गुफ़्तगू को "फ़ुज़ूल बातों" में शुमार करते थे। क्या तुम इन फ़रामीने इलाही का इन्कार करते हो ? (जैसा कि इर्शाद होता है :)

وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿۱۰﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۳۰، الانفطار: ۱۰، ۱۱)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक तुम पर ज़रूर कुछ निगहबान मुक़र्रर हैं मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले।

(एक और जगह इर्शाद होता है :)

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿۱۷﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿۱۸﴾ (پ۲۶، ق: ۱۷، ۱۸)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : एक दाईं जानिब और दूसरा बाईं जानिब बैठा हुवा है। वोह ज़बान से कोई बात नहीं निकालता मगर येह कि एक मुह़ाफ़िज़ फ़रिश्ता इस के पास तय्यार बैठा होता है।

क्या तुम में से किसी को शर्म नहीं आएगी कि अगर उस के दिन भर का नामए आ'माल उस के सामने खोल दिया जाए तो अक्सर उस में वोह चीज़ें देखे जिस का तअ़ल्लुक़ न दीन से हो न दुन्या से।

(**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 3, स. 440)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

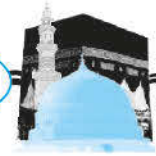

सात मदनी फूलों का "फ़ारूक़ी गुलदस्ता" : **मुसल्मानों** के दूसरे ख़लीफ़ा, हज़रते उ़मर **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : ﴿1﴾ फ़ुज़ूल बोलने से बचने वाले को हिक्मतो दानाई अ़ता की जाती है ﴿2﴾ फ़ुज़ूल निगाही या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखने या ख़्वाह म ख़्वाह मुख़्तलिफ़ चीज़ों या त़रह़ त़रह़ के मनाज़िर देखने से बचने वाले को ख़ुशूए़ क़ल्ब (या'नी रिक़्क़तो सोज़) दिया जाता है ﴿3﴾ फ़ुज़ूल त़आ़म (या'नी बे ज़रूरत खाना या सिर्फ़ लज़्ज़त के लिये त़रह़ त़रह़ की चीज़ें खाना) छोड़ने वाले को इबादत में लज़्ज़त दी जाती है ﴿4﴾ फ़ुज़ूल हंसने से बचने वाले को रो'बो दबदबा इ़नायत होता है ﴿5﴾ मज़ाक़ मस्ख़री से बचने वाले को नूरे ईमान नसीब होता है ﴿6﴾ दुन्या की मह़ब्बत से बचने वाले को आख़िरत की मह़ब्बत दी जाती है ﴿7﴾ दूसरों के ऐ़ब ढूंडने से बचने वाले को अपने ऐ़बों की इस्लाह़ की तौफ़ीक़ मिलती है।

(المنبہات ص ۸۹ تا ۹۰ ما خوذًا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़ुज़ूल बातों का ह़िसाब बहुत लम्बा होगा : **बयान** किया गया है : اِیَّاکَ وَالْفُضُوْلَ فَاِنَّ حِسَابَہٗ یَطُوْلُ, या'नी फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बच ! क्यूं कि इस का ह़िसाब लम्बा होगा।

(منہاج العابدین ص٦٧, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 147)

न बोल, न मुसीबत में पड़ : **एक** और बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

اِحْفَظْ لِسَانَکَ لَاتَقُوْلُ فَتُبْتَلٰی اِنَّ الْبَلَاءَ مُوَکَّلٌ بِالْمَنْطِقِ

तरजमा : अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त कर, न बोल न मुसीबत में पड़, बेशक मुसीबतें गुफ़्तगू के साथ जुड़ी हुई होती हैं।

(منہاج العابدین ص٦٦)

बोलने वाले की अ़क़्ल का अन्दाज़ा हो जाता है : **ह़ज़रते** अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

(۱) اَلَا اِحْفَظْ لِسَانَکَ اِنَّ اللِّسَانَ سَرِیْعٌ اِلَی الْمَرْءِ فِیْ قَتْلِہٖ

(۲) وَ اِنَّ اللِّسَانَ دَلِیْلُ الْفُؤَادِ یَدُلُّ الرِّجَالَ عَلٰی عَقْلِہٖ

https://www.dawateislamiindia.org/

(1) अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त कर क्यूं कि येह मा'मूली सा उ़ज़्व (PART) बहुत जल्द इन्सान को हलाकत में डाल देता है।

(2) बेशक ज़बान इन्सान के दिल पर दलील है जो गुफ़्तगू करने वालों की अ़क़्ल का अन्दाज़ा बताती है।

(منهاج العابدين ص١٦, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 144)

बाज़ारी गुफ़्तगू करने वाले को नसीह़त : **शैख़** अफ़्ज़लुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स को बाज़ारी गुफ़्तगू करते सुना तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ भाई ! **अल्लाह** पाक ने बन्दे के कान व ज़बान बनाए ताकि अच्छा सुने और अच्छा बोले : क़ुरआने करीम, ह़दीसे पाक, अज़ान और इमाम से तक्बीरे तह़रीमा और जो तुझे नसीह़त करे उस की नसीह़त सुने, और ज़बान व कान को हंसी मज़ाक़, ग़ीबत, बोहतान, झूट, चुग़ली और बेकार बातें करने सुनने के लिये पैदा नहीं फ़रमाया। ऐ भाई ! अपने कान व ज़बान को बे मक़्सद इस्ति'माल करने से परहेज़ कर, येह सरासर नुक़्सान है और अगर ज़बान की तेज़ी की बिना पर कोई (गुनाह भरी) बात निकल जाए तो फ़ौरन तौबा व इस्तिग़्फ़ार करो।

(المنن الکبریٰ ص٥٤٧)

दा'वते इस्लामी ने नमाज़ी बना दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों के लिये भी मुफ़ीद है। चुनान्चे एक इस्लामी बहन कई आ़म लड़कियों की त़रह़ ना जाइज़ फ़ेशन किया करतीं और नमाज़ों से भी दूर रहा करती थीं। फिर इन का अपने मामूं के ज़ेरे इन्तिज़ाम दीनी मद्रसे में पढ़ने के लिये जाना हुवा, जहां एक दिन **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता कुछ इस्लामी बहनें **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत देने के लिये आईं जिस के नतीजे में येह भी अपनी सहेली के इसरार पर इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में शरीक हो गईं। वहां पर सुन्नतों भरा बयान सुना, इज्तिमाई रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने इन पर असर किया और इन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली। **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से वाबस्ता होने के बा'द एक दिन वोह आया कि इन्हों ने "इस्लामी बहनों का 12 दिन का मदनी काम कोर्स" (जिसे अब दीनी काम कोर्स कहते हैं) भी किया। इन्हें **दा'वते इस्लामी** की ऐसी

https://www.dawateislamiindia.org/

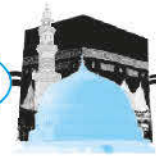

बरकतें नसीब हुईं कि फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करने के साथ साथ नफ़्ल नमाज़ें भी अदा करने लगीं। इन का जज़्बा है कि अपने गाउं में ख़ूब दीनी काम करूंगी और जब तक सांसें बाक़ी हैं आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **''दा'वते इस्लामी''** से वाबस्ता रहेंगी।

पिला कर मए इ़श्क़ देगा बना येह तुम्हें आ़शिक़े मुस्त़फ़ा मदनी माह़ोल
ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

ज़बान गोया ह़म्ले के लिये तय्यार शेर : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अबी मुती़अ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

(۱) لِسَانُ الْمَرْءِ لَيْثٌ فِیْ كَمِيْنٍ اِذَا خَلَّى اِلَيْهِ لَهُ اِغَارَهْ

(۲) فَصُنْهُ عَنِ الْخَنَا بِلِجَامِ صَمْتٍ يَكُنْ لَكَ مِنْ بَلِيَّاتٍ سِتَارَهْ

(1) ज़बान (तबाह करने में) ह़म्ले के लिये तय्यार छुपे हुए शेर की त़रह़ है जो मौक़अ़ मिलते ही तबाही मचा देती है (2) इस लिये इसे (या'नी ज़बान को) ख़ामोशी की लगाम दे कर फ़ुज़ूलिय्यात से रोक कर रख, इस त़रह़ तू बहुत सी आफ़तों से बच जाएगा। (منهاج العابدين ص١٦, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 145)

फाड़ खाने वाला दरिन्दा : **एक** कुरैशी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी आ़लिम साह़िब से पूछा गया कि आप **ख़ामोश** क्यूं रहते हैं ? फ़रमाया : मैं ने अपनी ज़बान को फाड़ खाने वाला दरिन्दा पाया है, मुझे डर है कि अगर मैं इसे खुला छोड़ दूंगा तो येह मुझे काट खाएगा।

(एक चुप सो सुख (ख़ामोशी के फ़ज़ाइल), स. 21)

माल की ह़िफ़ाज़त आसान है मगर ज़बान..... : **दौलत** को इन्सान तिजोरी में बन्द कर के महफ़ूज़ रख सकता है। ज़ियादा ख़ज़ाना हो तो मुसल्लह़ पहरेदार बिठा कर भी ह़िफ़ाज़त की जा सकती है, लेकिन कमाल तो येह है कि कोई अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने में काम्याब हो जाए। चुनान्चे ह़ज़रते मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने **ह़ज़रते** मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

https://www.dawateislamiindia.org/

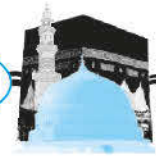

से फ़रमाया : "इन्सान के लिये ज़बान की हिफ़ाज़त माल की हीफ़ाज़त से ज़ियादा मुश्किल है।"

(إتحاف السّادة ج٩ ص١٤٤)

अपने माल की हिफ़ाज़त के मुआमले में उ़मूमन हर एक होशियार होता है, ह़ालां कि माल ज़ाएअ़ हो भी गया तो सिर्फ़ दुन्या का नुक़्सान है। मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! अब ज़बान की हिफ़ाज़त की सोच निहायत कम रह गई है, यक़ीनन **ज़बान की हिफ़ाज़त** न करने के सबब दुन्या के नुक़्सान के साथ साथ आख़िरत की बरबादी का भी पूरा पूरा इम्कान (POSSIBILITY) है।

बक बक की येह आ़दत न सरे ह़श्र फंसा दे

अल्लाह ! ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

आ़शिक़ों की 6 निशानियां

कहते हैं :

عاشِقاں راشش نِشاں سَت اے پِسرا! آہِ سَرد و رنگ زَرد و چشمِ تر

گر تُرا پُرسَند سِہ دیگر کُدام؟ کم خُورَد، کم گُفتَن و خُفتَن حرام

तरजमा : "आ़शिक़" की येह छे निशानियां हैं : (1) सर्द आहें (2) चेहरे का रंग पीला होना (3) आंखें अश्कबार (4) कम खाना (5) **कम बोलना** और (6) कम सोना।

जहालत की 6 निशानियां : बात बात पर ग़ुस्से हो जाना, बक बक करते रहना, फ़ुज़ूल ख़र्ची करना, सब को राज़ की बातें बताते फिरना, हर किसी पर ए'तिमाद कर बैठना, बुरी सोह़बत से न बचना और अच्छी सोह़बत इख़्तियार न करना, येह सब जहालत की निशानियां हैं। एक अ़क़्लमन्द शख़्स का कहना है कि छे बातें ऐसी हैं जिन से जाहिल पहचाना जाता है : (1) ग़ुस्से के वक़्त। या'नी हर ख़िलाफ़े मिज़ाज बात पर ग़ुस्से में आ जाना ख़्वाह वोह किसी इन्सान की त़रफ़

https://www.dawateislamiindia.org/

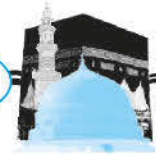

से पेश आए या किसी जानवर वग़ैरा की वज्ह से (2) बेकार गुफ़्तगू। लिहाज़ा अ़क़्लमन्द को चाहिये कि बे फ़ाएदा गुफ़्तगू न करे, बल्कि इसे मुफ़ीद (या'नी फ़ाएदे वाली) बात ही करनी चाहिये, ख़्वाह दुन्या के फ़ाएदे की हो या आख़िरत के फ़ाएदे की (3) फ़ुज़ूल ख़र्ची करना। या'नी येह भी जहालत की निशानी है कि माल ऐसी जगह लगाए जहां पर कोई अज्र या फ़ाएदा ह़ासिल न हो (4) हर किसी के पास राज़ की बात कहता फिरे (5) हर किसी पर भरोसा कर बैठे (6) दोस्त व दुश्मन में फ़र्क़ न कर पाए, या'नी मुनासिब तो येह है कि आदमी अपने दोस्त (या'नी नेक लोगों) को पहचान कर उन जैसे आ'माल करे, और उन के नक़्शे क़दम पर चले और दुश्मन को (या'नी बुरे लोगों को) पहचान कर उन से बचने की कोशिश करे और यक़ीनन इन्सान का पहला दुश्मन तो शैत़ान है, लिहाज़ा किसी बात में भी शैत़ान का कहना न माने (और हर त़रह़ के गुनाह से बचे)।

(تنبیه الغافلین ص۱۱۰ ملخّصًا)

फ़ालतू बातों के चार लरज़ा ख़ैज़ नुक़्सानात : ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इन चार वुजूहात (REASONS) से फ़ुज़ूल बातों की मज़म्मत (या'नी बुराई बयान) फ़रमाई है : ﴾1﴿ फ़ुज़ूल बातें किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले इ़ज़्ज़त वाले फ़िरिश्तों) को लिखनी पड़ती हैं, लिहाज़ा आदमी को चाहिये कि इन से शर्म करे और इन्हें **फ़ुज़ूल बातें** लिखने की ज़ह़मत (या'नी तक्लीफ़) न दे। **अल्लाह** पाक पारह 26 **सूरए** قٓ, आयत नम्बर 18 में इर्शाद फ़रमाता है :

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿۱۸﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह ज़बान से कोई बात नहीं निकालता मगर येह कि एक मुह़ाफ़िज़ फ़रिश्ता उस के पास तय्यार बैठा होता है।

﴾2﴿ येह बात अच्छी नहीं कि **फ़ुज़ूल बातों** से भरपूर आ'माल नामा **अल्लाह** पाक की बारगाह में पेश हो ﴾3﴿ **अल्लाह** पाक के दरबार में तमाम मख़्लूक़ के सामने बन्दे को हुक्म होगा कि अपना आ'माल नामा पढ़ कर सुनाओ! अब क़ियामत की ख़ौफ़नाक सख़्तियां उस के सामने होंगी, इन्सान

https://www.dawateislamiindia.org/

बरहना (या'नी बे लिबास) होगा, सख़्त प्यासा होगा, भूक से कमर टूट रही होगी, जन्नत में जाने से रोक दिया गया होगा और हर क़िस्म की राहत उस पर बन्द कर दी गई होगी, ग़ौर तो कीजिये ! ऐसे तक्लीफ़ देह हालात में **फ़ुज़ूल बातों से भरपूर आ'माल नामा** पढ़ कर सुनाना किस क़दर परेशान कुन होगा ! (हिसाब लगाइये अगर रोज़ाना सिर्फ़ 15 मिनट भी फ़ुज़ूल बातें की हैं और अगर हर माह के 30 दिन फ़र्ज़ कर लें तो एक महीने के साढ़े सात घन्टे हुए और एक साल के 90 घन्टे, बिलफ़र्ज़ किसी ने पचास साल तक रोज़ाना औसतन (या'नी AVERAGE) 15 मिनट फ़ुज़ूल गुफ़्तगू की तो 187 दिन 12 घन्टे हुए या'नी **छे माह से ज़ाइद,** तो ग़ौर फ़रमाइये ! **क़ियामत** का होलनाक दिन जिस में सूरज सिर्फ़ एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा या'नी सख़्त तरीन गरमी होगी, ऐसी होशरुबा (या'नी होश उड़ा देने वाली) गरमी में मुसल्सल बिला वक़्फ़ा (CONTINUOUSLY) छे माह तक कौन "आ'माल नामा" पढ़ कर सुना सकेगा ! येह तो 50 बरस की उ़म्र होने की सूरत में सिर्फ़ यौमिय्या (या'नी DAILY) पन्दरह मिनट की फ़ुज़ूल बोलने का हिसाब है। हमारे तो बसा अवक़ात कई कई घन्टे दोस्तों के साथ "फ़ुज़ूल गपशप" में गुज़र जाते हैं, गुनाहों भरी बातें और दीगर बुराइयां इस के इलावा) ﴾4﴿ बरोज़े क़ियामत बन्दे को फ़ुज़ूल बातों पर मलामत (या'नी डांट डपट) की जाएगी और उस को शरमिन्दा किया जाएगा, बन्दे के पास इस का कोई जवाब न होगा और वोह **अल्लाह** पाक के सामने शर्मो नदामत से पानी पानी हो जाएगा। (مِنهاجُ العابِدین ص٦٧)

हर लफ़्ज़ का किस त़रह़ हिसाब आह ! मैं दूंगा
अल्लाह ! ज़बां का हो अ़त़ा कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ामोशी सीखो : **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है : ख़ामोशी सीखो फिर हिल्म (या'नी नरमी व बरदाश्त) सीखो फिर इ़ल्म सीखो फिर उस पर अ़मल सीखो फिर इ़ल्म (सिखाओ और) फैलाओ। (شعب الایمان ج٢ ص٢٨٨ قول نمبر ١٧٩١)

https://www.dawateislamiindia.org/

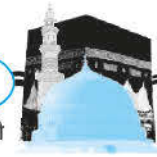

इबादत की शुरूआ़त ख़ामोशी से : **ह़ज़रते** इमाम सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "इबादत का अव्वल (या'नी शुरूआ़त) ख़ामोशी है, फिर इ़ल्म ह़ासिल करना, इस के बा'द उसे याद करना, फिर उस पर अ़मल करना और उसे फैलाना।" (تاریخ بغداد ج٦ ص٦)

ख़ामोशी इबादत की चाबी है : **ह़ज़रते** इमाम सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं, कहते हैं : "ज़ियादा ख़ामोशी इबादत की चाबी है।"। (اَلصّمت مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج ٧ ص ٢٥٥ قول نمبر ٤٣٦)

पांच बेहतरीन नसीह़तें : **ताबेई** बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि (सह़ाबी इब्ने सह़ाबी) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا को मैं ने येह फ़रमाते सुना कि पांच चीज़ें मुझे सुवारी के लिये तय्यार बेहतरीन सियाह (या'नी BLACK) घोड़ों से ज़ियादा प्यारी हैं :

﴿1﴾ बे फ़ाएदा गुफ़्तगू मत करो क्यूं कि येह फ़ुज़ूल है और मुझे तुम्हारे गुनाह (भरी बातों) में जा पड़ने का ख़ौफ़ है और फ़ाएदे मन्द गुफ़्तगू भी बे मौक़अ़ न करो क्यूं कि कई फ़ाएदे मन्द गुफ़्तगू करने वाले भी बे मौक़अ़ फ़ाएदे वाली बातें कर के मशक़्क़त (या'नी तक्लीफ़) में पड़ जाते हैं।

﴿2﴾ किसी ह़लीम व बुर्दबार (या'नी क़ुव्वते बरदाश्त रखने वाले आदमी से) और (किसी) बे अ़क़्ल व बे वुक़ूफ़ शख़्स से बह़स मत करो क्यूं कि बुर्दबार (क़ुव्वते बरदाश्त रखने वाला नाराज़ हो कर हो सकता है) तुम से दिल में बुग़्ज़ रख ले और बे वुक़ूफ़ तुम को (उलटी सीधी बातें कर के) तुम्हें अज़िय्यत (या'नी तक्लीफ़) पहुंचाएगा।

﴿3﴾ अपने भाई का ज़िक्र उस की पीठ पीछे (भी) उसी त़रह़ करो जिस त़रह़ का ज़िक्र तुम उस की त़रफ़ से अपने लिये पसन्द करते हो और उन बातों में उस को मुआ़फ़ कर दो जिन के बारे में तुम चाहते हो कि वोह तुम्हें मुआ़फ़ कर दे।

﴿4﴾ अपने भाई के साथ ऐसा ही सुलूक करो जैसा कि तुम चाहते हो कि वोह तुम्हारे साथ करे।

﴿5﴾ उस शख़्स की त़रह़ अ़मल करो जिसे यक़ीन हो कि नेकी पर उसे (अच्छा बदला) दिया जाएगा

https://www.dawateislamiindia.org/

और गुनाह पर उस की पकड़ होगी। (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 344)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा : ﴿1﴾ مَنْ صَمَتَ نَجَا या'नी जो चुप रहा उस ने नजात पाई। (ترمذی ج٤ص٢٢٥ حدیث ٢٥٠٩) **शर्ह़े ह़दीस :** या'नी ख़ामोशी नजात का सबब है मगर भलाई की बात करना, अच्छाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना और ज़िक्रो अज़्कार और तिलावते क़ुरआन पर हमेशगी करना, ख़ामोश रहने से बेहतर है। (الاستذکار ج٧ ص٣٧٢) ह़ज़रते अ़ल्लामा मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शर्ह़ के मुत़ाबिक़ ह़दीसे पाक के येह मा'ना बनते हैं : (مَنْ صَمَتَ) عَنِ النُّطْقِ بِالشَّرِّ (نَجَا) या'नी "जो ख़ामोश रहा (बुरी बात कहने से) उस ने नजात पाई।" (التیسیر ج٢ ص ٤٢٨) ﴿2﴾ اَلصَّمْتُ سَيِّدُ الْاَخْلَاق या'नी ख़ामोशी अख़्लाक़ की सरदार है। (اَلْفِردَوس ج ٢ص٤١٧ حدیث ٣٨٥٠) ﴿3﴾ اَلصَّمْتُ اَرْفَعُ الْعِبَادَةِ या'नी ख़ामोशी आ'ला दरजे की इबादत है। (اَلْفِردَوس ج ٢ ص ٤١٧ حدیث ٣٨٤٩) **शर्ह़े ह़दीस :** या'नी ख़ामोशी इबादात की बेहतरीन अक़्साम (KINDS) में से है, क्यूं कि अक्सर ख़त़ाएं ज़बान से जारी होती हैं। ﴿4﴾ (سراج منیر شرح جامع صغیر ج ٣ ص ٢٧٩) اَلصَّمْتُ زَيْنٌ لِّلْعَالِمِ، وَسِتْرٌ لِّلْجَاهِلِ या'नी ख़ामोशी आ़लिम के लिये ज़ीनत और जाहिल के लिये पर्दा है। (جامع صغیر ص ٣١٨ حدیث ٥١٥٩)

साठ साल की इबादत से बेहतर : **सरकारे** मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "ख़ामोशी पर क़ाइम रहना साठ (60) साल की इबादत से बेहतर है।" (شعب الإیمان ج٤ص٢٤٥ حدیث٤٩٥٣) **शर्ह़े ह़दीस :** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के मा'ना यूं बयान फ़रमाते हैं : या'नी अगर कोई शख़्स **साठ (60) साल इबादत** करे मगर ज़ियादा बातें भी करे, अच्छी बुरी बात में फ़र्क़ न करे इस से येह बेहतर है कि थोड़ी देर ख़ामोश रहे, क्यूं कि ख़ामोशी में (आख़िरत की) फ़िक्र भी हुई, इस्लाहे नफ़्स भी, मआ़रिफ़ो ह़क़ाइक़ में इस्तिग़राक़ (या'नी यादे इलाही में डूब जाना) भी, ज़िक्रे ख़फ़ी (या'नी दिल के ज़िक्र) के समुन्दर में ग़ोता लगाना भी, मुराक़बा (या'नी सब चीज़ों को छोड़ कर **अल्लाह** पाक के ख़याल में डूब जाना) भी। (मिरआत, जि. 6, स. 361)

https://www.dawateislamiindia.org/

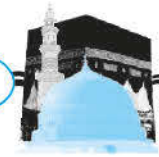

भलाई की बात करो या चुप रहो : काश ! बुख़ारी शरीफ़ की येह ह़दीसे पाक हमारे ज़ेह्‌नो दिमाग़ में अच्छी त़रह़ जम जाए, जिस में येह भी है : مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا اَوْ لِيَصْمُتْ "जो **अल्लाह** व क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे।" (بُخاری ج ٤ ص١٠٥ حدیث ٦٠١٨)

आक़ा त़वील ख़ामोशी वाले थे : كَانَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ عليه واٰلهٖ وسلّم طَوِيْلَ الصَّمْت या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم त़वील ख़ामोशी वाले थे। (شرحُ السُّنّة ج٧ ص٤٠ حدیث ٣٥٨٩) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के मा'ना बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ख़ामोशी से मुराद है दुन्यावी कलाम (या'नी दुन्यवी बातों) से ख़ामोशी, वरना हुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़बान शरीफ़ **अल्लाह** पाक के ज़िक्र में तर रहती थी, लोगों से बिला ज़रूरत कलाम (या'नी गुफ़्त्गू) नहीं फ़रमाते थे। येह ज़िक्र है जाइज़ कलाम (या'नी जाइज़ बातचीत) का, ना जाइज़ कलाम तो उम्र भर ज़बान शरीफ़ पर आया ही नहीं। झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा सारी उ़म्र शरीफ़ में एक बार भी ज़बाने मुबारक पर न आए। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सरापा ह़क़ हैं फिर आप तक बात़िल की रसाई (या'नी पहुंच) कैसे हो। (मिरआत, जि. 8, स. 81)

अफ़्सोस ! तिलावत सुन कर बहुत से लोग उठ गए : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन अबू जा'द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रिवायत करते हैं कि लोगों को पता चला कि सह़ाबिये नबी ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه (इराक़ के शहर) मदाइन की एक मस्जिद में हैं तो वोह उन के पास ह़ाज़िर होने लगे, यहां तक कि एक हज़ार के लगभग अफ़राद वहां जम्अ़ हो गए। आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने खड़े हो कर फ़रमाया : सब लोग बैठ जाएं, जब लोग बैठ गए तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने सूरए यूसुफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, आहिस्ता आहिस्ता लोग वहां से निकलने लगे, यहां तक कि 100 के

https://www.dawateislamiindia.org/

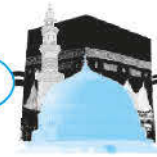

क़रीब अफ़राद बाक़ी रह गए, आप ने जलाल में आ कर फ़रमाया : "तुम ने मन घड़त और फ़ुज़ूल बातें सुनना चाहीं, लेकिन मैं ने तुम्हें **अल्लाह** पाक का कलाम सुनाया तो उठ कर चले गए।"

(حلیۃ الاولیاء ج ۱ ص ۲۶۱ قول نمبر ۶۴۳, **अल्लाह** वालों की बातें, जि. 1, स. 377)

तिलावत सुनने का शौक़ : ऐ आशिक़ाने रसूल ! तिलावते क़ुरआन करना और सुनना यक़ीनन येह बड़े सवाब का काम है मगर अफ़्सोस ! अब इस से लोगों में काफ़ी दूरी पाई जा रही है, कोई क़ारी साहिब तिलावत करें तो सुनने को जी ही नहीं करता। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के शौक़े तिलावत के बारे में "एह्याउल उ़लूम (उर्दू)" पहली जिल्द सफ़्हा 845 पर है : मरवी (या'नी बयान किया गया) है कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जब इकठ्ठे होते तो किसी एक से कहते कि क़ुरआने करीम की कोई सूरत सुनाओ।

(احیاء العلوم ج ۱ ص ۳۷۲)

एक आयत सुनने की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ुरआने पाक की कोई आयत सुनता है, क़ियामत के दिन वोह उस के लिये नूर होगी।

(مصنف عبد الرزاق ج ۳ ص ۲۲۹ قول نمبر ۶۰۳۲)

देखा आप ने ! क़ुरआने करीम की तिलावत सुनने का कितना अ़ज़ीमुश्शान अज्र है और तिलावत करने वाला जो इस का सबब है वोह भी अज्रो सवाब में उस का शरीक है बशर्ते कि रियाकारी और बनावट की निय्यत न हो।

तिलावत में 20 बरस मशक़्क़त उठाई : दिल लगे या न लगे इ़बादतो तिलावत जारी रखना चाहिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم कभी न कभी दिल लग ही जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : (दिल न लगने के बा वुजूद) मैं ने 20 बरस क़ुरआने पाक से (तिलावत करने की) मशक़्क़त उठाई और फिर 20 बरस इस की ह़लावत (या'नी लज़्ज़त) पाई।

(एह्याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 1, स. 871)

https://www.dawateislamiindia.org/

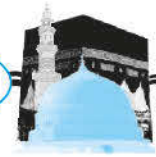

हर रोज़ मैं कुरआन पढ़ूं काश ! ख़ुदाया

अल्लाह ! तिलावत में मेरे दिल को लगा दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत दरकार हो तो ख़ैर के सिवा कुछ ज़बान से मत निकालो : **ज़बान** पर जब ख़ैर ही ख़ैर जारी होगा, ज़िक्रो दुरूद का विर्द होगा। फ़ुज़ूल बातों की आ़दत न होगी तो झूट, ग़ीबत, चुग़ली व ऐबजूई वग़ैरा गुनाहों से भी जान छूटी रहेगी और यूं اِنْ شَآءَاللّٰه जन्नत में जाने के अस्बाब हो जाएंगे। चुनान्चे सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमते बा बरकत में लोगों ने अ़र्ज़ किया, कोई ऐसा अ़मल बताइये कि जिस से जन्नत मिले। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "कभी बोलो मत।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया येह तो नहीं हो सकता। फ़रमाया : "अच्छी बात के सिवा ज़बान से कुछ मत निकालो।" (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 336, احیاء العلوم ج۳ص۱۳۶)

अक्सर मेरे होंटों पे रहे ज़िक्रे मदीना

अल्लाह ज़बां का हो अ़ता कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली : **ऐ जन्नत के त़लब गारो !** इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि ज़बान को क़ाबू में रखना और ग़ैर ज़रूरी बातों से बचना भी जन्नत में ले जाने वाले काम हैं, ज़बान और दीगर आ'ज़ाए बदन को गुनाहों से बचा कर जन्नत में ले जाने वाले आ'माल बजा लाने का जज़्बा पाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में रच बस जाइये, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم फ़ाएदे में रहेंगे। आख़िरत की भलाइयां पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये एक "मदनी बहार" आप के गोश

https://www.dawateislamiindia.org/

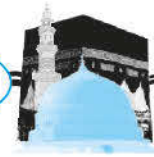

गुज़ार की जाती है। चुनान्चे बहुत पहले कि बात है की एक ख़ातून ऐसे दफ़्तर में काम करती थी जहां मर्द व औ़रत सभी मुलाज़मत करते थे। बे पर्दगी, बद निगाही के साथ साथ ऐसी कई बुराइयां वहां आ़म थीं जिन्हें बद क़िस्मती से आज के मुआ़शरे में बुराई ही नहीं समझा जाता। इसी बुरे माहो़ल का नतीजा था कि येह फ़िल्मों, ड्रामों और गाने बाजों और नित नए फ़ेशन और पार्कों में बे पर्दा घूमने की शौक़ीन थीं। वालिदैन की ना फ़रमानी बल्कि उन से बद कलामी और बड़ों से बद तमीज़ी करना इन का मा'मूल था। एक दिन एक बुरक़अ़ वाली बा पर्दा इस्लामी बहन इन के घर आईं। जब उन्हों ने इन के सामने अपना निक़ाब हटाया तो येह हैरत ज़दा हो गईं कि येह तो वोही हैं जो मेरे साथ दफ़्तर में काम किया करती थीं और इन्ही की त़रह़ बे पर्दा और फ़ेशन ज़दा भी थीं। कुछ अ़र्से क़ब्ल मुलाज़मत छोड़ चुकी थीं। अब वोह **दा'वते इस्लामी** की मुबल्लिग़ा थीं, मुख़्तसर सी मुद्दत में इतनी बड़ी तब्दीली देख कर येह मुतअस्सिर हुए बिग़ैर न रह सकीं। इस्लामी बहन ने नर्म लहजे में इन्हें नेकी की दा'वत पेश की और **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की तरग़ीब दिलाई, इन्हों ने इज्तिमाअ़ में शरीक होने की निय्यत कर ली। उस इस्लामी बहन की ज़िन्दगी में आने वाली तब्दीली पहले ही इन के दिल पर दस्तक दे चुकी थी, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और वहां होने वाले फ़िक्रे आख़िरत से मा'मूर बयान ने इन्हें ख़्वाबे ग़फ़्लत से झन्झोड़ कर जगा दिया, रही सही कसर रिक़्क़त अंगेज़ इज्तिमाई दुआ़ ने पूरी कर दी, येह अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सकीं और फूट फूट कर रोने लगीं। इन्हें अपने गुनाहों पर नदामत होने लगी, **अल्लाह** पाक की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा कर ली। येह रब्बे करीम का शुक्र अदा करती हैं कि उस ने इन को गुनाहों की दलदल से निकलने के लिये **दा'वते इस्लामी** का सहारा अ़त़ा कर दिया।

https://www.dawateislamiindia.org/

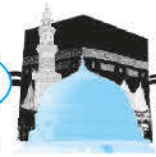

सलामत रहे या ख़ुदा मदनी माहोल बचे बद नज़र से सदा मदनी माहोल
दुआ है येह तुझ से दिल ऐसा लगा दे न छूटे कभी भी ख़ुदा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ामोशी ईमान की सलामती का ज़रीआ़ है : **जिस** की ज़बान कैंची की त़रह़ हर किसी की बात काटती चली जाती होगी वोह दूसरे की बात अच्छी त़रह़ समझने से मह़रूम रहेगा, बल्कि बातूनी शख़्स के लिये येह भी ख़त़रा रहता है कि बक बक करते हुए ज़बान से مَعَاذَاللہ **कुफ़्रिय्यात** भी निकल जाएं। चुनान्चे ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "एह़याउल उ़लूम" में लिखते हैं कि बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है : "ख़ामोश रहने वाले शख़्स में दो ख़ूबियां जम्अ़ हो जाती हैं ﴿1﴾ उस का दीन सलामत रहता है और ﴿2﴾ दूसरे की बात अच्छी त़रह़ समझ लेता है।" (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص۱۳۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जन्नती होने का राज़ (वाक़िआ़) : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से लोगों को देख कर पहचान लेते थे कि येह जन्नती है या जहन्नमी, बल्कि आने वाले की पहले से ख़बर हो जाती कि वोह जन्नती है या दोज़ख़ी, चुनान्चे **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स सब से पहले इस दरवाज़े से दाख़िल होगा वोह **जन्नती** होगा।" इतने में **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ عَنْه दरवाज़े से दाख़िल हुए, लोगों ने उन को मुबारक बाद देते हुए पूछा कि आख़िर किस अ़मल के सबब आप को येह सआ़दत मिली ? फ़रमाया : **मेरा अ़मल तो बहुत थोड़ा है** और जिस की मैं **अल्लाह** पाक से उम्मीद रखता हूं वोह मेरे सीने की सलामती और बे मक़्सद बातों को छोड़ना है। (اَلصَّمت ج۷ ص۸۶ قول نمبر ۱۱۱)

https://www.dawateislamiindia.org/

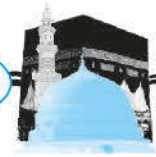

इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "سَلَامَةُ الصَّدْر" या'नी "सीने की सलामती" से मुराद दिल का लग़्विय्यात (या'नी फ़ुज़ूलिय्यात) बुग़्ज़ो ह़सद वग़ैरा अमराज़े बात़िनिय्या (या'नी गुनाहों की छुपी हुई बीमारियों) से पाक होना और दिल में ईमान का मज़्बूत़ होना है।

रफ़्तार का गुफ़्तार का किरदार का दे दे

हर उ़ज़्व का दे मुझ को ख़ुदा क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 95)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती : سُبْحٰنَ الله ! **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तन मन धन सब क़ुरबान ! सह़ाबिये नबी अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه के मुक़द्दर की भी क्या बात है कि इन्हें ज़बाने नबी से जन्नती होने की बिशारत मिली, बेशक आप رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه जन्नती हैं और सिर्फ़ आप ही नहीं हर सह़ाबिये नबी जन्नती है चुनान्चे "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़ह़ा 329 ता 330 पर है : **अल्लाह** करीम पारह 27 **सूरतुल ह़दीद** की आयत 10 में इर्शाद फ़रमाता है :

لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٠﴾

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम में फ़त्ह़ से पहले ख़र्च करने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं, वोह बा'द में ख़र्च करने वालों और लड़ने वालों से मर्तबे में बड़े हैं और इन सब से **अल्लाह** ने सब से अच्छी चीज़ का वा'दा फ़रमा लिया है और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

https://www.dawateislamiindia.org/

तमाम सह़ाबा जन्नती हैं : **मुफ़स्सिरे** कुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : इन (सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के दरजे अगर्चे मुख़्तलिफ़ हैं मगर इन सब का **जन्नती** होना बिल्कुल यक़ीनी है क्यूं कि रब वा'दा फ़रमा चुका है, तमाम सह़ाबा आ़दिल व मुत्तक़ी हैं क्यूं कि सब से रब्बे करीम ने **जन्नत** का वा'दा फ़रमा लिया, जन्नत का वा'दा फ़ासिक़ (या'नी गुनहगार) से नहीं होता। (नूरुल इरफ़ान, आयते मज़्कूरा के तह़्त) हर सह़ाबी, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ाबिय्यत की निस्बत से हमारे लिये वाजिबुत्ता'ज़ीम है और किसी भी सह़ाबी की गुस्ताख़ी ह़राम और गुमराही है।

हर सह़ाबिये नबी	*जन्नती जन्नती*	*सब सह़ाबियात भी*	*जन्नती जन्नती*
चार याराने नबी	*जन्नती जन्नती*	*ह़ज़रते सिद्दीक़ भी*	*जन्नती जन्नती*
हैं उ़मर फ़ारूक़ भी	*जन्नती जन्नती*	*उ़स्माने ग़नी*	*जन्नती जन्नती*
फ़ातिमा और अ़ली	*जन्नती जन्नती*	*हैं ह़सन ह़ुसैन भी*	*जन्नती जन्नती*
वालिदैने नबी	*जन्नती जन्नती*	*हर ज़ौजए नबी*	*जन्नती जन्नती*
और अबू सुफ़्यान भी	*जन्नती जन्नती*	*हैं मुआ़विया भी*	*जन्नती जन्नती*

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "फ़ुज़ूल बातें" अगर्चे गुनाह नहीं ताहम इस में कोई भलाई भी नहीं। سُبْحٰنَ اللهِ ! अभी आप ने एक रिवायत सुनी जिस में सह़ाबिये नबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ عَنْه को ज़बाने रिसालत से दुन्या ही में **जन्नत की बिशारत** इनायत हो गई ! आप رَضِیَ اللهُ عَنْه में एक ख़ूबी येह भी थी कि कभी **फ़ुज़ूल बातों** में नहीं पड़ते थे, जिस काम से वासित़ा न होता उस के बारे में पूछते तक नहीं थे, लेकिन अफ़्सोस ! हमारा जिन मुआ़मलात से दूर का भी तअ़ल्लुक़ नहीं होता फिर भी उन में मुदाख़लत (INTERFERE) करते और उन के मुतअ़ल्लिक़ बिला ज़रूरत सुवालात करते रहते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

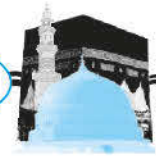

ज़ियादा खाना भी ज़ियादा बोलने का एक सबब है : **महज़** लज़्ज़त के लिये ज़ियादा खाने पीने की क़ुरआनो हदीस में मज़म्मत आई है। पेट जब ज़ियादा भर जाता है तो मस्ती भी ज़ियादा सूझती है और ज़बान भी क़ैंची की तरह चलने लगती है और जब भूक लगी होती है तो इन्सान सुस्त पड़ जाता है, ज़ियादा बोलने को जी नहीं चाहता। चुनान्चे हज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे अस्लाफ़ या'नी गुज़रे हुए बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم सख़्त भूक बरदाश्त करते और पेट न भरा करते ताकि उन की ख़ामोशी ज़ियादा हो और फ़ुज़ूल गोई कम हो जैसा कि बा अ़मल उ़लमाए दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की आ़दते मुबारका थी, क्यूं कि जिस का पेट ख़ूब भरा होता है उस का बे फ़ाएदा बोलना भी बढ़ जाता है। (تنبیہ المغترین ص۱۸۹)

बिग़ैर भूक के खाने वाला बातूनी होता है : **हज़रते** सय्यिदुना मुहम्मद राहिबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : पेट में फ़ुज़ूल खाना भरने वाले की ज़बान से बातें भी फ़ुज़ूल निकलेंगी। (تنبیہ المغترین ص۱۸۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तल्वार का ज़ख़्म भर जाता है मगर ज़बान का ज़ख़्म नहीं भरता : **तीर** व तल्वार से सिर्फ़ जिस्म घाइल (या'नी ज़ख़्मी) होता है, मगर ज़बान की वज्ह से दिल घाइल हो जाता है। हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इन्सान को तीर मारना उस को ज़बान से बुरा भला कहने से कम है, क्यूं कि ज़बान के निशाने कभी ख़ता नहीं होते। (تنبیہ المغترین ص۱۸۹)

ज़बान को क़ैद कर के रखो : **जो** शख़्स अपनी ज़बान को क़ैदी बनाने में काम्याब हो गया वोह यक़ीनन बे शुमार फ़ितनों से महफ़ूज़ हो गया, चुनान्चे सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : "क़सम है उस ज़ाते पाक की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसे ज़बान से ज़ियादा क़ैद में रखना ज़रूरी हो।"

(احیاء العلوم ج۳ ص۱۳۷, एह्याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 338)

https://www.dawateislamiindia.org/

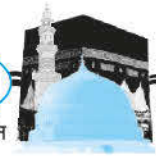

जो बात दो होंटों में न समाई अब वोह कहीं न समाएगी : बोलने से पहले अच्छी तरह ग़ौर कर लेना चाहिये कि कहीं बा'द में शरमिन्दगी न उठानी पड़े। (करोड़ों शाफ़ेइय्यों के पेश्वा) हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बात तीर की तरह है, अगर तेरे पास से निकल जाए तो वोह दूसरे की हो जाएगी और अब उस का मालिक तू नहीं होगा।

(تنبیہ المغترین ص۱۸۹)

बशर राज़े दिली कह कर ज़लीलो ख़्वार होता है निकल जाती है जब ख़ुश्बू तो गुल बेकार होता है

مَاشَآءَاللّٰه ! बा'ज़ साहिबान बहुत ही समझदार और पेट के ख़ूब मज़बूत होते हैं और कुछ भी हो जाए, राज़ नहीं खोलते और घर की बात बाहर नहीं करते। ऐसे ही एक अक़्लमन्द का वाक़िआ वाक़ेई लाइक़े तक़्लीद है, चुनान्चे

घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात होता है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक साहिबे राज़ (या'नी पेट के मज़बूत आदमी) का निकाह हुवा मगर मियां बीवी में ज़ेह्नी हम आहंगी (या'नी अन्डर स्टेन्डिग) की कमी थी। किसी तरह उस के दोस्त को इस बात का पता चल गया, उस ने पूछा : तुम्हारे घर का क्या मस्अला है ? उस साहिबे राज़ ने जवाब दिया : मैं इतना कमज़ात नहीं कि घर की बात किसी को बता दूं। बात आई गई हो गई। बिल आख़िर घर न चल सका और तलाक़ देनी पड़ गई। जब उस के दोस्त को पता चला तो बोला : वोह तो अब तुम्हारी बीवी नहीं रही, बता दो क्या मुआमला था ? उस समझदार शख़्स ने जवाब दिया : अब तो वोह मेरे लिये ग़ैर औरत हो चुकी है और किसी ग़ैर औरत के मुतअ़ल्लिक़ मैं कैसे बात करूं !

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 363)

अल्लाह हम को फ़ज़्ल से अक़्ले सलीम दे शर्मो हया तुफ़ैले रसूले करीम दे

https://www.dawateislamiindia.org/

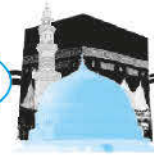

बा'ज़ अवक़ात तो एसी बात मूंह से निकल जाती है कि.... : हज़रते बिलाल बिन हारिस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक लफ़्ज़ आदमी **अल्लाह** पाक की ख़ुशी का कहता है और येह नहीं जानता कि इस से कुछ बड़ी रिज़ामन्दी हासिल होगी मगर **अल्लाह** पाक उसी के बाइस क़ियामत तक की रिज़ामन्दी (या'नी ख़ुशी) लिख लेता है। और कभी एक कलिमा (या'नी लफ़्ज़) नाराज़ी का कहता है और येह नहीं मा'लूम होता कि इस से नाराज़ी ज़ियादा होगी मगर **अल्लाह** पाक उस से अपनी नाराज़ी क़ियामत तक की लिखता है। (ترمذی ج٤ ص١٤٣ حدیث ٢٣٢٦)

वोह बे फ़ाएदा कम बोलेगा : **जो** कोई ख़ुश नसीब ज़ेवरे ख़ौफ़े ख़ुदा से आरास्ता हो कर मौत को कसरत से याद करता हो, थोड़ी आमदनी (INCOME) पर भी शुक्र गुज़ार हो, ज़ियादा मालो दौलत की हवस न हो और जिस को येह भी एह़सास हो कि "बोलना" भी कोई अ़मल है, जिस का ह़िसाब देना पड़ेगा। तो ऐसा शख़्स बेकार बातें कभी नहीं कर सकता। जैसा कि ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जो कोई मौत को बहुत याद करता है, (वोह) दुन्या से थोड़ी चीज़ पर (भी) क़नाअ़त करता (या'नी क़िस्मत पर राज़ी रहता) है और जो अपनी बातचीत को भी अ़मल तसव्वुर करता है वोह बे फ़ाएदा कम बोलता है।

(احیاء العلوم ج٣ ص١٣٧, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 338)

ज़बान का फिसलना पाउं के फिसलने से ज़ियादा ख़तरनाक है : **हर** वक़्त बातें करते रहने से येह भी अन्देशा (या'नी डर) रहता है कि मक़्बूलिय्यत की घड़ी हो और कोई बात ना पसन्दीदा निकल जाए और वैसा ही हो जाए। एक अ़रबी शाइ़र के अश्आ़र का तरजमा है : "आदमी अपनी ज़बान की लग़्ज़िश (या'नी फिसलन) से हलाक हो जाता है, जब कि पाउं के फिसलने से उसे मौत नहीं आ जाती, जो चीज़ ना पसन्द हो उस का ज़बान से तज़्किरा भी मत करो, बसा अवक़ात जो कुछ ज़बान से निकलता जाता है, वैसा ही हो जाता है।" (تنبیہ الغافلین ص١١٦)

https://www.dawateislamiindia.org/

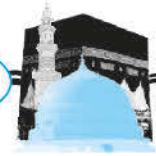

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** पाक के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

न जाने कौन सी घड़ी क़बूलिय्यत की हो : ऐ आशिक़ाने रसूल ! इधर उधर की बातें करने से बचने ही में भलाई है, जब भी फ़ारिग़ हों फ़ौरन ज़बान पर ज़िक्रो दुरूद की तरकीब कर ली जाए, न जाने कब क़बूलिय्यत की घड़ी आ जाए और हमारा बेड़ा पार हो जाए। ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ पढ़ते रहा करो, क्यूं कि **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से कुछ अवक़ात ऐसे हैं जिस में दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल कर ली जाती है। (کتاب حسن الظن باللّٰہ مع موسوعۃ ابن ابی الدنیا ج۱ص۱۱۰قول نمبر۱۱۸)

फ़ुज़ूल बोलने वाले की क़ियामत में पांच जगह परेशानी : मन्क़ूल (या'नी कहा गया) है कि हर हंसी मिज़ाह़ (या'नी मज़ाक़ मस्ख़री) या लग़्व (या'नी फ़ुज़ूल) बात पर बन्दे को (मैदाने क़ियामत में) पांच मक़ामात पर झिड़क्ने और वज़ाह़त त़लब करने की ख़ात़िर रोका जाएगा :

﴾1﴿ तू ने बात क्यूं की थी ? क्या इस में तेरा कोई फ़ाएदा था ?

﴾2﴿ तू ने जो बात की थी क्या उस से तुझे कोई नफ़्अ़ ह़ासिल हुवा ?

﴾3﴿ अगर तू वोह बात न करता तो क्या तुझे कोई नुक़्सान उठाना पड़ता ?

﴾4﴿ तू ख़ामोश क्यूं न रहा ताकि अन्जाम से मह़फ़ूज़ रहता ?

﴾5﴿ तू ने इस की जगह سُبْحٰنَ اللّٰہ اَلْحَمْدُلِلّٰہ कह कर अज्रो सवाब क्यूं ह़ासिल न किया ?

(قوت القلوب جلد اوّل ص ۲۶۸)

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ज़बान से सर की ह़िफ़ाज़त होती है।" (تنبیہ المغترین ص۱۹۰) ज़बान से जिस को बुरा भला कहा गया, हो सकता है वोह ग़ुस्से में मारधाड़ पर उतर आए और सर वग़ैरा फाड़ दे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

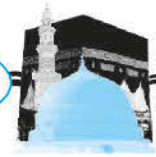

ख़ामोशी में सात हज़ार फ़ाएदे हैं : **किसी** अ़क़्लमन्द का कहना है कि ख़ामोशी में सात हज़ार फ़ाएदे हैं, जो सात जुम्लों (या'नी सेन्टेन्स, SENTENCES) में जम्अ़ हैं और हर जुम्ले में एक हज़ार फ़ाएदे हैं : (1) ख़ामोशी बिग़ैर मेहनत के (या'नी बा'ज़ शराइत़ के साथ) इ़बादत है (2) ख़ामोशी बिला ज़ेवर के ज़ीनत है (3) ख़ामोशी बिग़ैर सल्त़नत के हैबत है (4) ख़ामोशी बिग़ैर दीवारों के क़ल्आ़ है (5) ख़ामोशी में किसी एक के पास मा'ज़िरत (या'नी SORRY) नहीं करना पड़ती (6) ख़ामोशी में किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले इ़ज़्ज़त वाले फ़िरिश्तों) की राह़त है (7) ख़ामोशी इन्सान के ऐ़बों के लिये पर्दा है। (تنبیہ الغافلین ص۱۱۷)

जवानी दीवानी है इस के शर से बचो ! : **जवानी** में उ़मूमन सिह़्ह़त अच्छी रहती है, उमंगें और आरज़ूएं कसीर (या'नी ज़ियादा) होती हैं और वाक़ेई जवानी में सख़्त आज़्माइश होती है। चुनान्चे ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत है, मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक नौ जवान से फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! अगर तू तीन चीज़ों के शर से बच जाए तो जवानी के शर से मह़फ़ूज़ हो जाएगा (1) ज़बान के शर (या'नी बुराई) से (2) शर्मगाह के शर से (3) तीसरे पेट के शर से।" (تنبیہ الغافلین ص۱۱۷)

ढलने वाली है जवानी जिस पे तुझ को नाज़ है तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

न बोलने में नव गुन : **वाक़ेई** कम बोलने में आ़फ़ियतो सलामती है। ह़ज़रते वुहैब बिन वर्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "आ़फ़ियत दस ह़िस्से है, इस में से 9 ह़िस्से सिर्फ़ ख़ामोशी में हैं और एक ह़िस्सा लोगों से दूर भागने में।" (تنبیہ المغترین ص۱۹۰)

ज़बान की ह़िफ़ाज़त सोने चांदी की त़रह़ करो : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "बे मक़्सद काम को तर्क कर दो, फ़ुज़ूल बातों से बचो और अपनी ज़बान की इस त़रह़ ह़िफ़ाज़त करो जिस त़रह़ सोने चांदी की ह़िफ़ाज़त करते हो।"

(**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 1, स. 508, حلیۃ الاولیاء ج۱ص۳۰۹)

https://www.dawateislamiindia.org/

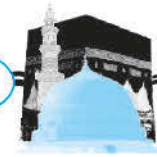

ख़ामोशी "सोना" है : **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं कि अगर बातचीत करना "चांदी" (या'नी SILVER) हो तो चुप रहना "सोना" (या'नी GOLD) है। (احیاء العلوم ج۳ ص۱۳۶)

साह़िबे ह़िक्मत कौन ? : **सरकारे** मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम दुन्या से बे रग़बत शख़्स को देखो और **उसे कम बोलने वाला** पाओ तो उस के पास बैठो क्यूं कि उसे ह़िक्मत दी गई है।" (ابن ماجة ج٤ص٤٢٢ حديث٤١٠١) "मिरआत" में इस ह़दीसे पाक के तह़्त है : "ह़िक्मत" से मुराद इ़ल्म बा अ़मल है, बा'ज़ (उ़लमा) ने फ़रमाया : शरीअ़तो त़रीक़त का इज्तिमाअ़ या'नी दोनों साथ साथ होना "ह़िक्मत" है। (मिरआत, जि. 7, स. 57)

कम कलाम ज़ियादा काम : **जो** नेक आदमी हो उसे ज़िक्रो दुरूद और "नेकी की दा'वत के काम" से फ़ुरसत ही कब मिलती है कि फ़ुज़ूल बक्वास में पड़े और मुनाफ़िक़ तो होता ही फ़ालतू है इस लिये "बक बक" न किया करे तो और करे भी क्या ! जैसा कि इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह मक़ूला मश्हूर है कि "मुसल्मान कलाम (या'नी गुफ़्तगू) कम और काम ज़ियादा करता है मगर मुनाफ़िक़ काम कम और कलाम (या'नी फ़ालतू बातें) ज़ियादा करता है।" (تنبیه الغافلین ص۱۱۰)

चालीस साल की रातें फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ किया : **अल्लाह** पाक के ऐसे ऐसे नेक बन्दे और सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीवाने होते हैं जिन को ज़िक्रो दुरूद से फ़ुरसत ही नहीं मिलती कि फ़ुज़ूल बातों की नौबत आए। चुनान्चे ह़ज़रते मन्सूर बिन मो'तमिर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 40 साल तक बा'द नमाज़े इ़शा किसी के साथ बातों में ह़िस्सा नहीं लिया।

(एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 339, احیاء العلوم ج۳ ص۱۳۷)

अल्लाहु अक्बर ! प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** वाले رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم चालीस चालीस साल तक अपनी ज़बान को क़ाबू में रखने में काम्याब हो जाएं और हमारा ह़ाल येह है कि चालीस मिनट भी अपनी ज़बान न संभाल पाएं !

https://www.dawateislamiindia.org/

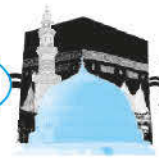

बेकार गुफ़्तगू से ख़ुदाया बचा मुझे

ज़िक्रो दुरूदे पाक का शैदा बना मुझे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ना फ़रमानी का एक लफ़्ज़ भी दोज़ख़ में पहुंचा सकता है : **बा'ज़** अवक़ात मुसल्मान बे ख़याली में ऐसी प्यारी प्यारी बात कर डालता है जिस की ख़ुद उसे भी ख़बर नहीं होती और **अल्लाह** करीम उस से राज़ी हो चुका होता है, और कोई तो बे परवाई में एकआध ऐसी बात बक डालता है कि उसे इस की सुध भी नहीं होती हालां कि उस बक्वास की नहूसत से तबाही उस का मुक़द्दर बन चुकी होती है। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक बन्दा कभी **अल्लाह** पाक की रिज़ामन्दी का कोई ऐसा कलिमा (या'नी सेन्टेन्स, SENTENCE) कह देता है कि जिस की तरफ़ उसे ध्यान भी नहीं होता, और इस की वज्ह से **अल्लाह** पाक उस के बहुत से दरजात (ग्रेड्ज़, GRADES) बुलन्द फ़रमा देता है और बेशक बन्दा कभी **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी का कोई ऐसा कलिमा (SENTENCE) कह गुज़रता है कि उस की तरफ़ उस को ध्यान भी नहीं होता और इस की वज्ह से दोज़ख़ में गिरता चला जाता है। (مشکوۃ ج۲ ص۱۸۹ حدیث ۴۸۱۳)

बुरी सोहबत ने बरबाद कर के रख दिया था : ऐ आशिक़ाने रसूल ! अभी दिल हिला देने वाली हदीसे पाक बयान हुई, वाक़ेई ज़बान बहुत ही सोच समझ कर चलानी चाहिये, ज़बान की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने में **दा'वते इस्लामी** का निहायत अहम किरदार है, हम सभी को **दा'वते इस्लामी** के दीनी माहोल में रहते हुए ख़ूब दीनी काम करने चाहिएं और हमेशा बुरी सोहबत से दूर रहना चाहिये। बुरी सोहबत से बरबाद होने के बा'द हिदायत मिलने पर आशिक़ाने

https://www.dawateislamiindia.org/

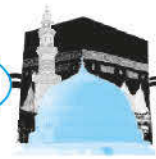

रसूल की सोहबते बा बरकत में आने वाले एक ख़ुश नसीब इस्लामी भाई की "मदनी बहार" सुनिये चुनान्चे एक इस्लामी भाई बुरे दोस्तों की सोहबत की वज्ह से बद अख़्लाक़ी और गुनाहों के दलदल में फंस चुके थे, इन्हें गाने सुनने का बहुत ज़ियादा शौक़ था और फिर येह शौक़ इतना बढ़ा कि वोह मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों में ख़ुद गाने गा कर लोगों से दाद वुसूल करने लगे। इस के इलावा चरस पीना इन का मा'मूल था, गुनाहों की आदत इतनी ज़ियादा बढ़ चुकी थी कि फ़ोहूश गोई (या'नी बे हयाई की बातें) करना और झूट बोलना इन के नज़्दीक गोया कोई ऐब ही न था, ख़ुश क़िस्मती से 2005 में इन्हें **दा'वते इस्लामी** के तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआदत हासिल हुई जहां येह ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद भी बने, लेकिन इज्तिमाअ़ से लौटने के बा'द वोह दोबारा बुरे दोस्तों की सोहबत में जा बैठे और फिर से गुनाहों का सिल्सिला जारी हो गया। एक दिन अचानक इन्हें कोई ज़ेहनी मरज़ लाहिक़ हो गया जिस की वज्ह से इन्हें सूरए फ़ातिहा भी याद न रही और वोह अपने ही घर में पागलों की तरह रहने लगे, अपने वालिदैन को अपना दुश्मन समझने लगे, इन की हालत इतनी ख़राब हो गई कि अपने मरज़ की वज्ह से न वोह खाना खा सकते थे और न सो सकते थे, बिल आख़िर इन्हें नफ़्सियाती हस्पताल में दाख़िल करवा दिया गया। इन की अम्मीजान से अपने बेटे की येह हालत देखी नहीं जाती थी, और वोह इन के लिये कसरत से दुआएं और वज़ीफ़े करती रहतीं, एक रात इन की अम्मीजान के ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए और कुछ अ़मल करने को कहा। इन की अम्मीजान बिला नाग़ा वोह अ़मल करने लगीं, उस अ़मल की बरकत से आहिस्ता आहिस्ता इन इस्लामी भाई की हालत बेहतर होने लगी और वोह जिस्मानी तौर पर सिह्हत याब होने लगे और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم एक दिन वोह भी आया कि इन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतें सीखने सिखाने के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया जहां इन्हें आशिक़ाने रसूल की सोहबत में गुनाहों से बचने का ज़ेहन मिला और वोह दीनी माहोल

https://www.dawateislamiindia.org/

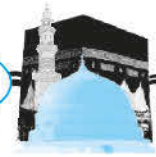

में रचते बसते चले गए और **दा'वते इस्लामी** के दीनी काम करते करते डिवीज़न सत्ह पर मदनी इन्आ़मात (जिसे अब "नेक आ'माल" कहते हैं) के ज़िम्मेदार भी बने।

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! बयान कर्दा मदनी बहार हमें दा'वते फ़िक्र दे रही है कि हम अपनी सोह़बतों और दोस्तियों पर नज़रे सानी कर लें, कहीं ऐसा तो नहीं कि नेक आ'माल से दूरी की वज्ह हमारी बुरी दोस्ती और गन्दी सोह़बत हो !! ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बुरों की सोह़बत फ़ाएदा और अच्छों की सोह़बत नुक़्सान कभी नहीं दे सकती। भट्टी वाले से मुश्क नहीं मिलेगा, गरमी और धूआं ही मिलेगा। मुश्क (की ख़ुश्बू) वाले से न गरमी मिले न धूआं, मुश्क या ख़ुश्बू ही मिलेगी।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "ह़त्तल इम्कान बुरी सोह़बत से बचो कि येह दीनो दुन्या बरबाद कर देती है और अच्छी सोह़बत इख़्तियार करो इस से दीनो दुन्या संभल जाते हैं। सांप की सोह़बत जान लेती है। बुरे यार की सोह़बत ईमान बरबाद कर देती है।"

(मिरआत, जि. 6, स. 591)

ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

صُحبتِ صالِح تُرا صالِح کُنَد　　صُحبتِ طالِح تُرا طالِح کُنَد

(या'नी अच्छे की सोह़बत तुझे अच्छा और बुरे की सोह़बत तुझे बुरा बना देगी)

(मस्नवी, दफ़्तरे अव्वल, स. 22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बात को फ़ुज़ूलिय्यात से पाक करने का बेहतरीन नुस्ख़ा : **गुफ़्तगू** में कमी लाने के ख़्वाहिश मन्दों के लिये अपनी बात को फ़ुज़ूल लफ़्ज़ों और मुख़्तलिफ़ ख़राबियों से पाक करने के लिये "एह़याउल उ़लूम" में कुछ इस त़रह़ लिखा है : गुफ़्तगू की चार क़िस्में हैं : ﴿1﴾ मुकम्मल नुक़्सान देह बात ﴿2﴾ मुकम्मल फ़ाएदे मन्द बात ﴿3﴾ ऐसी बात जो नुक़्सान देह भी हो और फ़ाएदे

https://www.dawateislamiindia.org/

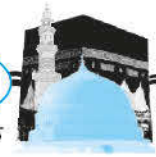

मन्द भी, और ﴿4﴾ ऐसी बात जिस में न फ़ाएदा हो न नुक़्सान तो **पहली** क़िस्म की बात जो कि मुकम्मल या'नी सारी की सारी नुक़्सान देह है उस से हमेशा बचना ज़रूरी है और इसी त़रह़ **तीसरी** क़िस्म वाली बात कि जिस में नुक़्सान व फ़ाएदा दोनों हैं, इस से भी बचना लाज़िम है और जो **चौथी** क़िस्म है वोह **फ़ुज़ूलिय्यात** में शामिल है कि उस का न फ़ाएदा है न नुक़्सान, लिहाज़ा ऐसी बात में वक़्त ज़ाएअ़ करना भी एक त़रह़ का नुक़्सान ही है इस के बा'द सिर्फ़ **दूसरी** ही क़िस्म की बात रह जाती है या'नी बातों में से तीन चौथाई (या'नी 75%) क़ाबिले इस्ति'माल नहीं हैं और दूसरी क़िस्म की बात जो कि फ़ाएदे मन्द है बस वोही क़ाबिले इस्ति'माल है मगर इस क़ाबिले इस्ति'माल बात के अन्दर बारीक क़िस्म की रियाकारी, बनावट, ग़ीबत, तोहमत, झूटे मुबालग़े, "मैं मैं करने की आफ़त" या'नी अपनी फ़ज़ीलत व पाकीज़गी बयान कर बैठने वग़ैरा वग़ैरा ख़त़रे मौजूद हैं, मज़ीद येह कि फ़ाएदे मन्द गुफ़्तगू करते करते फ़ुज़ूल बातों में जा पड़ने फिर उस के ज़रीए़ और आगे बढ़ते हुए ख़ुदा न ख़्वास्ता इस में गुनाह हो जाने वग़ैरा वग़ैरा के ख़ौफ़ और डर शामिल हैं और इन ख़राबियों का शामिल होना ऐसा बारीक है जिस का अक्सर इल्म नहीं होता, लिहाज़ा इस क़ाबिले इस्ति'माल बात के ज़रीए़ भी इन्सान ख़त़रात में घिरा रहता है।

(देखिये : एह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 138)

दुन्यवी बात मुंह से निकल जाए तो कुछ ज़िक्रुल्लाह कर लेना चाहिये : अल्लाह पाक के नेक बन्दे ख़ालिस दुन्यवी (ग़ैर फ़ुज़ूल) बातों को भी अच्छा न समझते थे, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब कोई दुन्यवी बात कह देते तो इस के बा'द "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر" पढ़ते फिर फ़रमाते : "हमारे अस्लाफ़ (गुज़रे हुए बुज़ुर्गाने दीन) किसी मजलिस (या'नी बैठक) में ख़ालिस दुन्यावी कलाम करना अच्छा न जानते थे, जब तक कि उस के साथ कोई नेक बात न मिला लेते।" (تنبیہ المغترین ص۱۹۰)

https://www.dawateislamiindia.org/

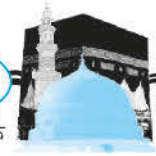

जब रह़मत की तवज्जोह हटा दी जाती है : **बातूनी** शख़्स को तो डर जाना चाहिये कि कहीं **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** ने मेरी त़रफ़ से रह़मत की तवज्जोह तो नहीं हटा दी ! चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इन्सान का बेकार बातें करना **अल्लाह** पाक का उस को बे मदद छोड़ देने के बाइ़स होता है।" (تنبیهُ المغترین ص۱۹۰)

हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ से मह़रूम : **मुनाफ़िक़** दुन्यादारी के मुआ़मले में कितना ही अ़क़्लमन्द सही मगर चूंकि वोह हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ बूझ से मह़रूम होता है इस लिये यक़ीनन वोह बद नसीब व मह़रूम है। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है कि मुनाफ़िक़ में दो ख़स्लतें जम्अ़ नहीं होतीं : (1) हुस्ने अख़्लाक़ और (2) दीन की समझ।

(ترمذی ج٤ ص٣١٣ حدیث ٢٦٩٣)

बोलने वाला बारहा पछताता है : **एक** नसीह़त आमोज़ अ़रबी शे'र का तरजमा है : "इ़ल्म ज़ीनत (या'नी ख़ूब सूरती) है और ख़ामोशी सलामती, और जब कभी बोलना पड़े तो ज़ियादा न बोलो। तुम ने ख़ामोशी पर कभी शरमिन्दगी नहीं उठाई होगी। मगर बोल कर बहुत बार नदामत या'नी शरमिन्दगी उठाई होगी।" (تنبیه الغافلین ص١١٦)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई येह ह़क़ीक़त है कि ख़ामोश रहने में नदामत (या'नी शरमिन्दगी) का इम्कान (या'नी CHANCE) बहुत कम है जब कि मौक़अ़ बे मौक़अ़ "बोल पड़ने" की आ़दत से बारहा SORRY कहना पड़ता और मुआ़फ़ी मांगनी पड़ती है या फिर दिल ही दिल में पछतावा होता है कि मैं यहां न बोला होता तो अच्छा था क्यूं कि मेरे बोलने पर सामने वाले की झिजक उड़ गई, ख़री ख़री सुननी पड़ी, फ़ुलां नाराज़ हो गया, फ़ुलां का चेहरा उतर गया, फ़ुलां का दिल दुख गया, अपना इम्प्रेशन (IMPRESSION) भी ख़राब पड़ा वग़ैरा वग़ैरा। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन नज़्र ह़ारिसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से कितनी प्यारी बात बयान की गई है : "ज़ियादा बोलने से (इ़ज़्ज़त व) वक़ार जाता रहता है।" (اَلصَّمت لِابنِ اَبِی الدُّنیا مع موسوعه ج٧ ص٦٠ قول نمبر٥٢)

https://www.dawateislamiindia.org/

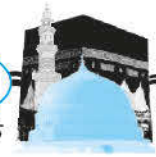

"बोल कर" पछताने से "न बोल कर" पछताना अच्छा : **सच** है, "बोल कर" पछताने से "न बोल कर" पछताना अच्छा और "ज़ियादा खा कर" पछताने से "कम खा कर" पछताना अच्छा कि जो बोलता रहता है वोह मुसीबतों में फंसता रहता है और जो ज़ियादा खाने का आ़दी होता है वोह अपना **मे'दा** तबाह कर बैठता, अक्सर **मुटापे** का शिकार हो जाता और त़रह़ त़रह़ की बीमारियों की ज़द में रहता है, अगर जवानी में अमराज़ से क़दरे बचत हो भी गई तो जवानी ढलने के बा'द बसा अवक़ात "सरापा मरज़" बन जाता है। ज़ियादा खाने के नुक़्सानात और **मुटापे के इलाज** वग़ैरा जानने के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के बाब "**भूक के फ़ज़ाइल**" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

ज़ियादा बोलने वाले को नदामत उठानी पड़ती है : **बुरी** सोह़बत बरबाद करती, बुरी जगह जाने वाला बदनाम होता और बातूनी आदमी को आख़िर कार शरमिन्दगी उठानी पड़ती है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में कहा गया है, उन्हों ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ बेटे ! (1) जो शख़्स बुरे आदमी का दोस्त और साथी बनता है उसे सलामती नहीं मिलती और (2) जो बुरी जगह पर जाता है वोह बदनाम होता है और (3) जो अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त नहीं करता वोह नादिम (या'नी शरमिन्दा) होता है। (تنبیہ الغافلین ص۱۱۰)

जो तोल कर बोलता है फ़ुज़ूल बातों से बच जाता है : **अ़क़्लमन्द** की शान येही है कि सोच समझ कर बात करे, अपना वक़्त फ़ुज़ूल ज़ाएअ़ न करे, अपने मुआ़मलात पर पूरी तवज्जोह रखे, इस त़रह़ उसे फ़ुज़ूल बातों का मौक़अ़ ही कहां मिलेगा ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि इब्राहीमी सह़ीफ़ों (या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल होने वाली आस्मानी किताबों) में क्या मज़ामीन थे ? फ़रमाया : वोह सब इ़ब्रतो नसीह़त पर मुश्तमिल थे (उन में येह भी था), अ़क़्लमन्द पर लाज़िम है कि अपने ज़माने के ह़ालात से वाक़िफ़ हो और अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे। बातें करने के बजाए काम करे और उस का कलाम फ़ुज़ूल बातों पर मुश्तमिल न हो।

(**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 1, स. 319, حلیۃ الاولیاء ج۱ص۲۲۲)

https://www.dawateislamiindia.org/

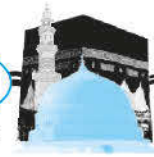

केन्सर की मरीज़ा सिह्ह़त याब हो गई : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल की भी क्या ख़ूब बरकतें हैं, इन बरकतों का अन्दाज़ा लगाने के लिये एक "मदनी बहार" सुनिये और झूमिये : ओल्ड कानपूर (अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई की ख़ुश बख़्ती कि उन्हें **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से वाबस्तगी नसीब हुई। उन की नानीजान की त़बीअ़त बहुत नासाज़ थी, बहुतेरा इ़लाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी। डॉक्टरों ने कहा : "इन्हें सरत़ान (या'नी Cancer) है और साथ ही साथ येह ख़बर भी सुना दी कि येह चन्द दिनों की मेहमान हैं।" इस ख़बरे वह़शत असर से येह घबरा गए, इन्हों ने **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** के भरोसे नानीजान की सिह्ह़त याबी की दुआ़ मांगने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की और रो रो कर दुआ़ की : "**या अल्लाह** पाक! यहां जो भी तेरा मह़बूब (या'नी प्यारा) बन्दा है उस के सदक़े मेरी प्यारी नानीजान को सिह्ह़त की ने'मत अ़त़ा फ़रमा।" अगले रोज़ जब नानीजान की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उन की ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूं कि इज्तिमाअ़ में आ़शिक़ाने रसूल के दरमियान मांगी जाने वाली दुआ़ की बरकत यूं ज़ाहिर हुई कि उन की नानीजान अब न सिर्फ़ बैठ रही थीं बल्कि तन्दुरुस्त हो कर चल फिर रही थीं।

तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माह़ोल न छूटे कभी भी ख़ुदा मदनी माह़ोल
सलामत रहे या ख़ुदा मदनी माह़ोल बचे बद नज़र से सदा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

कोई बीमारी ला इलाज नहीं : سُبْحٰنَ اللّٰه ! **अल्लाह** पाक हर शै पर क़ुदरत रखता है, वोह चाहे तो केन्सर भी ठीक हो जाए। यक़ीनन **बुढ़ापे** और **मौत** के सिवा हर बीमारी का इ़लाज है। हां येह बात अलग है कि कई अमराज़ का इ़लाज **अत़िब्बा** (या'नी डॉक्टर्ज़) अब तक दरयाफ़्त नहीं कर पाए। लिहाज़ा येह कहने के बजाए कि "फ़ुलां मरज़ का इ़लाज नहीं है" मुनासिब येह है कि यूं कहा जाए कि हमारे पास इस बीमारी का इ़लाज नहीं या डॉक्टर्ज़ अभी तक इस मरज़ का इ़लाज दरयाफ़्त नहीं कर सके। बहर ह़ाल **रब्बे करीम** चाहे तो दवा **शिफ़ा** का ज़रीआ़ बने वरना ऐन

https://www.dawateislamiindia.org/

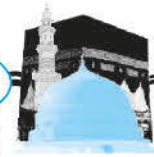

मुम्किन है कि वोही दवा **मौत** का सबब बन जाए ! और येह भी अक्सर देखा जाता है कि **माहिर डॉक्टर** की त़रफ़ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बा वुजूद किसी किसी मरीज़ को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता है ।

केन्सर का रूहानी इलाज : **अव्वल** आख़िर ग्यारह बार दुरूदे इब्राहीम और दरमियान में "**सूरए मरयम**" पढ़ कर पानी पर दम कीजिये, ज़रूरतन दूसरा पानी मिलाते रहिये, मरीज़ वोही पानी सारा दिन पिये, येह अ़मल चालीस दिन तक बिला नाग़ा करते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه शिफ़ा ह़ासिल होगी । (दूसरा भी पढ़ कर दम कर के मरीज़ को पिला सकता है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बे वुकूफ़ जब तक ख़ामोश रहता है पहचाना नहीं जाता : **ख़ामोश** रहने से बा'ज़ अवक़ात लोगों पर धाक बैठी रहती है, लोग इ़ज़्ज़त की निगाह से देखते हैं और जो हर वक़्त बोलता रहता है उस का रो'ब ख़त्म हो जाता है और उस की बात का "वज़्न" भी नहीं रहता । चुनान्चे इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ग़ौर करे तो वोह तमाम अहले मजलिस से अशरफ़ (या'नी शरीफ़ तरीन) और ज़ियादा रो'बदार उस शख़्स को पाएगा जो अक्सर ख़ामोश रहता हो, क्यूं कि ख़ामोशी आ़लिम के लिये ज़ीनत है और जाहिल के लिये पर्दा ।" (تنبیہ المغترین ص۱۹۰)

आधी रात तक अगर सूरज न डूबे तो ? (वाक़िआ़) : **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** वाक़ेई ज़बान बन्द रखने से भरम क़ाइम रहता है, इन्सान जैसे ही बोलना शुरूअ़ करता है, उस का "भाव" (या'नी समझदारी का) पता चल जाता है । कहते हैं कि ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ एक शख़्स बैठता था मगर कभी कुछ बोलता नहीं था । एक बार ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : आप कभी कोई सुवाल क्यूं नहीं करते ? हमेशा चुप ही रहते हैं ? येह सुन कर उस ने सुवाल कर दिया : अच्छा येह बताइये कि रोज़ा कब इफ़्त़ार करना चाहिये ? फ़रमाया :

https://www.dawateislamiindia.org/

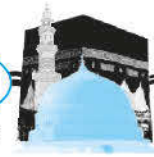

जब सूरज ग़ुरूब हो जाए। वोह बोला : अगर आधी रात तक सूरज ग़ुरूब ही न हो तो ? येह सुवाल सुन कर ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हंस पड़े और फ़रमाया : आप का ख़ामोश रहना ही बेहतर था, मैं ने आप की ज़बान खुलवा कर ग़लती की। (تاریخ بغداد ج ١٤ ص ٢٥١)

काश ! मैं गूंगा होता : **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** देखा जाए तो **नाबीना** फ़ाएदे में रहता है कि ग़ैर औ़रतें, फ़िल्में ड्रामे, किसी "हाफ़ पेन्ट" वाले शख़्स के खुले घुटने और रानें देखने, अम्रद पर "मख़्सूस लज़्ज़त" वाली नज़र डालने वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों से बचा रहता है, इसी त़रह़ **गूंगा** भी ज़बान की बे शुमार आफ़तों से महफ़ूज़ रहता है। मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, आ़शिक़े अक्बर, ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه (बत़ौरे आ़जिज़ी) फ़रमाते हैं : "काश ! मैं गूंगा होता मगर ज़िक्रुल्लाह की ह़द तक गोयाई (या'नी बोलने की सलाह़िय्यत) ह़ासिल रहती।"

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج ١٠ ص ٨٧)

काश ! येह गूंगी होती : "**एह़याउल उ़लूम**" में है : सह़ाबिये रसूल, ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने एक ज़बान दराज़ (या'नी ज़ियादा बातें करने वाली) औ़रत देखी तो फ़रमाया : अगर येह **गूंगी** होती तो इस के ह़क़ में बेहतर था। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٣ ص ١٤٢)

घर अम्न का गहवारा कैसे बने ! : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللهُ عَنْه के मुबारक इर्शाद से ख़ुसूसन हमारी वोह इस्लामी बहनें दर्स ह़ासिल करें जो फ़ुज़ूल बातों, ग़ैर ज़रूरी सुवालों, बद गुमानियों और ग़ीबतों वग़ैरा से फ़ुरसत नहीं पातीं, इस्लामी बहनें अगर सह़ीह़ मा'नों में ख़ामोश रहना सीख जाएं तो उन की घरेलू परेशानियां, रिश्तेदारों से ना चाक़ियां (या'नी अनबन), और सास बहू की लड़ाइयां वग़ैरा बहुत सारे मसाइल ह़ल हो जाएं और सारे का सारा ख़ानदान **अम्न का गहवारा** बन (या'नी पुर सुकून हो) जाए क्यूं कि **ज़ियादा तर घरेलू झगड़े ज़बान के ग़लत़ इस्ति'माल ही के सबब होते हैं।**

https://www.dawateislamiindia.org/

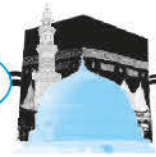

सोशल मीडिया की एक क़ाबिले ग़ौर पोस्ट : **सोशल** मीडिया की एक तवज्जोह त़लब पोस्ट मा'मूली फ़र्क़ के साथ पेश की जाती है, किसी लड़की ने पोस्ट की : अगर शादी के बा'द मां बाप को साथ रखने का ह़क़ बेटियों को मिल जाता तो मुल्क में एक भी "ओल्ड हाउस" न होता। इस पर किसी लड़के ने भी ख़ूब जवाब दिया कि अगर वोही बेटियां शादी के बा'द सास सुसर को ही मां बाप मान लें तो मुल्क तो क्या पूरी दुन्या में एक भी ओल्ड हाउस बाक़ी न रहे।

इस पोस्ट में सिर्फ़ उन औ़रतों को समझाने की कोशिश की गई है जो अपनी सास नन्दों वग़ैरा के सामने ख़ूब ज़बान चलातीं और घर का अम्न तहो बाला करती हैं, वरना मुआ़शरे में सुसराल के अन्दर ज़ुल्म सहने वाली ख़वातीन की भी एक ता'दाद मिलेगी।

सास बहू का झगड़ा निमटाने का नुस्ख़ा : **सास** अगर डांट डपट करती हो तो "बहू" को चाहिये कि सिर्फ़ो सिर्फ़ सब्र करे, जवाबन एक लफ़्ज़ भी न कहे और अपने **शौहर** को शिकायत भी न करे, मुंह भी न चढ़ाए, और अपने बच्चों को झाड़ कर या बरतन वग़ैरा पछाड़ कर उन पर भी ग़ुस्सा न निकाले और मयके में भी कुछ न बताए, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आहिस्ता आहिस्ता घरेलू मसाइल ह़ल हो जाएंगे। इसी त़रह़ अगर कोई **बहू** अपनी "सास" से झगड़ा करती हो तो सास को चाहिये कि बिल्कुल जवाबी कारवाई न करे, सिर्फ़ ख़ामोशी इख़्तियार करे, घर के किसी फ़र्द ह़त्ता कि अपने **बेटे** को भी शिकायत न करे। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم इस कहावत : "एक चुप सो सुख" के मुत़ाबिक़ सुख चैन पाएगी। जी हां ! अगर सह़ीह़ मा'नों में सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ के इस "नुस्ख़े" पर अ़मल किया गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم **जल्द ही सास बहू की लड़ाई ख़त्म हो जाएगी और घर अम्न का गहवारा** (या'नी राह़तों भरा) **बन जाएगा।**

ख़ामोशी की बरकत से दीदारे मुस्त़फ़ा : **एक** इस्लामी बहन ने दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा ख़ामोशी की अहम्मिय्यत पर मब्नी सुन्नतों भरे बयान

https://www.dawateislamiindia.org/

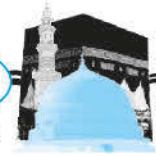

की ऑडियो केसिट सुन कर ख़ामोश रहना शुरूअ़ कर दिया, तीन ही दिन में इन को अन्दाज़ा हो गया कि पहले वोह किस क़दर फ़ालतू बातें किया करती थीं ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيم ख़ामोशी की बरकत से इन्हें **अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आने लगे,** फ़ुज़ूल बातों से बचने की कोशिश के तीसरे दिन इन्हों ने मक्तबतुल मदीना की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की एक मज़ीद ऑडियो केसिट बनाम "इत़ाअ़त किसे कहते हैं" सुनी। रात जब सोईं तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيم केसिट में बयान कर्दा एक वाक़िआ़ इन्हें ख़्वाब में दिखाई देने लगा ! "जंग का नक़्शा था, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुश्मन की जासूसी के लिये अपने प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه को रवाना करते हैं, वोह कुफ़्फ़ार के ख़ैमों के पास पहुंचते हैं तो उन्हें कुफ़्फ़ार के सरदार ह़ज़रते अबू सुफ़्यान (जो अभी तक मुसल्मान नहीं हुए थे) खड़े हुए नज़र आते हैं, मौक़अ़ ग़नीमत जानते हुए ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه कमान पर तीर चढ़ा लेते हैं कि उन्हें सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह हुक्म याद आता है कि "कुफ़्फ़ार को ख़बर न हो" चुनान्चे अपने प्यारे आक़ा, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **इत़ाअ़त** (या'नी फ़रमां बरदारी) करते हुए तीर चलाने से बाज़ रहते हैं, फिर ह़ाज़िर हो कर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में कारकर्दगी पेश करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيم **इस ख़्वाब में इन इस्लामी बहन को सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **और दो सह़ाबए किराम** رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا **की साफ़ साफ़ ज़ियारत नसीब हुई,** बाक़ी सब मनाज़िर धुंदले (BLUR) नज़र आ रहे थे।" اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सिर्फ़ तीन दिन की फ़ुज़ूल गोई से बचने की कोशिश से इन पर आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बहुत बड़ा करम हो गया, इन का कहना था : **बस मेरी तमन्ना है कि कभी भी मेरी ज़बान से कोई फ़ालतू लफ़्ज़ न निकले।**

अल्लाह ! करूं मैं न कभी फ़ालूत बातें
बस ज़िक्र में गुज़रें मेरे दिन और मेरी रातें

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

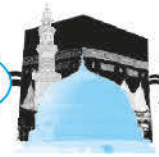

ज़बान की आफ़तें बहुत ज़ियादा हैं : **सह़ाबिये** रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया कि ज़बान को हर चीज़ से ज़ियादा क़ाबू में रखने की ज़रूरत है, (क्यूं कि ज़बान की आफ़तें बहुत ज़ियादा हैं) इन्सान के सर गुनाहों का बोझ लदवाने में ज़बान सब आ'ज़ा (या'नी PARTS) से बढ़ कर है। गुनाहों से बचाना सब आ'ज़ा को ज़रूरी है लेकिन (दीगर आ'ज़ा के मुक़ाबले में) ज़बान की देखभाल और इस पर क़ाबू पाना सब से बढ़ कर अहम व ज़रूरी है।

उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ फूट फूट कर रोए : **ह़ज़रते** अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने सुना कि एक आ़लिम साह़िब ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सामने कहने लगे : "ख़ामोश आ़लिम" भी बोलने वाले आ़लिम ही की त़रह़ होता है। फ़रमाया : मेरा ज़ेह्न येह है कि बोलने वाला आ़लिम क़ियामत के दिन चुप रहने वाले आ़लिम से अफ़्ज़ल होगा इस लिये कि बोलने वाले आ़लिम का नफ़्अ़ लोगों को पहुंचता है जब कि चुप रहने वाले आ़लिम को सिर्फ़ ज़ाती फ़ाएदा मिलता है। वोह आ़लिम साह़िब बोले : "या अमीरल मुअमिनीन ! क्या आप बोलने के फ़ितनों से ना वाक़िफ़ हैं ?" ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه येह सुन कर फूट फूट कर रोए। (اَلصَّمت ج۷ص۳۴۵قول نمبر ۶۴۸) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ह़िकायत की वज़ाह़त : **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** हमारे बुज़ुर्गों की एह़तियातें और जज़्बए ख़ौफ़े ख़ुदा मरह़बा ! अलबत्ता इस बात में कोई शक नहीं कि मोह़तात़ उ़लमाए दीन का वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाना, शर्ई अह़काम बताना, मुबल्लिग़ीन का सुन्नतों भरा बयान करना, नेकी की दा'वत देना, ख़ामोशी के मुक़ाबले में अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है। मगर उन आ़लिम साह़िब का ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में इ़ब्रत के लिये येह अ़र्ज़ करना कि "क्या आप बोलने के फ़ितनों से ना वाक़िफ़ हैं ?" अपनी जगह दुरुस्त था और अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का

https://www.dawateislamiindia.org/

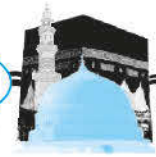

ख़ौफ़े ख़ुदा से ज़ारो क़ितार रोना भी उन आ़लिमे दीन के उन अल्फ़ाज़ की तह तक पहुंचने की वज्ह से था। वाक़ेई अच्छा बोलना अगर्चे मख़्लूक़ के लिये नफ़्अ़ बख़्श है लेकिन ख़ुद बोलने वाले के लिये इस में कई ख़त़रात मौजूद हैं मसलन अगर अच्छा मुबल्लिग़ है तो अपनी ख़ुश बयानी और गुफ़्तगू की रवानी पर दूसरों की त़रफ़ से मिलने वाली दादो तह़सीन के सबब या सिर्फ़ अपनी सलाहिय्यत पर घमन्ड (या'नी तकब्बुर) के बाइ़स या अपने आप को "**कुछ**" समझने और दूसरों को ह़क़ीर (या'नी घटिया) जानने या सिर्फ़ नफ़्सानिय्यत की वज्ह से दूसरों पर धाक बिठाने और अपनी वाह वा करवाने की ख़ातिर मुश्किल या ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ व मुह़ावरे वग़ैरा बोलते रहने वग़ैरा वग़ैरा फ़ितनों में पड़ सकता है। अगर अ़रबी बोलचाल पर उ़बूर हुवा तो बात व बयानात में अपनी अ़रबी दानी का सिक्का जमाने की ख़ातिर ख़ूब अ़रबी मक़ूलों वग़ैरा के इस्ति'माल के फ़ितने में मुब्तला हो सकता है, इसी त़रह़ जिस की आवाज़ अच्छी हो वोह भी ख़त़रों में घिरा रहता है, चूंकि लोग अक्सर ऐसों की ता'रीफ़ करते हैं जिस पर "फूल" कर उस के मग़रूर हो जाने, अच्छी आवाज़ को **अल्लाह** पाक की अ़त़ा समझने के बजाए अपना कमाल समझ बैठने वग़ैरा ग़लतियों का ख़दशा (या'नी डर) रहता है। तो उन आ़लिमे दीन का "बोलने" के मुतअ़ल्लिक़ ख़बरदार करना दुरुस्त है और वाक़ेई जो मुबल्लिग़ बयान की जाने वाली बुरी सिफ़ात रखता हो उस का बोलना उस के अपने ह़क़ में बहुत बड़ा फ़ितना और बरबादिये आख़िरत का सामान है अगर्चे मख़्लूक़ को उस से नफ़्अ़ पहुंचता हो।

मुतअस्सिर करने के लिये बातचीत के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ इख़्तियार करना :

लोगों को अपने से मुतअस्सिर करने के लिये बना सजा कर बातें करना और यूं उन्हें अपना मो'तक़िद (या'नी अ़क़ीदत मन्द) बनाना बहुत ज़ियादा बुरा काम है, अब जो ह़दीसे पाक बयान की जा रही है इस से वोह लोग दर्स ह़ासिल करें जो अगर्चे ब ज़ाहिर नेक भी होते हैं लेकिन हर वक़्त "मैं मैं" करते रहते हैं और लोगों को अपनी ज़ात का गिरवीदा करने की कोशिश करते रहते हैं।

https://www.dawateislamiindia.org/

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने बात कहने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ इस लिये सीखे कि इस के ज़रीए लोगों के दिलों को क़ैद करे (या'नी लोगों को अपना अ़क़ीदत मन्द बनाए), **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उस के न फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल।" (ابوداؤد ج٤ ص٣٩١ حديث ٥٠٠٦)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे मुबारका की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : एक मज़्मून को मुख़्तलिफ़ इ़बारतों से बयान करना, अच्छी इ़बारत बोलना, झूटी बात सच्ची कर के दिखाना या'नी जो आ़लिम लच्छेदार गुफ़्तगू ज़न्नाटे की तक़रीरें करना इस लिये सीखे कि लोग उस के जाल में फंस जाएं, लोग उस के मो'तक़िद (या'नी अ़क़ीदत मन्द) हो जावें। (मिरआत, जि. 6, स. 439)

बातें भी ज़ियादा ख़त़ाएं भी ज़ियादा : **बातूनी** शख़्स को झूट, ग़ीबत, चुग़ली, लोगों को गाली देना वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों में मुब्तला हो जाने का ख़त़रा रहता है। इसी त़रह़ मालदार शख़्स को दौलत ज़ियादा होने की वज्ह से ज़ुल्म व तकब्बुर वग़ैरा गुनाहों में पड़ने का ख़त़रा रहता है। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि (1) जो ज़ियादा बोलता होगा उस की ग़लतियां भी ज़ियादा होंगी (2) जिस का माल ज़ियादा होगा उस के गुनाह भी ज़ियादा होंगे और (3) जिस के अख़्लाक़ बुरे होंगे वोह मुब्तलाए अ़ज़ाब होगा। (تنبیہ الغافلین ص١١٧)

जैसा सफ़र, वैसा ज़ादे सफ़र होना चाहिये : **मश्हूर** सह़ाबी ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه एक बार का'बतुल्लाह शरीफ़ के पास खड़े हो कर फ़रमाने लगे : जो मुझे जानता है वोह तो जानता ही है और जो नहीं जानता वोह जान ले कि मैं जुन्दुब बिन जुनादा अबू ज़र ग़िफ़ारी हूं, एक हमदर्दो मेहरबान मुसल्मान भाई के पास आओ ! लोग आस पास जम्अ़ हो गए। तो फ़रमाने लगे : लोगो ! तुम में से कोई शख़्स जब दुन्या के किसी शह्र के सफ़र का इरादा करता है तो ज़ादे राह (या'नी सामाने सफ़र) के बिग़ैर सफ़र नहीं करता तो वोह शख़्स कैसा है जो आख़िरत का सफ़र बिला ज़ादे राह करना चाहता है ? लोगों ने पूछा : ऐ अबू ज़र ! हमारा ज़ादे सफ़र क्या होना चाहिये ? फ़रमाया : "रात के अंधेरे में दो रक्अ़त नमाज़ क़ब्र की वह़शत (या'नी घबराहट) से बचने के लिये,

https://www.dawateislamiindia.org/

और सख़्त गरमी के रोज़े क़ियामत के दिन के लिये और मसाकीन पर सदक़ा करना ताकि तुम को सख़्त दिन के अ़ज़ाब से नजात मिले और दूसरे बड़े बड़े उमूर के लिये ह़ज करना। दुन्या को दो ह़िस्सों में तक़्सीम कर लो, एक ह़िस्सा त़लबे दुन्या के लिये और एक ह़िस्सा त़लबे आख़िरत के लिये। इस के इ़लावा तीसरा ह़िस्सा बनाना मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है, मुफ़ीद नहीं। इसी त़रह़ अपनी बातचीत भी दो त़रह़ की बना लो, एक वोह जो तुम्हारी दुन्या में काम दे, दूसरी वोह जो आख़िरत में काम आए और तीसरी मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है मुफ़ीद नहीं।" फिर फ़रमाने लगे : "आह! मुझे उस दिन के ग़म ने हलाक कर दिया है जिस की मेरे पास कोई तलाफ़ी (या'नी इ़लाज) नहीं।" अ़र्ज़ किया गया : वोह क्या है? फ़रमाया : "मेरी उम्मीदें मेरी उ़म्र से भी तजावुज़ कर (या'नी आगे बढ़) गईं और मैं अपने अ़मल से ग़ाफ़िल हो गया हूं।" (تنبیہ الغافلین ص۱۱۸)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه निहायत ही परहेज़ गार होने के बा वुजूद अपने बारे में इन्किसारन फ़रमा रहे हैं कि "मैं अपने अ़मल से ग़ाफ़िल हो गया हूं।" तो फिर हमारा क्या बनेगा? कि हम तो कोई नेकी कर भी नहीं पाते और अगर टूटी फूटी इ़बादत कर भी डाली तो शैत़ान दिल में येह बात डाल देता है कि तू बहुत नेक है तू शरीफ़ आदमी है और शैत़ान की बातों में आ कर हम भी इस ख़ुश फ़हमी में मुब्तला हो जाते हैं कि हां वाक़ेई हम नेक आदमी हैं। इस वाक़िए़ से ख़ुसूसन हमें इन्किसार व आ़जिज़ी का दर्स ह़ासिल करना चाहिये कि ख़्वाह हम कितने ही नेक काम करें, ख़ुद को गुनहगार ही तसव्वुर करना चाहिये।

घर में सुन्नतों भरा माह़ोल बनाने में ख़ामोशी का किरदार : ऐ आ़शिक़ाने रसूल! बे ज़रूरत बात, हंसी मज़ाक़ और तू तड़ाक़ की आ़दात निकाल देने से घर में भी आप का वक़ार बुलन्द होगा और जब घर के अफ़राद आप के सन्जीदा पन से मुतअस्सिर होंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم उन के दिल पर आप की "नेकी की दा'वत" जल्द असर करेगी और घर में सुन्नतों भरा **माह़ोल** बनाने में आसानी हो जाएगी। चुनान्चे "**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ख़ामोशी

https://www.dawateislamiindia.org/

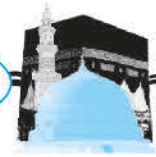

की अहम्मिय्यत पर किया हुवा एक **सुन्नतों भरा बयान** सुन कर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيم एक बातूनी इस्लामी भाई ने **ख़ामोशी** की आ़दत डालनी शुरूअ़ कर दी, سُبْحٰنَ الله ! इस का उन्हें फ़ाएदा भी पहुंचने लगा, "अबुल फ़ुज़ूल" होने की वज्ह से घर के अफ़राद इन से बदज़न थे मगर जब से **चुप रहना** शुरूअ़ किया है, घर में इन की "पोज़ीशन" बन गई है और ख़ुसूसन इन की अम्मीजान जो कि इन से बेज़ार रहा करती थीं अब ख़ुश हो गई हैं, चूंकि पहले वोह बहुत "बक्की" (या'नी बक बक के आ़दी) थे लिहाज़ा इन की अच्छी बातें भी बे असर हो जाती थीं मगर अब वोह अम्मीजान को जब भी कोई सुन्नत वग़ैरा बताते हैं तो वोह न सिर्फ़ दिलचस्पी से सुनती हैं बल्कि अ़मल करने की कोशिश भी करती हैं।

बढ़ता है ख़मोशी से वक़ार ऐ मेरे प्यारे

घर वाले भी हो जाएंगे ख़ुश आप से सारे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैर ज़रूरी सुवालात की आफ़ात : **ह़ज़रते** इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बे फ़ाएदा गुफ़्तगू में से तुम्हारा दूसरे से ग़ैर ज़रूरी चीज़ के बारे में सुवाल करना भी है और इस त़रह़ का सुवाल कर के तुम अपना भी वक़्त ज़ाएअ़ करोगे और दूसरे को भी जवाब देने के ज़रीए वक़्त ज़ाएअ़ करने पर मजबूर कर दोगे और येह भी उस वक़्त है जब सुवाल करने में कोई आफ़त न हो वरना अक्सर सुवालात में उ़मूमन आफ़ात होती हैं। मिसाल के त़ौर पर तुम किसी से उस की इबादत के बारे में सुवाल करते हुए पूछो कि क्या तुम रोज़ादार हो ? अगर उस ने हां में जवाब दिया तो वोह अपनी इबादत का इज़्हार करने वाला हुवा और यूं वोह रियाकारी में पड़ सकता है। अगर वोह रियाकारी में न भी पड़े तब भी उस की इबादत पोशीदा (या'नी छुपी हुई) इबादत के रजिस्टर से ख़ारिज हो जाएगी और पोशीदा इबादत,

https://www.dawateislamiindia.org/

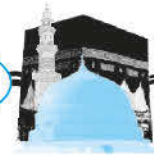

अलानिया (या'नी खुल्लम खुल्ला) इबादत से कई दरजे फ़ज़ीलत रखती है और अगर वोह कहता है कि नहीं तो वोह झूट बोलने वाला होगा और अगर वोह ख़ामोश रहे तो वोह तुम्हें ह़क़ीर समझने वाला हुवा और इस सबब से तुम अज़िय्यत उठाओगे और अगर वोह जवाब देने में टाल मटोल से काम ले तो उसे मशक़्क़त उठानी पड़ेगी तो तुम एक सुवाल के सबब उसे रियाकारी या झूट बोलने या ह़क़ीर जानने या जवाब को टालने की ज़द में ले आए।

ऐसे ही तुम्हारा उस की दीगर इबादात के बारे में सुवाल करना है और इसी त़रह़ गुनाह और हर उस चीज़ के बारे में सुवाल करना है जिसे वोह लोगों से छुपाता और उसे बताने से शरमाता है। इसी त़रह़ अगर कोई दूसरे से गुफ़्त्गू कर रहा हो और बा'द अज़ गुफ़्त्गू तुम उस से पूछो कि तुम क्या कह रहे थे और किस बारे में बात कर रहे थे ? और ऐसे ही रास्ते में तुम किसी शख़्स को देख कर उस से दरयाफ़्त करो कि तुम कहां से आ रहे हो ? तो बा'ज़ अवक़ात कोई ऐसी रुकावट ह़ाइल होती है जो उस को बताने से रोकती है और अगर बयान कर देता है तो उसे अज़िय्यत (या'नी परेशानी) होती है और शर्म आती है और अगर वोह सच नहीं बोलता तो झूट में जा पड़ता है जिस का सबब तुम बनते हो। ऐसे ही तुम कोई ऐसा मस्अला पूछो जिस की तुम्हें ह़ाजत न हो और जिस से सुवाल किया गया होता है बा'ज़ अवक़ात उस का नफ़्स **ला अदरी** (या'नी मैं नहीं जानता) कहने पर राज़ी नहीं होता और यूं वोह मा'लूमात न होने के बा वुजूद जवाब दे देता है। (ग़ैर ज़रूरी सुवालात की मिसालें आगे आ रही हैं) (احیاء العلوم ج۳ص۱۴۰)

सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ह़िक्मत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : आप की **ह़िक्मत** क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "जिस चीज़ की मुझे ज़रूरत नहीं होती उस के बारे में सुवाल नहीं करता और जो चीज़ मुझे फ़ाएदा नहीं देती उस में नहीं पड़ता।" (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 345)

https://www.dawateislamiindia.org/

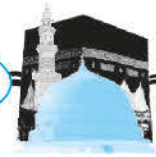

ख़ामोशी दानाई है (वाक़िआ) : बे फ़ाएदा गुफ़्तगू से मेरी मुराद इस क़िस्म के सुवालात नहीं क्यूं कि इन से तो गुनाह या ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचता है। **बे फ़ाएदा गुफ़्तगू** की मिसाल वोह रिवायत है जो ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल (या'नी बयान की गई) है। चुनान्चे **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में एक बार ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ह़ाज़िर हुए, उस वक़्त आप عَلَیْہِ السَّلَام ज़िरह (या'नी फ़ोलाद का जालीदार कुरता जो लड़ाई में पहनते थे) बना रहे थे और चूंकि आप ने इस से पहले ज़िरह नहीं देखी थी इस लिये उसे देख कर तअ़ज्जुब करने लगे और इस बारे में सुवाल करना चाहा तो "ह़िक्मत" के सबब सुवाल करने से बाज़ रहे। जब ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़िरह बनाने से फ़ारिग़ हुए तो खड़े हुए और उसे पहन कर इर्शाद फ़रमाया : "जंग के लिये ज़िरह क्या ही अच्छी चीज़ है।" येह सुन कर ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने कहा : "**ख़ामोशी** ह़िक्मत है मगर इस को इख़्तियार करने वाले कम हैं।" या'नी सुवाल के बिग़ैर ही उस के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म हो गया और सुवाल की ज़रूरत न रही। (احیاء العلوم ج۳ ص۱٤۱, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 347)

बे फ़ाएदा गुफ़्तगू किसे कहते हैं ? : **ह़ज़रते** इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बयान किया गया है कि ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ एक साल तक ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में इस इरादे से ह़ाज़िर होते रहे कि इन्हें ज़िरह के बारे में बिग़ैर सुवाल किये मा'लूम हो जाए। येह और इस त़रह़ के सुवालात में जब नुक़्सान और ऐ़ब खुलना न हो नीज़ रियाकारी और झूट में मुब्तला होना न पाया जाए तो येह बे फ़ाएदा गुफ़्तगू है और इसे छोड़ देना इस्लाम की ख़ूबी से है। येह **बे फ़ाएदा गुफ़्तगू** की ता'रीफ़ थी।

(एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 347)

ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम के बारे में मा'लूमात : **ह़ज़रते** लुक़्मान ह़कीम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की शान बहुत बुलन्दो बाला है, क़ुरआने करीम पारह 21 में आप के नाम पर एक पूरी सूरत "**सूरए**

https://www.dawateislamiindia.org/

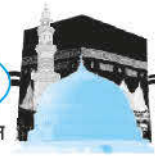

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

लुक़्मान'' के नाम से मौजूद है। **अल्लाह** पाक **सूरए लुक़्मान** आयत 12 में हिक्मते लुक़्मान बयान करते हुए फ़रमाता है :

وَلَقَدْ اٰتَیْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَ مَنْ یَّشْكُرْ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ ﴿۱۲﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और बेशक हम ने लुक़्मान को हिक्मत अ़ता फ़रमाई कि **अल्लाह** का शुक्र अदा कर और जो शुक्र अदा करे तो वोह अपनी ज़ात के लिये शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो बेशक **अल्लाह** बे परवाह है, ह़म्द के लाइक़ है।

लुक़्मान ह़कीम कौन थे ? : सिरातुल जिनान जिल्द 7 सफ़्हा 483 पर है : ह़ज़रते वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का कहना है कि ह़ज़रते लुक़्मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के भान्जे थे जब कि (कुरआने करीम के) मुफ़स्सिर मक़ातिल (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) ने कहा कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़ाला के बेटे थे। आप ने ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़माना पाया और उन से इ़ल्म ह़ासिल किया। ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ए'ला ने नुबुव्वत से पहले फ़तवा दिया करते थे और जब आप (या'नी ह़ज़रते दावूद) عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नुबुव्वत के मन्सब पर फ़ाइज़ हुए (या'नी ए'लाने नुबुव्वत किया) तो ह़ज़रते लुक़्मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़तवा देना बन्द कर दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के नबी होने में इख़्तिलाफ़ है, अक्सर उ़लमा इसी त़रफ़ हैं कि आप ह़कीम (या'नी साहि़बे हि़क्मतो दानाई) थे नबी न थे। (تفسیر بغوی ج۳ ص۴۲۳، تفسیر مدارک ص۹۱۷)

ह़ज़रते लुक़्मान जन्नत के सरदारों में से हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सूडानियों की सोह़बत इख़्तियार करो क्यूं कि उन में से तीन ह़ज़रात अहले जन्नत के सरदारों में से हैं : (1) ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ, (2) ह़ज़रते नजाशी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, (3) मुअज़्ज़िने (रसूल) ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ।''

(معجم کبیر ج ۱۱ ص ۱۵۸ حدیث ۱۱۴۸۲)

https://www.dawateislamiindia.org/

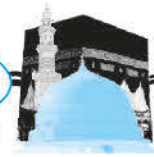

हिक्मत की 4 ता'रीफ़ात : **हिक्मत** की कई ता'रीफ़ात (DEFINITIONS) हैं जिन में से "सिरातुल जिनान" जिल्द 7 सफ़हा 484 पर येह चार बयान की गई हैं : **(1)** हिक्मत अ़क़्ल और फ़ह्म (या'नी समझ) को कहते हैं **(2)** हिक्मत वोह इ़ल्म है जिस के मुताबिक़ अ़मल किया जाए **(3)** हिक्मत मा'रिफ़त (या'नी पहचान) और कामों में पुख़्तगी (या'नी मज़बूती) को कहते हैं **(4)** हिक्मत ऐसी चीज़ है कि **अल्लाह** पाक इसे जिस के दिल में रखता है येह उस के दिल को रोशन कर देती है। (تفسیر خازن ج۳ص۴۷۰)

हज़रते लुक़्मान तिब (या'नी इलाज) के भी हकीम थे : **हज़रते** अ़ल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "रूहुल बयान" में लिखते हैं : हज़रते लुक़्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तिब (Medical) और हक़ीक़ी इल्मो हिक्मत के हकीम थे। (تفسیر روح البیان ج۷ص۷۳)

वोशरूम में देर तक बैठने के नुक़्सानात : **हज़रते** इक्रमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : इन का आक़ा इस्तिन्जा ख़ाने (या'नी टॉयलेट, Toilet) में गया तो देर लगा दी, हज़रते लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आवाज़ दी : यहां देर तक बैठने से जिगर को नुक़्सान पहुंचता है और बवासीर का मरज़ पैदा होता है और गरमी सर को चढ़ जाती है, थोड़ी देर के लिये इस्तिन्जा ख़ाने में बैठो और बहुत जल्द फ़ारिग़ हो कर आ जाओ। हज़रते लुक़्मान के इस नुस्ख़े को लिख कर दरवाज़े पर लटका दिया गया। (تفسیر دُرِّمنثور ج۶ص۵۱۰)

ज़बान व दिल बिगड़ जाएं तो.....: **हज़रते** लुक़्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के आक़ा ने कहा : बकरी ज़ब्ह़ कर के उस के सब से बेहतरीन दो हिस्से ले आइये, आप ज़बान व दिल निकाल कर ले गए। कुछ दिनों के बा'द आक़ा ने उन से दोबारा कहा : बकरी ज़ब्ह़ कर के उस के सब से बद तरीन हिस्से ले आइये, आप ने फिर ज़बान व दिल ला कर हाज़िर कर दिये, आक़ा के पूछने पर हज़रते लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कहा : अगर ज़बान व दिल सहीह़ हों तो सब से बेहतर हैं और अगर येह बिगड़ जाएं तो इन से बढ़ कर बुरी चीज़ कोई नहीं। (تفسیر طبری ج۱۰ص۲۰۹)

https://www.dawateislamiindia.org/

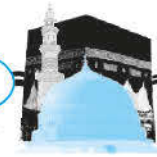

फ़ुज़ूल सुवालात की मिसालें : ❁ बिग़ैर ज़रूरत पूछना : येह कितने में लिया ? वोह कितने में मिला ? फ़ुलां जगह प्लोट का क्या भाव चल रहा है ? ❁ किसी के मकान में जाना हुवा या किसी ने नया मकान लिया तो सुवाल करना कि कितने का लिया ? कितने कमरे हैं ? किराया कितना है ? मकान मालिक (LANDLORD) कैसा है ? (मकान मालिक के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल बसा अवक़ात مَعَاذَاللہ ग़ीबत व तोहमत का दरवाज़ा खोलने का सबब बन सकता है मसलन कभी कुछ इस त़रह़ गुनाहों भरा जवाब भी मिल सकता है : हमारा मकान मालिक बहुत सख़्त मिज़ाज/ बे रह़्म/ टेढ़ा/ खोचड़ा/ ख़र दिमाग/ वायड़ा/ कन्जूस है) वग़ैरा वग़ैरा ❁ मुलाक़ाती से पूछना : आप के कितने बच्चे हैं ? बड़े बेटे (या बेटी) की उ़म्र कितनी है ? उस की मंगनी (या शादी) कर ली या नहीं ? ❁ इसी त़रह़ जब कोई नई दुकान, कार या स्कूटर वग़ैरा ख़रीदे तो बिला वज्ह ख़रीदने वाले से उस का भाव, पाएदारी (या'नी मज़बूत़ी), नक़्द, उधार, क़िस्त़ों वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करना ❁ बेचारा मरीज़ जिस से बोला तक न जाता हो उस से इ़यादत करने वाले का बिला ज़रूरत त़रह़ त़रह़ के सुवालात और दवाओं वग़ैरा की तफ़्सीलात मा'लूम करना और अगर **ऑपरेशन** हुवा हो तो ज़ख़्म के टांकों (STITCHES) की ता'दाद तक पूछ लेना, ह़त्ता कि "शर्म की जगह" का मस्अला हो तब भी बा'ज़ उस की पूछगछ करते हुए नहीं शरमाते। इस त़रह़ की फ़ुज़ूलिय्यात में औ़रतें भी मर्दों से किसी त़रह़ पीछे नहीं रहतीं ❁ गर्मी या सर्दी के मौसिम में इस की कमी ज़ियादती के मौक़अ़ पर बिला ज़रूरत इस त़रह़ की बातें करना मसलन गर्मी के मौसिम में बा'ज़ अबुल फ़ुज़ूल का "उफ़! उफ़" करते हुए इस त़रह़ कहना : एक तो आज कल सख़्त गरमी है और ऊपर से बिजली भी बार बार चली जाती है ❁ इसी त़रह़ सर्दियों में अदाकारी के साथ दांत बजाते हुए कहना : आज तो बहुत कड़ाके की सर्दी है ❁ अगर बारिश का मौसिम है तो बिला ज़रूरत इस पर भी तबसिरा करना : मसलन आज कल तो बारिशें बहुत हो रही हैं, हर त़रफ़ पानी खड़ा हो गया है, इन्तिज़ामिया कीचड़ साफ़ करवाने का कोई ख़याल नहीं करती वग़ैरा वग़ैरा ❁ इसी

https://www.dawateislamiindia.org/

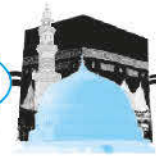

त़रह़ मुल्की और सियासी ह़ालात पर बिला निय्यते इस्लाह़ बे जा तबसिरे, मुख़्तलिफ़ सियासी पार्टियों पर बिला वज्ह तन्क़ीदें ✿ किसी शह्र या मुल्क का सफ़र किया है तो वहां के पहाड़ों और सब्ज़ा ज़ारों की ग़ैर ज़रूरी मन्ज़र कशी, मकानों और सड़कों की तफ़्सीलात का बिला ज़रूरत बयान वग़ैरा वग़ैरा येह सब फ़ुज़ूल गोई नहीं तो और क्या है ? अलबत्ता येह याद रहे कि फ़ुज़ूल बातों की जो मिसालें दी गई हैं उन के मुत़ाबिक़ अगर हम किसी को बातें करता हुवा पाएं तो अपने आप को बद गुमानी से बचाएं क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात जो बातें हमें फ़ुज़ूल लग रही होती हैं वोह कहने वाला किसी दुरुस्त मक़्सद के तह़्त कह रहा होता है जिस के सबब फ़ुज़ूल नहीं रहतीं। मुबाह़ चीज़ें (या'नी जिन में न सवाब हो न गुनाह) अच्छी निय्यत के साथ करने से कारे सवाब बन जाती हैं।

फ़ुज़ूल गो का झूटे मुबालग़े से बचना दुश्वार होता है : **येह** ज़ेह्न में रहे कि फ़ुज़ूल बोलना गुनाह नहीं मगर फ़ुज़ूल बात उसी सूरत में फ़ुज़ूल होती है जब कि कम ज़ियादा किये बिग़ैर 100 फ़ीसद सह़ीह़ सह़ीह़ कही जाए। तश्वीश (या'नी परेशानी) की बात येह है कि इस त़रह़ की गुफ़्तगू को नाप तोल कर दुरुस्त बयान करना कि "फ़ुज़ूल" की ह़द से आगे न बढ़े येह बहुत मुश्किल काम होता है, बारहा झूटा मुबालग़ा (या'नी अस्ल के ख़िलाफ़ ह़द से ज़ियादा बढ़ा चढ़ा कर बयान करना) हो जाता है, कभी फ़ुज़ूल बोलने वाला ग़ीबतों, तोहमतों और नाह़क़ दिल आज़ारियों वग़ैरा के दलदल में भी जा पड़ता है। लिहाज़ा आफ़ियत चुप रहने ही में है कि **एक चुप सो सुख।**

अ़लाक़े में दीनी माह़ोल बनाने में ख़ामोशी का किरदार : **एक** इस्लामी भाई "**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ख़ामोशी के मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतों भरा बयान सुनने से पहले दीनी माह़ोल से वाबस्ता होने के बा वुजूद **बहुत फ़ुज़ूल गो** थे, ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की भी कोई ख़ास तरकीब न थी। जब इन्हों ने **चुप रहने** की कोशिश शुरूअ़ की, **रोज़ाना एक हज़ार दुरूद शरीफ़ पढ़ना** नसीब होने लगा, इस से पहले इन का अनमोल वक़्त इधर उधर की फ़ुज़ूल बह़सों में बरबाद हो जाता था। इन्हों ने ख़ामोशी की कोशिश शुरूअ़ करने के बा'द बारह दिन में पढ़े हुए 12 हज़ार दुरूद शरीफ़ का सवाब मुझ (सगे मदीना को) तोह़फ़तन पेश (या'नी

https://www.dawateislamiindia.org/

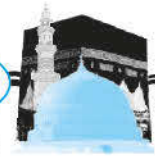

ईसाले सवाब) किया। इन के बातूनी मिज़ाज के बाइस होने वाली उलटी सीधी बातों की नुहूसत से इन के ज़ैली हल्क़े में **दा'वते इस्लामी** के दीनी काम को भी नुक़्सान पहुंच जाता था। पिछले दिनों इन के हल्क़े में आपस का इख़्तिलाफ़ निमटाने के लिये **मदनी मश्वरा** हुवा, हैरत बालाए हैरत कि इन की **ख़ामोशी** के सबब اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيم सारा झगड़ा ब आसानी ख़त्म हो गया। इन के "निगरान" ने ख़ुशी का इज़्हार करते हुए इन से बे तकल्लुफ़ी में कुछ इस त़रह़ फ़रमाया : "मुझे बहुत डर लग रहा था कि शायद आप बहूस शुरूअ़ करेंगे और बात का बतंगड़ बन जाएगा लेकिन आप के **ख़ामोशी** अपनाने की ने'मत ने हमें राह़त बख़्शी।" दर अस्ल बात येह है कि इस से क़ब्ल इन की फ़ुज़ूल बह़स और बक बक की आ़दते बद के सबब "मदनी मश्वरे" वग़ैरा का माह़ोल ख़राब हो जाया करता था।

दीनी कामों के लिये ख़ामोशी : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? फ़ुज़ूल बातों से बचना दीनी कामों के लिये भी किस क़दर मुफ़ीद है, **लिहाज़ा जो सुन्नतों का मुबल्लिग़ है उसे तो ख़ुसूसन हर ह़ाल में सन्जीदा और कम गो होना चाहिये।** जो बड़बड़िया, बातूनी, दूसरों की बात काटने वाला, बार बार बीच में बोल पड़ने वाला, बात बात पर बह़सो तकरार करने और "बाल की खाल" उतारने वाला हो उस की वज्ह से दीन के काम को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा रहता है, क्यूं कि **ख़ामोशी** जो कि शैत़ान को मार भगाने का "बेहतरीन" हथियार है इस से येह बातूनी शख़्स महरूम है। ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه को वसिय्यत करते हुए मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ामोशी की कसरत को लाज़िम कर लो कि इस से शैत़ान दफ़्अ़ होगा और तुम्हें दीन के कामों में मदद मिलेगी।" (شُعَبُ الْاِیمان ج٤ ص ٢٤٢ حدیث ٤٩٤٢)

अल्लाह इस से पहले ईमां पे मौत दे दे
नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 178)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

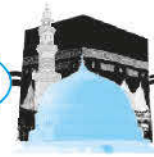

बे वुक़ूफ़ बे सोचे बोलता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अ़क़्लमन्द पहले बात को तोलता है फिर मुंह से बोलता है और बे वुक़ूफ़ जो कुछ ज़बान पर आए बोलता चला जाता है, चाहे इस की वज्ह से ज़लील ही क्यूं न होना पड़े। चुनान्चे **हज़रते** ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : लोगों में मश्हूर था कि **अ़क़्लमन्द** की ज़बान उस के दिल के पीछे होती है वोह बात करने से पहले अपने दिल से रुजूअ़ करता है या'नी ग़ौर करता है कि कहूं या न कहूं ? अगर बात फ़ाएदे वाली होती है तो कहता है वरना चुप रहता है। जब कि **बे वुक़ूफ़** की ज़बान उस के दिल के आगे होती है कि इधर या'नी दिल की त़रफ़ रुजूअ़ करने की नौबत ही नहीं आती बस जो कुछ ज़बान पर आए कह देता है। (تنبیهُ الغافِلین ص١١٥ سے خلاصہ)

ज़बान संभालो सब काम संभल जाएंगे : जो ज़बान को संभालने में काम्याब हो जाता है, उस के सारे काम संभल जाते हैं। ह़ज़रते यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जिस की ज़बान ठीक रहती है उस के सब काम ठीक रहते हैं।

(एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 3, स. 339, احیاء العلوم ج٣ ص١٣٧)

पहले तोलो, बा'द में बोलो : जिस त़रह़ ख़रीदारी के वक़्त बे परवाई के सबब धोका खा जाने वाला पछताता है, इसी त़रह़ ज़बान को बिला ज़रूरत चलाने वाला भी पछताता है, एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अपनी बात को माल की त़रह़ मह़फ़ूज़ रखो और जब (उस माल या'नी बात को) ख़र्च करना चाहो तो ख़ूब सोच समझ कर ख़र्च करो।"

बोलने से पहले तोलने का त़रीक़ा : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! याद रखिये ! **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक ज़बान से कभी भी कोई **फ़ालतू लफ़्ज़** अदा न फ़रमाया और न कभी क़ह्क़हा लगाया। काश ! **ख़ामोशी** की सुन्नत भी आ़म हो जाए और हमारी क़ह्क़हा लगाने या'नी ज़ोर ज़ोर से हंसने की आ़दत भी निकल जाए। ऐ काश ! हम "बोलने" से पहले "तोलने" वाले बन जाएं। **तोलने** का

त़रीक़ा येह हो सकता है कि इस से पहले कि अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा हों अपने दिल से सुवाल कर लिया जाए कि इस बोलने का मक़्सद क्या है ? क्या मैं येह किसी को नेकी की दा'वत दे रहा हूं ? क्या येह बात जो मैं बोलना चाहता हूं इस में मेरा या किसी दूसरे का भला और फ़ाएदा है ? क्या इस बात करने में मुझे सवाब मिलेगा ? मेरी बात कहीं ऐसे मुबालग़े (या'नी बढ़ाने चढ़ाने) से पुर तो नहीं जो मुझे झूट में मुब्तला कर दे। झूटे मुबालग़े की मिसाल देते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर एक मरतबा आया और येह कह दिया कि हज़ार मरतबा आया तो **झूटा** है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 519) येह भी सोचे कि मैं कहीं किसी की ख़ुशामद और **झूटी ता'रीफ़** तो नहीं कर रहा ? किसी की **ग़ीबत** तो नहीं हो रही ? मेरी इस बात से किसी का दिल तो नहीं दुख जाएगा ? बोल कर नदामत (या'नी शरमिन्दगी) के सबब रुजूअ़ करने या SORRY कहने की नौबत तो नहीं आएगी ? थूक कर चाटने या'नी जोश में कही हुई बात वापस लेने की ज़रूरत तो नहीं पड़ेगी ? कहीं अपना या किसी दूसरे का **राज़** फ़ाश (या'नी ज़ाहिर) तो नहीं कर बैठूंगा ? बोलने से पहले बात को तोलने में अगर येह बात भी सामने आई कि इस बात में न नफ़्अ़ है न नुक़्सान और न सवाब है न गुनाह, तब भी येह बात बोल देने में एक त़रह़ का नुक़्सान है क्यूं कि ज़बान को इस त़रह़ की फ़ुज़ूल और बे फ़ाएदा गुफ़्तगू के लिये ज़ह़मत देने के बजाए अगर सवाब की निय्यत से (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ कह लिया जाए या दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया जाए तो यक़ीनन इस में फ़ाएदा ही फ़ाएदा है और येह अपने अनमोल वक़्त का जन्नत में ले जाने वाला बेहतरीन इस्ति'माल है, ऐसे अ़ज़ीमुश्शान फ़ाएदे का ज़ाएअ़ होना लाज़िमन नुक़्सान ही है।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 305)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

चुप रहने का त़रीक़ा : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** फ़ुज़ूल गोई गुनाह न सही मगर इस में मह़रूमियां और नुक़्सानात मौजूद हैं लिहाज़ा इस से बचना ही मुनासिब है। काश ! काश ! ऐ काश ! **ख़ामोशी** की आ़दत डालने की सआ़दत मिल जाती। हाथों हाथ ख़ामोशी की ने'मत का ह़ासिल हो जाना ज़रूरी नहीं, इस के लिये ख़ूब कोशिश करनी होगी। जो चुप रहने की आ़दत बनाना चाहे उस को इस बात को सन्जीदा लेना होगा और मायूसी को अपनी डिक्शनरी से निकाल कर ख़ूब कोशिश करनी होगी। ह़ज़रते मुवर्रिक़ इज्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक ऐसा मुआ़मला जिसे मैं 20 साल तक ह़ासिल करने की कोशिश करता रहा लेकिन पा न सका मगर फिर भी उस की त़लब (या'नी मांग) नहीं छोड़ी। पूछा गया : वोह अहम चीज़ क्या है ? फ़रमाया : **ख़ामोशी**। (اَلزُّهد لِلامام اَحمد ص ۳۱۰ قول نمبر ۱۷۶۲) "ख़ामोशी" की आ़दत बनाने के ख़्वाहिश मन्द को चाहिये कि ज़बान चलाने के बजाए मुम्किन हो तो रोज़ाना ज़रूरत की थोड़ी बहुत बातें लिख कर या इशारे से भी कर लिया करे, اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم इस त़रह़ **ख़ामोशी** की आ़दत बनना शुरूअ़ हो जाएगी।

फ़ुज़ूल इशारे का भी ह़िसाब है : **याद रहे** कि फ़ुज़ूल गोई, फ़ुज़ूल निगाही या'नी बे फ़ाएदा इधर उधर नज़र डालना, फ़ुज़ूल मनाज़िर (SCENES) देखना, नॉर्मल हों या डीफ़ सब का फ़ुज़ूल इशारे करना, फ़ुज़ूल आवाज़ें निकालना वग़ैरा वग़ैरा सब का बरोज़े क़ियामत ह़िसाब है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! "दा'वते इस्लामी" की त़रफ़ से नेक बनाने वाले रिसाले : **"नेक आ'माल"** में 53 नम्बर "नेक अ़मल" है : क्या आज आप ने ज़बान को फ़ुज़ूल इस्ति'माल (या'नी वोह गुफ़्तगू जिस से दीनी या दुन्यावी फ़ाएदा न हो) से बचाने की आ़दत बनाने के लिये कुछ न कुछ इशारे से गुफ़्तगू की ? (ज़हे नसीब ! रोज़ाना कम अज़ कम चार बार लिख कर और कम अज़ कम तीन बार इशारे से गुफ़्तगू की हो) **ख़ामोशी** की आ़दत बनाने की कोशिश के दौरान ऐसा भी हो सकता है कि फ़ुज़ूल बातों से बचने की कोशिश में चन्द रोज़ काम्याबी मिली मगर फिर ज़ियादा बातें करने की

https://www.dawateislamiindia.org/

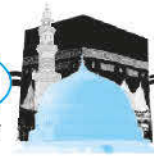

आ़दत पहले ही की त़रह़ हो जाए, अगर ऐसा हो भी जाए तो हिम्मत मत हारिये, बार बार कोशिश कीजिये, जज़्बा सच्चा हुवा तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم कभी न कभी काम्याबी ज़रूर ह़ासिल होगी। जैसा कि अ़रबी मक़ूला (या'नी कहावत) है : اَلسَّعْيُ مِنِّيْ وَالْاِتْمَامُ مِنَ اللّٰه या'नी कोशिश मेरी त़रफ़ से होगी और काम **अल्लाह** पाक मुकम्मल करेगा। एक और अ़रबी मक़ूला है : مَنْ جَدَّ وَجَدَ या'नी जिस ने कोशिश की उस ने पा लिया। **ख़ामोशी** की आ़दत बनाने की मश्क़ (PRACTICE) करने के दौरान अपना चेहरा मुस्कुराता रखना मुनासिब है ताकि किसी को येह न लगे कि आप उस से नाराज़ हैं जभी मुंह "फुलाया" हुवा है। **ख़ामोशी** की कोशिश के दिनों में गुस्सा बढ़ सकता है लिहाज़ा अगर कोई आप का इशारा न समझ पाए तो हरगिज़ उस पर गुस्से का इज़्हार न कीजिये कि कहीं नाह़क़ दिल आज़ारी वग़ैरा का गुनाह न कर बैठें। इशारे वग़ैरा से गुफ़्तगू सिर्फ़ उन्हीं के साथ मुनासिब रहती है जिन के साथ आप की ज़ेह्नी हम आहंगी (या'नी सोच मिलती) हो, वरना अन्जान आदमी हो सकता है कि इशारे वग़ैरा की गुफ़्तगू समझ न आने के सबब आप से नाराज़ हो जाए, लिहाज़ा उस के साथ ज़रूरतन ज़बान से बातचीत कर लीजिये। बा'ज़ सूरतों में ज़बान से बोलना वाजिब भी हो जाता है मसलन मुलाक़ाती के सलाम का जवाब ज़बान से देना वग़ैरा। येह भी याद रहे कि सलाम भी इशारे से नहीं, ज़बान से करना है। इस के इ़लावा भी कई मवाक़ेअ़ ऐसे हैं जिन में ज़बान ही से बोलना होगा। इसी त़रह़ वालिदैन और घर के दीगर अफ़राद को भी तश्वीश होती हो तो ज़रूरतन ज़बान से गुफ़्तगू कीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

पहले "तोलो" बा'द में "बोलो" का फ़ाएदा : **इन्सान** अगर बोलने से क़ब्ल "तोलने" या'नी ग़ौर करने की आ़दत डाले तो हो सकता है उसे अपनी कई **फ़ुज़ूल बातें** ख़ुद ही महसूस होनी शुरूअ़ हो जाएं! सिर्फ़ "फ़ुज़ूल बातें" हों तो अगर्चे गुनाह नहीं मगर कई त़रह़ के नुक़्सानात इन में मौजूद हैं मसलन इन बातों में ज़बान चलाने की ज़ह़मत होती और क़ीमती वक़्त बरबाद होता

https://www.dawateislamiindia.org/

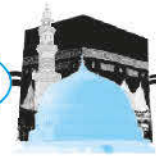

है, अगर उतनी देर ज़िक्रुल्लाह, दुरूद शरीफ़ का विर्द या दीनी मुतालआ कर लिया जाए, या कोई सुन्नत बयान कर दी जाए तो सवाब का अम्बार (या'नी ढेर) लग जाए और फ़ुज़ूल बातों का एक बहुत बड़ा नुक़्सान येह है कि बरोज़े क़ियामत इन का हिसाब देना होगा।

फ़ुज़ूल तज़्किरे : مَعَاذَاللّٰه कहीं दहशत गर्दी की वारिदात हो गई तो बस लोगों को **फ़ुज़ूल बल्कि बा'ज़ सूरतों में गुनाहों भरी बहूस** के लिये एक मौज़ूअ ही हाथ आ गया! हर जगह उसी का तज़्किरा, बे सरो पा क़ियास आराइयां, बे तुके तबसिरे, अट्कल से किसी भी पार्टी या लीडर वग़ैरा पर **तोहमत** लगा देना वग़ैरा। बसा अवक़ात येह गुफ़्तगू लोगों में ख़ौफ़ो हिरास फैलने का बाइस, अफ़्वाहें गर्म होने का सबब और हंगामे बरपा होने की "वज्ह" भी बन सकती हैं, धमाकों और दहशत गर्दियों की वारिदातें सुनने सुनाने में नफ़्स को ख़ूब दिलचस्पी होती है, बसा अवक़ात लब पर दुआइया अल्फ़ाज़ होते हैं मगर क़ल्ब की गहराइयों में **सन्सनी ख़ेज़ ख़बरें** सुनने सुनाने के ज़रीए हज़ (या'नी मज़े) उठाने और लुत्फ़ अन्दोज़ होने का जज़्बा छुपा होता है, काश! नफ़्स की इस शरारत को पहचानते हुए हम दहशत गर्दियों और धमाकों के तज़्किरों में दिलचस्पी लेने से बाज़ आ जाएं। हां मज़्लूमाना शहादत पाने वालों के लिये दुआए मग़्फ़िरत, ज़ख़्मियों और मुतअस्सिरा मुसल्मानों की हमदर्दियों, ख़िदमतों और अम्नो सलामती की दुआओं से गुरेज़ न किया जाए कि येह सवाब के काम हैं। बस जब भी इस तरह की गुफ़्तगू करने सुनने की सूरत पैदा हो तो अपने दिल पर ग़ौर कर लेना चाहिये कि निय्यत क्या है? अगर अच्छी निय्यत पाएं तो उम्दा और बहुत उम्दा है मगर अक्सर इस क़िस्म की गुफ़्तगू का हासिल लुत्फ़ अन्दोज़ी ही पाया जाता है।

बातूनी शख़्स का दिल सख़्त हो जाता है : हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मन्क़ूल है कि **अल्लाह** पाक के ज़िक्र के इलावा कोई भी बात कसरत से न करो वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे और सख़्त दिल **अल्लाह** पाक से दूर होता है लेकिन तुम्हें इस का इल्म नहीं। (تنبیه الغافلین ص۱۱۸)

https://www.dawateislamiindia.org/

हज़रते इमाम मालिक बातूनी शख़्स को समझाया करते : अफ़्सोस ! आज कल अगर कोई "बक बक" करता है तो बा'ज़ लोग उस की हां में हां मिलाते और हंस हंस कर उस की हौसला अफ़्ज़ाई कर रहे होते हैं। याद रखिये ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم दिल व ज़बान दोनों में खरे (या'नी सच्चे) होते थे। चुनान्चे करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेशवा हज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब किसी शख़्स को ज़ियादा बातें करता देखते तो उस से फ़रमाते : "अपनी कुछ बातें अपने पास भी रोक लिया करो (या'नी बातें कम किया करो)।" (تنبیہ المغترین ص ۱۹۰)

ग़ुन्डा शरीफ़ बन गया : ऐ अल्लाह पाक की रिज़ा के त़लब गारो ! जो वाक़ेई सुधरना चाहता है उसे **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में आ जाना चाहिये। एक बड़ी प्यारी "मदनी बहार" पेश की जाती है, सुनिये और झूमिये : **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता होने से पहले एक नौ जवान का उठना बैठना जराइम पेशा अफ़राद के साथ था, बुरी सोह़बत ने रंग दिखाया और येह "गुन्डा गेंग" में शामिल हो गए। लोगों को मारना पीटना, गालियां बकना और जान बूझ कर झगड़े मोल लेना इन का मा'मूल बन गया, येह अपने पास अस्लह़ा भी रखने लगे। काले करतूतों की वज्ह से इन्हें कोई मुंह न लगाता था। घर वाले, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, अहले अ़लाक़ा सभी इन से बेज़ार थे। इस ग़फ़्लत की नींद से बेदारी कुछ यूं नसीब हुई कि इन के अ़लाक़े में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "**दा'वते इस्लामी**" से वाबस्ता एक बुज़ुर्ग इस्लामी भाई रहते थे, मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** से उन की मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है वोह क़रीब के एक अ़लाक़े से पैदल नमाज़े फ़ज्र पढ़ने फ़ैज़ाने मदीना आते। जब उस बुज़ुर्ग इस्लामी भाई ने इन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए गुनाहों से दूर रहने और नमाज़ पढ़ने की तल्क़ीन की तो इस का इन पर ऐसा असर हुवा कि इन्हों ने **नमाज़** शुरूअ़ कर दी। एक दिन मस्जिद में इन की **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई जिन की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे

https://www.dawateislamiindia.org/

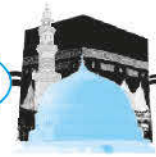

में येह **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में तशरीफ़ लाए। यहां सुन्नतों की बहारें थीं, दौराने इज्तिमाअ़ होने वाले बयान ने इन्हें झन्झोड़ कर रख दिया। इज्तिमाअ़ में जब सब ने मिल कर ज़िक्रुल्लाह किया तो इन को क़ल्बी सुकून मिला। इज्तिमाअ़ की बरकत से नेकी का ऐसा जज़्बा दिल में जागा कि येह **दा'वते इस्लामी** के हो कर रह गए। गुन्डा गर्दी और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली। दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** भी देने लगे। इन की ज़िन्दगी में आने वाली तब्दीली लोगों के लिये हैरत का बाइ़स थी। कुछ लोग बातें बनाते और चन्द दिन के शौक़ का त़ा'ना दे कर इन का दिल तोड़ते मगर येह ख़ामोशी से सुन लेते और दिल में अ़हद करते कि चाहे कुछ भी हो जाए मैं दीनी माहोल नहीं छोड़ूंगा। गुनाहों से किनारा कशी इख़्तियार कर के **नेक आ'माल करने की बरकत** से इन के **रिज़्क़ में बरकत** होने लगी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इन्हें अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान की हैसिय्यत से दीनी कामों की धूमें मचाने की सआ़दत भी मिली।

संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه तुम अपनाए रखखो सदा मदनी माहोल
बहुत सख़्त पछताओगे याद रखखो न अ़त्तार तुम छोड़ना मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

"बिस्मिल्लाह" के सात हुरूफ़ की निस्बत से गुनाहों के 7 इलाज

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में आने की बरकत से तौबा कर के बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ी और गुनाहों के आ़दी शरीअ़तो सुन्नत के पाबन्द बने। हर एक को येह बा बरकत दीनी माहोल ज़रूर अपनाना चाहिये। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रहमत से कई ज़िक्रो अज़्कार भी ऐसे हैं जो गुनाहों से बचने का सबब बन सकते हैं। यहां सात अवराद पेश किये जाते हैं :

https://www.dawateislamiindia.org/

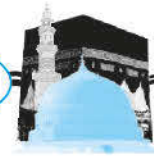

﴿1﴾ يَاعَفُوُّ : कसरत के साथ पढ़ते रहने से दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हो जाती है।

﴿2﴾ يَامُحْصِيُ : सोते वक़्त सीने पर हाथ रख कर 7 बार पढ़ लिया करें اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم इबादत में दिल लगेगा।

﴿3﴾ يَابَاعِثُ : इबादत में दिल लगने के लिये सीने पर हाथ रख कर सोते वक़्त 100 बार पढ़िये, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم गुनाहों से नफ़रत हो जाएगी।

﴿4﴾ يَاقَهَّارُ : चलते फिरते विर्द करते रहने से दुन्या की महब्बत दूर होती है और **अल्लाह** पाक और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत पैदा होती है।

﴿5﴾ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم : शैतान से महफ़ूज़ रहने के लिये रोज़ाना 10 बार पढ़िये।

﴿6﴾ يَامُحْيِيُ، يَامُمِيْتُ : बिला हिसाब जन्नत में दाख़िले के लिये हर नमाज़ के बा'द सीने पर हाथ रख कर 7 बार पढ़ कर सीने पर दम करें। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم बुरी आदतें भी छूटेंगी और इबादत में भी दिल लगेगा।

﴿7﴾ يَابَاطِنُ : हर नमाज़ के बा'द 100 बार पढ़िये اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم वस्वसों और गन्दे ख़यालात से छुटकारा हासिल होगा।

नोट : हर अमल के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ें। विर्द शुरूअ करने से क़ब्ल किसी सुन्नी आलिम या क़ारी साहिब को सुना कर दुरुस्त मख़रज के साथ पढ़ें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जिस नेकी का करना मुश्किल हो उस का सवाब भी ज़ियादा होता है :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ुज़ूल बातों की आदत निकाल देना वाक़ेई मुश्किल तरीन अमल है, लेकिन येह बात भी बड़ी हौसला अफ़्ज़ा है कि जिस के लिये फ़ुज़ूल बातों की आदत निकाल देना जितना मुश्किल है उतना ही उस को सवाब भी ज़ियादा मिलता है। जैसा कि सख़्त सर्दी में वुज़ू करने के बारे में फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने सख़्त सर्दी में वुज़ू किया उस के लिये

https://www.dawateislamiindia.org/

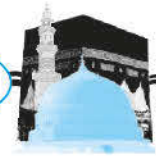

दुगना (या'नी डबल) अज्र है।" (جامع صغیر ص٥١٢ حدیث ٨٣٩٨) इसी त़रह़ तक्लीफ़ के साथ क़ुरआन पढ़ने वाले के बारे में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स रुक रुक कर क़ुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तक्लीफ़ के साथ अदा करता है, उस के लिये दो अज्र हैं।" (مسلم ص٣١٢حدیث ١٨٦٢) नीज़ अपनी ख़्वाहिश पर दूसरे को तरजीह़ (या'नी फ़ौक़िय्यत व बरतरी) देने वाले के बारे में प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी (दूसरे) को तरजीह़ दे तो **अल्लाह** पाक उसे बख़्श देता है।" (اِتحاف السّادة ج ٩ ص ٧٧٩) लिहाज़ा ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अगर्चे जी तो येही चाहता है कि हम बोलते ही चले जाएं, लेकिन हम कमगोई की आ़दत डालने की कोशिश करेंगे तो ज़रूर सवाब पाएंगे। (اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم)

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो नेक अ़मल दुन्या में जितना दुश्वार होगा, क़ियामत के दिन मीज़ाने अ़मल (या'नी आ'माल तोलने के तराज़ू) में उतना ही वज़्न दार होगा।" (تَذْكِرَةُ الاَوْلِيا جزء١ ص ٩٥ ملخصا)

फ़ुज़ूल गोई से रुक जाए : **ह़ज़रते** रक्ब मिस्री رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो ऐ़ब न होने के बा वुजूद तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे, और मिस्कीनी के बिग़ैर ख़ुद को ज़लील समझे, और अपना जम्अ़ किया हुवा माल नेक कामों में ख़र्च करे, और बे सरो सामान और मिस्कीन लोगों पर रह़्म करे और इल्मो ह़िक्मत वाले लोगों से मेलजोल रखे, और ख़ुश बख़्ती है उस के लिये जिस की कमाई पाकीज़ा हो, बात़िन अच्छा हो, ज़ाहिर बुज़ुर्गी वाला हो और जो लोगों को अपने शर से महफ़ूज़ रखे, और सआ़दत मन्दी है उस के लिये जो अपने इ़ल्म पर अ़मल करे, अपनी ज़रूरत से ज़ाइद माल को राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और **फ़ुज़ूल गोई** से रुक जाए। (معجم کبیر ج٥ ص٧١ حدیث ٤٦١٦)

https://www.dawateislamiindia.org/

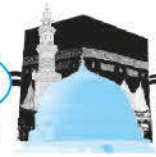

जन्नत में अफ़्सोस न होगा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें अपने वक़्त की क़द्र पहचाननी ज़रूरी है, फ़ालतू वक़्त गुज़रना कितने बड़े नुक़्सान की बात है वोह इस ह़दीसे मुबारक से समझिये चुनान्चे ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अहले जन्नत को उस घड़ी के सिवा किसी शै पर अफ़्सोस न होगा जिस में वोह **अल्लाह** पाक का ज़िक्र न कर सके थे।"

(معجم کبیر ج ۲۰ ص ۹۳ حدیث ۱۸۲)

शर्ह़े ह़दीस : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "अहले जन्नत" की वज़ाह़त में लिखते हैं : जन्नतियों का येह अफ़्सोस क़ियामत के दिन जन्नत में दाख़िले से पहले होगा क्यूं कि जन्नत में नदामत व अफ़्सोस न होगा। (حرز ثمین شرح حصن حصین ص ۲۰۹)

عُمر را ضائع مَکُنْ دَر گفتگو　　یادِ اُو کُن یا دِ اُو کُن یادِ اُو

या'नी अपनी उ़म्र फ़ुज़ूल बातों में ज़ाएअ़ मत करो, यादे ऊ या'नी उस (**अल्लाह**) की याद करते रहो।

क़लम का क़त़ : ह़ज़रते सुलैम राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 447 हिजरी) का क़लम जब लिखते लिखते घिस जाता तो क़लम की नोक बनाने के लिये छीलते हुए (अगर्चे अच्छी निय्यत से दीनी तह़रीर के लिये येह भी सवाब का काम है मगर "एक पन्थ दो काज" या'नी एक काम से दो फ़ाएदे के मिस्दाक़) ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर देते ताकि येह वक़्त सिर्फ़ क़लम की नोक तराशने में ख़र्च न हो !

(ابنِ عَساکِر ج ۷۲ ص ۲۶۰)

जन्नत में दरख़्त लगवाइये ! : यक़ीनन **वक़्त** बहुत ही क़ीमती है इस का इस बात से अन्दाज़ा लगाइये कि अगर आप चाहें तो इस दुन्या में रहते हुए सिर्फ़ एक सेकन्ड में जन्नत के अन्दर एक दरख़्त लगवा सकते हैं और जन्नत में दरख़्त लगवाने का त़रीक़ा भी बहुत ही आसान है चुनान्चे एक ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ इन चारों कलिमात में से जो भी कलिमा कहें जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा। वोह चार कलिमात येह हैं : ﴿1﴾ سُبْحٰنَ اللهِ ﴿2﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﴿3﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ ﴿4﴾ اَللهُ اَكْبَر

(ابن ماجه ج ٤ ص ٢٥٢ حدیث ٣٨٠٧)

https://www.dawateislamiindia.org/

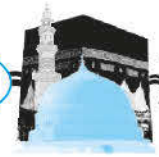

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जन्नत में दरख़्त लगवाना किस क़दर आसान है ! अगर बयान कर्दा चारों कलिमात (या'नी अल्फ़ाज़) में से एक कलिमा (या'नी अल्फ़ाज़) कहें तो एक, और अगर चारों कह लेंगे तो जन्नत में चार दरख़्त लग जाएंगे। अब आप ही ग़ौर फ़रमाइये कि वक़्त कितना क़ीमती है कि ज़बान को मा'मूली सी हरकत देने से जन्नत में दरख़्त लग जाते हैं तो ऐ काश ! फ़ालतू बातों की जगह سُبْحٰنَ اللّٰه سُبْحٰنَ اللّٰه कह कर हम जन्नत में बहुत से दरख़्त लगवा लिया करें या येह भी हो सकता है कि चाहे खड़े हों, चल रहे हों, बैठे हों या कोई कामकाज कर रहे हों या लैटे हों तो पाउं समेट कर हम दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें कि येह भी बहुत ही सवाब का काम है। रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है, दस दरजात बुलन्द फ़रमाता है।"

(نَسائی ص۲۲۲ حدیث ۱۲۹٤)

बैठते उठते, जागते सोते
हो इलाही ! मेरा शिआ़र दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 74)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बात करने का दीनी या दुन्यावी फ़ाएदा : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! कितना अच्छा हो कि बोलने से पहले इस त़रह़ तोलने की आ़दत पड़ जाए कि येह बात जो मैं करना चाहता हूं इस में कोई दीनी या दुन्यवी फ़ाएदा भी है या नहीं ? अगर येह बात फ़ुज़ूल लगे तो बोलने के बजाए काश ! **"अल्लाह अल्लाह"** कहना या दुरूद शरीफ़ पढ़ना नसीब हो जाए ताकि ढेरों सवाब हाथ आए। **या फिर** سُبْحٰنَ اللّٰه या اَلْحَمْدُ لِلّٰه या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه या اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर जन्नत में दरख़्त लगवाने की सआ़दत मिल जाया करे।

https://www.dawateislamiindia.org/

سُبْحٰنَ الله कहने कहलवाने की निय्यत : याद रहे ! बतौरे तअ़ज्जुब या बतौरे दादो तह़सीन اَللهُ اَكْبَر या سُبْحٰنَ الله ! वग़ैरा कहने पर भी सवाब मिलता है ताहम ज़िक्रुल्लाह की निय्यत भी शामिल कर ली जाए तो ज़ियादा सवाब मिलेगा। बा'ज अवक़ात मुबल्लिग़ीन व ना'त ख़्वां ह़ाज़िरीन से कहते हैं : "बोलो ! سُبْحٰنَ الله" येह कहलवाना भी कारे सवाब और जो कहे वोह भी सवाब का ह़क़दार, ताहम अगर कहलवाने वाले सवाब की निय्यत के साथ यूं कहें तो ज़ियादा बेहतर है कि "ज़िक्रुल्लाह की निय्यत से कहिये : سُبْحٰنَ الله ।" इस पर जो भी ज़िक्रुल्लाह की निय्यत से سُبْحٰنَ الله कहेगा उस का सवाब बढ़ जाएगा।

ह़ज़रते अ़ल्लामा ऐनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 855 हिजरी) फ़रमाते हैं : किसी चीज़ पर तअ़ज्जुब के वक़्त اَللهُ اَكْبَر और سُبْحٰنَ الله कहना मुस्तह़ब है। (عمدة القاری ج١٠ ص٣٣٥) **ह़ज़रते** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "मिरआत" में फ़रमाते हैं : जो कोई سُبْحٰنَ الله या اَللهُ اَكْبَر या اَلْحَمْدُ لِله या لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله किसी त़रह़ भी कहे सदक़ए नफ़्ली का सवाब पाएगा ख़्वाह ज़िक्रुल्लाह की निय्यत से कहे या किसी ह़ाजत के लिये बतौरे वज़ीफ़ा येह अल्फ़ाज़ पढ़े या अ़जीब बात सुन कर سُبْحٰنَ الله वग़ैरा कहे या ख़ुश ख़बरी पा कर اَلْحَمْدُ لِله पढ़े। बहर ह़ाल सवाब मिलेगा क्यूं कि **अल्लाह** का नाम लेना बहर ह़ाल (या'नी हर ह़ाल में) इ़बादत है। (मिरआत, जि. 3, स. 98) अल ग़रज़ हर त़रह़ के ज़िक्रो अज़्कार और अवरादो वज़ाइफ़, तिलावते क़ुरआन करने और दुरूदो सलाम पढ़ने और इ़बादाते मह़्ज़ा (या'नी ख़ालिस इ़बादत के कामों) पर अलग से सवाब की निय्यत न हो तब भी सवाब मिलता है और अगर सवाब की निय्यत कर लें तो सवाब बढ़ जाएगा।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

साठ साल की इ़बादत से बेहतर : अगर कुछ पढ़ने के बजाए ख़ामोश रहने को जी चाहे तो इस में भी सवाब कमाने की सूरतें हैं और वोह येह कि उलटे सीधे ख़यालात में पड़ने के बजाए

https://www.dawateislamiindia.org/

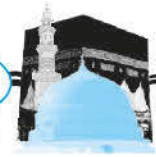

आदमी यादे ख़ुदावन्दी या यादे मदीना व शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में गुम हो जाए। या इल्मे दीन में ग़ौरो तफ़क्कुर शुरूअ़ कर दे या मौत के झटकों, क़ब्र की तन्हाइयों, उस की वह़शतों और मह़शर की होलनाकियों की सोच में डूब जाए तो इस त़रह़ भी वक़्त ज़ाएअ़ नहीं होगा बल्कि एक एक सांस اِنْ شَآءَاللّٰہ इबादत में शुमार होगा। चुनान्चे मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (उमूरे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़) घड़ी भर के लिये **ग़ौरो फ़िक्र** करना **60** साल की इबादत से बेहतर है। (جامع صغیر ص۳٦٥ حدیث ٥٨٩٧)

उन की यादों में खो जाइये   मुस्तफ़ा मुस्तफ़ा कीजिये

अनमोल लम्ह़ात की क़द्र : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी के दिन चन्द घन्टों से और घन्टे मिनटों से इबारत हैं, ज़िन्दगी का हर सांस **अनमोल हीरा** है, काश ! एक एक सांस की क़द्र नसीब हो जाए कि कहीं कोई सांस बे फ़ाएदा न गुज़र जाए और बरोज़े क़ियामत ज़िन्दगी का ख़ज़ाना नेकियों से ख़ाली पा कर अश्के नदामत (या'नी शरमिन्दगी के आंसू) न बहाने पड़ जाएं ! सद करोड़ काश ! एक एक सेकन्ड का ह़िसाब करने की आ़दत पड़ जाए कि किस त़रह़ गुज़र रही है, ज़हे मुक़द्दर ! ज़िन्दगी की हर हर साअ़त (या'नी घड़ी) फ़ाएदे ही के कामों में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) हो। बरोज़े क़ियामत वक़्त को फ़ुज़ूल बातों, ख़ुश गप्पियों में गुज़रा हुवा पा कर कहीं कफ़े अफ़्सोस मलते न रह जाएं !

नदामत का बहुत बड़ा सबब : सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं अपनी ज़िन्दगी के गुज़रे हुए उस दिन के मुक़ाबले में किसी चीज़ पर नादिम (या'नी शरमिन्दा) नहीं होता जो दिन मेरा नेक आ'माल बढ़ने से ख़ाली हो।"

वक़्त तल्वार की त़रह़ है : ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : वक़्त तल्वार की त़रह़ है तुम इस को (नेक आ'माल के ज़रीए) काटो वरना (फ़ुज़ूलिय्यात में मश्ग़ूल कर के) येह तुम को काट देगा। (لواقح الانوار القدسية ص٨٣)

https://www.dawateislamiindia.org/

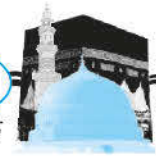

सकरात में तिलावत : **ह़ज़रते** जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वक़्ते नज़्अ़ क़ुरआने पाक पढ़ रहे थे, उन से पूछा गया : इस वक़्त में भी तिलावत ? इर्शाद फ़रमाया : मेरा नामए आ'माल लपेटा जा रहा है तो जल्दी जल्दी उस में नेकियां बढ़ा रहा हूं। (صیدالخاطرص۲۲۷) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

जब फ़ैज़ाने सुन्नत घर में दाख़िल हुई : **अल्लाहु अक्बर !** दुन्या से जाते वक़्त भी क़ुरआने करीम की तिलावत का जज़्बा ! **अल्लाह** करीम हमें भी तिलावते क़ुरआने करीम का शौक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन। तिलावत का जज़्बा पाने और गुनाहों की आ़दतों से पीछा छुड़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और मक्तबतुल मदीना की इस्लामी किताबों का मुत़ालआ़ कीजिये आप की तरग़ीब के लिये अ़र्ज़ है कि एक इस्लामी भाई **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में आने से पहले दुन्या की रंगीनियों और गुनाहों की वादियों में भटक रहे थे, नमाज़ें क़ज़ा करना, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और दीगर कई कबीरा (या'नी बड़े बड़े) गुनाहों का सिल्सिला जारी था, इन की ज़िन्दगी में इस्लाह़ का सामान कुछ यूं हुवा कि एक दिन दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता इन के ख़ालाज़ाद भाई इन के घर आए, उन का सादा मगर दीनी लिबास देख कर सब घर वाले उन से मुतअस्सिर हुए, उन्हों ने घर वालों को दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें सुनाईं जिस से दा'वते इस्लामी की मह़ब्बत घर वालों के दिल में बस गई, मज़ीद येह कि उन्हों ने एक किताब भी तोह़फ़े में दी जिस का नाम "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" था, जब इन इस्लामी भाई और इन के घर के दीगर अफ़्राद ने इस किताब का मुत़ालआ़ किया तो इन के घर में मुस्बत तब्दीलियां आने लगीं और एक वक़्त आया कि येह घराना **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया, कुछ दिनों बा'द जब इन इस्लामी भाई ने **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيم इस की बरकत से इन्हों ने अपने चेहरे

https://www.dawateislamiindia.org/

पर सुन्नत के मुताबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी और सर पर इमामे शरीफ़ का ताज सजा लिया, मज़ीद करम येह हुवा कि न सिर्फ़ खुद इन इस्लामी भाई ने जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी में दाखि़ला लिया बल्कि इन के साथ इन की दो बहनों ने भी जामिअ़तुल मदीना (गर्ल्ज़) में दर्से निज़ामी के लिये दाखि़ला ले लिया।

ऐ आशिक़ाने सुन्नते मुस्तफ़ा ! तोह़फ़ा देना और क़बूल करना सुन्नत है, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : **تَهَادَوْا تَحَابُّوْا** या'नी "एक दूसरे को तोह़फ़ा (गिफ़्ट, GIFT) दो मह़ब्बत बढ़ेगी।" (مؤطا ج۲ص۴۰۷ حدیث ۱۷۳۱) इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा गिफ़्ट (GIFT) देने से मह़ब्बत बढ़ती है और अगर वोह तोह़फ़ा किसी दीनी किताब का हो तो मह़ब्बत के साथ साथ इल्मे दीन में इज़ाफ़ा भी हो सकता है। लिहाज़ा हो सके तो **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना से इस्लामी किताबें ख़रीद फ़रमा कर अपने अ़ज़ीज़ों और दोस्तों को तोहूफ़तन पेश कीजिये, अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये, शादी ग़मी की मह़फ़िलों और दीगर तक़रीबात में तक़्सीम कीजिये, न सिर्फ़ तक़्सीम कीजिये बल्कि खुद भी इन किताबों के मुत़ालए़ को अपना मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم इल्मे दीन का ढेरों ढेर ख़ज़ाना ह़ासिल होगा।

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही　　गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
सआ़दत मिले दर्से "फ़ैज़ाने सुन्नत"　　की रोज़ाना दो मरतबा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 102, 103)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बल मुस्तफ़ा ! हमें फ़ुज़ूल बातों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّيْن صلى الله عليه واٰله وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

"सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत की पच्चीसवीं शरीफ़" के 25 ह़ुरूफ़ की निस्बत से फ़ुज़ूल बातों से बचने के 25 वाक़िआ़त

﴾1﴿ ऐसी बात न करो कि बा'द में मा'ज़िरत करनी पड़े

मेज़बाने रसूल **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मुझे कोई मुख़्तसर नसीह़त फ़रमाइये। सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम अपनी नमाज़ के लिये खड़े हो तो रुख़्सत होने वाले की सी नमाज़ पढ़ो, कोई ऐसी बात न करो जिस के बारे में बा'द में मा'ज़िरत करनी पड़े और लोगों के हाथों में मौजूद चीज़ों से मुकम्मल तौ़र पर मायूस हो जाओ।"

(مسند امام احمد بن حنبل ج۹ ص۱۳۰ حدیث ۲۳۵۵۷)

ह़दीसे पाक के दो ह़िस्सों की शर्ह़ : ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "कोई ऐसी बात न करो, जिस के बारे में बा'द में मा'ज़िरत करनी पड़े" की वज़ाह़त में ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : बहुत ही जामेअ़ नसीह़त है या'नी अक्सर **ख़ामोश** रहो अगर बात करनी पड़े तो अच्छी बात करो किसी का दिल दुखाने वाली बात न करो कि फिर उस से मुआ़फ़ी मांगनी पड़े, ख़ामोश रहना सदहा (या'नी सेंकड़ों) गुनाहों से बचा लेता है या येह मत़लब है कि गुनाह की बात न बोलो जिस से तौबा करनी पड़े। इस ह़िस्सए ह़दीस : "लोगों के हाथों में मौजूद चीज़ों से मुकम्मल तौ़र पर मायूस हो जाओ" के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़्ती साह़िब फ़रमाते हैं : या'नी किसी के माल की उम्मीद और लालच न रखो, तुम्हारा दिल ग़नी (या'नी मुत्मइन) रहेगा, तुम्हें किसी की ख़ुशामद न करना पड़ेगी। (मिरआत, जि. 7, स. 54)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

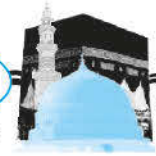

﴾2﴿ अब्बूजान ! आप बोलते क्यूं नहीं ?

सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब ज़मीन पर भेजे गए तो आप की ख़ूब औलाद हुई। एक दिन आप के बेटे, पोते और पड़पोते सब आप के पास जम्अ़ हो कर बातें करने लगे जब कि आप عَلَيْهِ السَّلَام **ख़ामोश** रहे और कोई गुफ़्तगू न फ़रमाई। औलाद अ़र्ज़ गुज़ार हुई : अब्बूजान ! क्या बात है हम गुफ़्तगू कर रहे हैं और आप **ख़ामोश** हैं ? हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटो ! जब **अल्लाह** पाक ने मुझे अपने क़ुर्ब (या'नी जन्नत) से ज़मीन पर उतारा तो मुझ से येह अ़हद लिया था कि "ऐ आदम ! गुफ़्तगू कम करना यहां तक कि मेरे क़ुर्ब (या'नी जन्नत) में लौट आओ।" (एक चुप सो सुख (उर्दू), स. 5, حسن السمت فی الصمت ص ۱۱)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** पाक को बन्दे का ख़ामोश रहना पसन्द है लिहाज़ा बिला वज्ह बोले चले जाने वालों के लिये इस वाक़िए़ में काफ़ी इ़ब्रत है। **अल्लाह** पाक हमें हमारे वालिदे मोहतरम अबुल बशर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की "ख़ामोशी" से हिस्सा इनायत फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा पाने का त़रीक़ा

हज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ परहेज़ गारो ! आओ मैं तुम्हें ख़ौफ़े ख़ुदा की ता'लीम दूं, तुम में जो भी येह पसन्द करता है कि वोह ज़िन्दा रहे और नेक आ'माल देखे तो उसे चाहिये कि **अपनी आंख और ज़बान की हिफ़ाज़त करे,** न तो बुराई की त़रफ़ नज़र करे और न ज़बान से कोई ग़लत़ बात निकाले, क्यूं कि **अल्लाह** पाक की निगाहे करम सिद्दीक़ीन (या'नी सच्चों) पर है और वोह उन की बात जल्द सुनता है। (**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 2, स. 547, حلیۃ الاولیاء ج۲ ص۴۰۸ حدیث ۲۷۰۰)

https://www.dawateislamiindia.org/

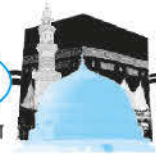

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से येह दर्स मिलता है कि ख़ौफ़े ख़ुदा मिलने और नेक बन्दा बनने के लिये आंख और ज़बान को गुनाहों बल्कि फ़ुज़ूलिय्यात से भी बचाना होगा ! नीज़ झूट वग़ैरा से ख़ुद को बचा कर हमेशा के लिये सच्चाई को अपनाना होगा। **अल्लाह** पाक के प्यारे और सच्चे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक सिद्क़ (सच) नेकी की त़रफ़ ले जाता है और नेकी जन्नत की त़रफ़ ले जाती है और बेशक आदमी सच बोलता रहता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** पाक के हां सिद्दीक़ (या'नी बहुत बड़ा सच्चा) लिख दिया जाता है और बेशक किज़्ब (या'नी झूट) गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम की त़रफ़ ले जाता है और बेशक आदमी झूट बोलता रहता है यहां तक कि वोह **अल्लाह** पाक के हां कज़्ज़ाब (या'नी बहुत बड़ा झूटा) लिख दिया जाता है। (بخاری ج٤ص١٢٥ حدیث ٦٠٩٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ कोहे सफ़ा पर खड़े हो कर ज़बान को नसीह़त की

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه एक मरतबा कोहे सफ़ा पर खड़े हो कर तल्बिया (या'नी لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْك) पढ़ रहे थे और फ़रमा रहे थे : ऐ ज़बान ! अच्छी बात कहा कर फ़ाएदा होगा, और बुरी बात से ख़ामोशी इख़्तियार कर सलामत रहेगी, (मेरी इन दोनों बातों पर अ़मल कर) इस से पहले कि तुझे नदामत (या'नी शरमिन्दगी) उठानी पड़े। (احیاء العلوم ج٣ص١٣٥)

﴾5﴿ तुझ पर अफ़्सोस है

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "ऐ ज़बान ! तुझ पर अफ़्सोस है ! अच्छी बात कह कि इसी में भलाई है और बुरी बात से बच कि इसी में सलामती है।" देखने सुनने वाले ने इस की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : "मुझे ख़बर मिली

https://www.dawateislamiindia.org/

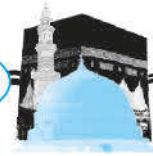

है कि क़ियामत के दिन आदमी अपनी ज़बान की वज्ह से सब से ज़ियादा ख़सारा (या'नी नुक़्सान) उठाएगा।" (**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 1, स. 574)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह हक़ीक़त है कि ज़बान से अच्छी बातें करने से रिज़ाए इलाही हासिल होती है और जिस से **अल्लाह** करीम राज़ी हो जाए उस को जन्नत मिलेगी और बुरी बात कहने से **अल्लाह** पाक नाराज़ होता है और जिस से **अल्लाह** पाक नाराज़ हो जाए उस के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है।

जहन्नम से हम को बचा या इलाही

तू जन्नत में हम को बसा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ मुझे ख़ामोश रहना बोलने से ज़ियादा प्यारा है

हज़रते इब्राहीम बिन बश्शार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम लोग इकठ्ठे हुए तो हम में से हर एक ने कुछ न कुछ गुफ़्तगू की मगर हज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **ख़ामोश** रहे, आप ने कोई बात न की। जब लोग चले गए तो मैं ने उन से अपनी तश्वीश का इज़्हार किया तो आप ने फ़रमाया : गुफ़्तगू बे वुक़ूफ़ की बे वुक़ूफ़ी और अ़क़्लमन्द की अ़क़्लमन्दी को ज़ाहिर करती है। मैं ने कहा : (आप तो अ़क़्लमन्द हैं) फिर आप ने गुफ़्तगू क्यूं न की ? फ़रमाया : मुझे ख़ामोश रह कर ग़मज़दा होना बोल कर शरमिन्दा होने से ज़ियादा प्यारा है।

(एक चुप सो सुख, स. 18, حسن السمت فی الصمت ص ۳۱)

سُبْحٰنَ اللهِ ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन की सोच भी कितनी प्यारी होती थी ! वाक़ेई बोलने से इन्सान की समझदारी का तआ़रुफ़ हो जाता है, और बा'ज़ अवक़ात लोगों पर ज़ाहिर हो जाता है कि इस या'नी बोल पड़ने वाले को इतनी समझ ही नहीं कि कहां, कब और क्या बोलना चाहिये।

https://www.dawateislamiindia.org/

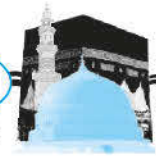

"चुप रह कर ग़मज़दा होना" से मुराद येह हो सकता है कि चुप रहने पर बा'द में इस त़रह़ का ग़म हो सकता है कि गुफ़्तगू के दौरान फ़ुलां मौक़अ़ पर मैं येह जुम्ला बोल देता तो ख़ूब होता और फ़ुलां फ़ुलां बात कर डालता तो मज़ा ही आ जाता वग़ैरा बहर ह़ाल बोल कर पछताने से न बोल कर पछताना और खा कर पछताने से न खा कर पछताना अच्छा है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

《7》 पानी और हवा पर चलने वाले 3 बुज़ुर्ग

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बनी इसराईल में दो बुज़ुर्ग इ़बादत के ऐसे मर्तबे पर फ़ाइज़ थे कि पानी पर चलते थे । एक मरतबा वोह समुन्दर पर चल रहे थे कि उन्हों ने एक बुज़ुर्ग को देखा कि वोह हवा में चल रहे हैं, पानी पर चलने वालों ने हवा पर चलने वाले बुज़ुर्ग से पूछा : ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दे ! आप इस मक़ाम तक कैसे पहुंचे ? उन्हों ने फ़रमाया : "थोड़ी दुन्या" पर राज़ी रहते हुए मैं ने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात और ज़बान को **फ़ुज़ूल बातों** से रोका और उन कामों में मश्ग़ूल हुवा जिन का रब्बे करीम ने मुझे हुक्म दिया है और मैं ने **ख़ामोशी** को अपनाए रखा, अगर मैं **अल्लाह** पाक पर किसी बात की क़सम खा लूं तो (मुझे रह़मत पर उम्मीद है कि) वोह मेरी क़सम पूरी फ़रमा देगा और अगर उस से (कुछ) मांगूंगा तो वोह मुझे अ़त़ा कर देगा । (एक चुप सो सुख, स. 22, حسن السمت فی الصمت ص۳٤)

जन्नत में दरख़्त, वबाओं से ह़िफ़ाज़त : अल्लाहु अक्बर ! हवा पर चलने वाले बुज़ुर्ग ने ख़ामोश रह कर भी इ़बादत पर नफ़्अ़ उठाया कि जो वक़्त फ़ालतू बातों में ख़र्च हो सकता था उस को बचा कर उस में **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की इ़बादत की सआ़दत ह़ासिल की । काश ! हम भी ग़ौर कर लिया करें कि जो बात करने लगे हैं उस से दीन या दुन्या का कोई फ़ाएदा भी है या नहीं ? अगर नहीं तो क्यूं न रिज़ाए इलाही पाने की निय्यत से سُبْحٰنَ الله, سُبْحٰنَ الله पढ़ना शुरूअ़

https://www.dawateislamiindia.org/

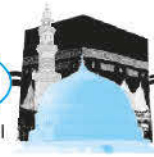

कर दें कि हर बार سُبْحٰنَ اللہ कहने पर **अल्लाह** पाक की रह़मत से जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा। और कसरत से سُبْحٰنَ اللہ कहने के तो दुन्या में भी फ़वाइद हैं चुनान्चे करोड़ों शाफ़िइ़य्यों के पेश्वा ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने वबाओं से बचने के लिये तस्बीह़ से ज़ियादा फ़ाएदे मन्द कोई चीज़ नहीं देखी।" (حلیۃ الاولیاء ج ۹ ص ۱٤٥ قول نمبر ۱۳٤٤۰)

नोट : तस्बीह़ से मुराद **अल्लाह** पाक की पाकी बयान करना है मसलन سُبْحٰنَ اللہ कहना।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ मुंह में जैसे कोई चीज़ डाल दी गई हो

ह़ज़रते इब्राहीम बिन बश्शार رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की सोह़बते बा बरकत में 6 साल से ज़ियादा अ़र्सा रहा। आप अक्सर **ख़ामोश** रहते और हम से कभी भी कोई बात न पूछते बल्कि हम ही उन से कलाम (या'नी बातचीत) करते। हमें ऐसा मह़सूस होता जैसे आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के मुंह मुबारक में कोई चीज़ डाल कर बोलने से रोक दिया गया हो। (عیون الحکایات ص ۱۲۹, उ़यूनुल ह़िकायात (उर्दू), जि. 1, स. 204)

काश ! लोहे का दरवाज़ा ह़ाइल हो : سُبْحٰنَ اللہ ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन की प्यारी प्यारी सोच सद करोड़ मरह़बा ! बेशक वोह ह़ज़रात ख़ूबियों के जामेअ़ थे मगर हम ऐबों से भरे हुए हैं। ज़बान की ह़िफ़ाज़त के लिये लोगों से ग़ैर ज़रूरी मेलजोल से बचना भी बेह़द मुफ़ीद होता है। सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ عَنْہ इर्शाद फ़रमाया करते : **अल्लाह** की क़सम ! मैं येह पसन्द करता हूं कि मेरे और लोगों के दरमियान लोहे का एक दरवाज़ा हो, न मुझ से कोई बात करे और न मैं किसी से बात करूं यहां तक कि मैं **अल्लाह** पाक से जा मिलूं।

(کتاب العزلۃ لابن ابی الدنیا مع موسوعہ ج٦ ص٥١١ قول نمبر٥٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

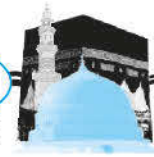

﴾9﴿ ज़बान पर हुकूमत

किसी बुज़ुर्ग से पूछा गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आप लोगों के सरदार कैसे बने ह़ालां कि न तो वोह उ़म्र में आप सब से बड़े हैं और न मालो दौलत में ? तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : उन्हें येह सरदारी अपनी **ज़बान पर हुकूमत** करने की वज्ह से नसीब हुई है।

(المستطرف ج ١ ص١٤٧)

अल्लाह पाक काम्याबी देने वाला है : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! वाक़ेई जो ज़बान पर कन्ट्रोल कर ले वोह अपनी "अल्फ़ाज़ नुमा रिआ़या" का बादशाह है मगर येह बादशाहत पाने के लिये नफ़्सो शैत़ान के लश्करों को शिकस्त देनी होगी और येह अगर्चे एक मुश्किल काम है, मगर सच्ची धुन और पक्की लगन हो तो **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़नायत से काम्याबी ना मुम्किन नहीं, कोशिश जारी रखनी चाहिये। एक बहुत ही प्यारा अ़रबी मुह़ावरा है : اَلسَّعْیُ مِنِّیْ وَالْاِتْمَامُ مِنَ اللّٰه या'नी "मेरी त़रफ़ से सिर्फ़ कोशिश है और काम पूरा होना या'नी काम्याबी मिलना **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से है।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ चार उ़लमा, चार इर्शादात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बादशाह के हां चार उ़लमाए किराम जम्अ़ हुए तो बादशाह ने उन से अ़र्ज़ की : आप ह़ज़रात एक एक मुख़्तसर मगर जामेअ़ बात इर्शाद फ़रमाइये : उन में से **एक** आ़लिम साहिब ने फ़रमाया : आ़लिम के इ़ल्म की फ़ज़ीलत **ख़ामोशी** है। **दूसरे** ने फ़रमाया : आदमी के लिये सब से बढ़ कर नफ़्अ़ मन्द बात

https://www.dawateislamiindia.org/

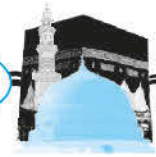

येह है कि वोह अपनी हैसिय्यत और अ़क़्ल की इन्तिहा (या'नी गहराई) को जान ले और उस के मुताबिक़ गुफ़्तगू करे। **तीसरे** ने फ़रमाया : सब से बढ़ कर मोहतात़ शख़्स वोह है जो न तो मौजूदा ने'मत पर मुत़मइन हो, न उस पर भरोसा करे और न उस के लिये कोई तक्लीफ़ उठाए। **चौथे** ने फ़रमाया : तक़्दीर पर राज़ी रहने और क़नाअ़त इख़्तियार करने से बढ़ कर कोई शै बदन के लिये आराम देह नहीं। (एक चुप सो सुख (उर्दू), स. 16)

مَاشَآءَاللّٰه ! चारों इर्शादात मुख़्तसर मगर जामेअ़ और अपने अन्दर इ़ब्रत के अनमोल मदनी फूल लिये हुए हैं। अ़रबी मक़ूला है : خَيْرُ الْكَلَامِ مَا قَلَّ وَ دَلَّ या'नी अच्छी बात वोह जो मुख़्तसर और दलील के साथ की जाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴿11﴾ चार बादशाह, चार बातें

ह़ज़रते अबू बक्र बिन अ़य्याश رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : चार मुल्कों फ़ारस, रूम, हिन्द और चीन के बादशाह एक जगह जम्अ़ हुए और चारों बादशाहों ने चार ऐसी बातें कीं गोया एक ही कमान से चार तीर फेंके गए हों, **एक** ने कहा : मैं कही हुई बात के मुक़ाबले में न कही हुई बात से रुकने पर ज़ियादा क़ादिर हूं। **दूसरे** ने कहा : जो बात मैं ने मुंह से निकाल दी वोह मुझ पर ह़ावी और जो बात मुंह से न निकाली उस पर मैं ह़ावी हूं। **तीसरे** ने कहा : मुझे न की हुई बात पर कभी शरमिन्दगी नहीं हुई अलबत्ता की हुई बात पर ज़रूर शरमिन्दा हुवा हूं। **चौथे** ने कहा : मुझे बोलने वाले पर तअ़ज्जुब है कि अगर वोही बात उस की त़रफ़ लौट जाए तो उसे नुक़्सान दे और अगर न लौटे तो फ़ाएदा भी न दे। (एक चुप सो सुख (उर्दू), स. 18, حسن السمت فی الصمت ص ۳۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

﴾12﴿ चालीस बरस तक नहीं हंसे

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **चालीस (40) बरस तक नहीं हंसे।** जब आप को बैठे हुए देखा जाता तो यूं मा'लूम होता गोया एक क़ैदी है जिसे गरदन उड़ाने के लिये लाया गया हो, और जब गुफ़्तगू फ़रमाते तो अन्दाज़ ऐसा होता गोया आख़िरत को आंखों से देख देख कर बता रहे हैं, और जब **ख़ामोश** रहते तो ऐसा महसूस होता गोया उन की आंखों में आग भड़क रही है। जब उन से इस क़दर ग़मगीन व ख़ौफ़ज़दा रहने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि अगर **अल्लाह** पाक ने मेरे बा'ज़ ना पसन्दीदा आ'माल को देख कर मुझ पर ग़ज़ब फ़रमाया और येह फ़रमा दिया कि जाओ ! मैं तुम्हें नहीं बख़्शता। तो मेरा क्या बनेगा ! (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 4, स. 555 ता 556, احیاء العلوم ج٤ ص ٢٣١)

ख़ौफ़े ख़ुदा की फ़ज़ीलत : अल्लाहु अक्बर ! मौलाए काएनात, ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه के ख़लीफ़ा और बुलन्द पाया ताबेई बुज़ुर्ग व वलिय्युल्लाह ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ख़ौफ़े ख़ुदा में सहमे सहमे रहने के इस वाक़िए़ में हम गुनाहगारों के लिये इ़ब्रत के बे शुमार मदनी फूल मौजूद हैं। **अल्लाह** पाक से डरने के काफ़ी फ़ज़ाइल हैं। **अल्लाह** पाक पारह 29 **सूरतुल मुल्क** आयत 12 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَیْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِیْرٌ ﴿۱۲﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जो लोग बिग़ैर देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

ह़दीसे मुबारका, ख़ौफ़े ख़ुदा रिज़्क़ और उ़म्र में इज़ाफ़े का सबब : मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम

https://www.dawateislamiindia.org/

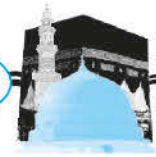

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो अपनी उ़म्र में ज़ियादती और रिज़्क़ में कुशादगी और बुरी मौत से हिफ़ाज़त चाहता है वोह **अल्लाह** पाक से डरे और सिलए रेहमी करे। (مسند احمد بن حنبل ج١ ص ٣٠٢ حديث ١٢١٢)

ख़ौफ़े ख़ुदा से क्या मुराद है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा से मुराद येह है कि **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर (या'नी छुपा फ़ैसला), उस की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की पकड़, उस की त़रफ़ से दिये जाने वाले अ़ज़ाबों, उस के ग़ज़ब और इस के नतीजे में ईमान की बरबादी वग़ैरा से ख़ौफ़ज़दा रहने का नाम **ख़ौफ़े ख़ुदा** है। ऐ काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए।

ज़माने का डर मेरे दिल से मिटा कर तू कर ख़ौफ़ अपना अ़ता या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ चुप रहने और बोलने वाले !

ह़ज़रते अबू ह़ातिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दो शख़्सों ने इ़ल्म ह़ासिल किया। एक ने ख़ामोशी इख़्तियार की और दूसरे ने बोलना, तो बोलने वाले ने चुप रहने वाले की त़रफ़ लिखा : तू ने अपने इ़ल्म से क्या कमाया ? जब कि रोज़ी कमाने के लिये ज़बान से बेहतर कोई आला (या'नी हथियार) नहीं। चुप रहने वाले ने बोलने वाले की त़रफ़ लिखा : "तू ने अपने इ़ल्म से कौन सा कमाल ह़ासिल किया ? जब कि मैं समझता हूं कि ज़बान क़ैद में रखने की ज़ियादा ह़क़दार है।"

(حسن السمت ص ٤٤ سے خلاصہ)

बेशक शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए अच्छा अच्छा बोलने में कोई ह़रज नहीं, बुरी बातों से बचना लाज़िम है और फ़ुज़ूल व बे फ़ाएदा गुफ़्तगू से भी बचना चाहिये। रोज़ी कमाने में भी झूट बोलना गुनाह है और फ़ुज़ूल गुफ़्तगू भी कोई अच्छी चीज़ नहीं।

https://www.dawateislamiindia.org/

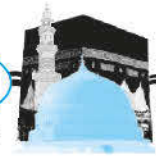

﴾14﴿ नुक़्सान छुपाने के लिये ख़ामोश रहने की ताकीद

एक ताजिर को हज़ार दीनार का नुक़्सान हुवा। उस ने अपने बेटे से कहा कि देखना येह नुक़्सान वाली बात किसी से भी न करना, लड़का बोला : अब्बूजान ! येह आप का हुक्म है इस लिये मैं किसी को नहीं बताऊंगा, लेकिन मेरी येह ख़्वाहिश है आप इस (ख़ामोश रहने) का फ़ाएदा बता दीजिये कि इस नुक़्सान को छुपाने में क्या मस्लहत है ? बाप बोला : **ख़ामोशी** इस लिये ज़रूरी है कि हमें दो मुसीबतें (एक साथ) न उठाना पड़ें या'नी एक तो सरमाए (या'नी रक़म) का नुक़्सान और दूसरा (मुख़ालिफ़) पड़ोसियों का हमारे नुक़्सान पर ख़ुश हो कर मज़ाक़ उड़ाना।

(گلستان سعدی ص۱۱۵)

दूसरे मुसल्मान के नुक़्सान पर ख़ुशी ज़ाहिर करना : ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस वाक़िए से हमें सीखने को मिला कि कभी अपना नुक़्सान हो जाए तो बिला ज़रूरत दूसरों पर इज़्हार के बजाए ख़ामोशी इख़्तियार करने ही में आफ़ियत है, क्यूं कि हो सकता है हमारे बताने की वज्ह से किसी ऐसे शख़्स को पता चल जाए जो नादानी के सबब हमारे नुक़्सान में ख़ुश होने की आफ़त में पड़े। याद रहे ! किसी मुसल्मान की बीमारी या मुसीबत पर या उस का नुक़्सान हो जाने पर ख़ुशी ज़ाहिर करना येह **शमातत** कहलाता है और शमातत की शरीअ़त में मुमानअ़त है। हज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने भाई की **शमातत** न कर या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मसर्रत न कर कि **अल्लाह** पाक उस पर रह़्म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा।"

(ترمذی ج٤ ص٢٢٧ حدیث٢٥١٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

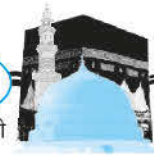

﴾15﴿ ख़ामोशी अ़क़्ल मन्दों का शेवा है !

एक अ़क़्लमन्द नौ जवान जो कई ख़ूबियों का मालिक था, जब कभी वोह दानिश मन्दों (या'नी अहले इ़ल्म) की महफ़िलों में बैठता तो बात करने से अपनी ज़बान को रोके रखता। एक मरतबा उस के बाप ने उस से कहा : ऐ बेटे ! जो कुछ तुझे आता है तू भी कह दिया कर। तो जवान बोला : मुझे इस बात का डर रहता है कि कहीं ऐसा न हो कि वोह लोग मुझ से ऐसी बात पूछ लें जिस का मुझे इ़ल्म न हो और यूं मुझे शरमिन्दा होना पड़े। (گلستان سعدی ص۱۱۶)

ग़लत़ मस्अला बताना : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस वाक़िए़ से सीखने को मिला कि जब अहले इ़ल्म हज़रात की सोहबत हासिल हो तो ज़बान बन्द रखनी चाहिये कि इस त़रह़ اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم उन की बातें अच्छी त़रह़ सुन और समझ सकेंगे, बोलते रहने की सूरत में एक तो हो सकता है कि सीखने समझने से महरूमी हो और दूसरे येह भी हो सकता है कि सामने से कोई सुवाल हो जाए और जवाब न बन पड़े। येह बात ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि जब किसी बात का दुरुस्त जवाब मा'लूम न हो तो जान बूझ कर ग़लत़ सलत़ जवाब नहीं देना चाहिये। ख़ुसूसन शरई़ मसाइल का जवाब उस वक़्त तक न दिया जाए जब तक 100 फ़ीसदी यक़ीनी मा'लूमात न हो। अपनी अट्कल से शरई़ मस्अला बताना अपनी आख़िरत को दाव पर लगाना है। क़ुरआने करीम पारह 11 **सूरए यूनुस** आयत 68 में इर्शादे इलाही है :

اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۸﴾

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इ़रफ़ान : क्या तुम **अल्लाह** पर वोह बात कहते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं।

जवाब देने से डरने वालों की तीन मिसालें : जो लोग बिग़ैर इ़ल्म के दीनी सुवालात के अपनी अट्कल से जवाबात दे रहे होते हैं वोह इस आयते मुबारका से दर्स (LESSON) लें। वोह उ़लमाए किराम जो दीनी अह़कामात जानने और दूसरों के सुवालात के जवाबात देने की

https://www.dawateislamiindia.org/

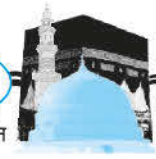

सलाहिय्यत रखने के बा वुजूद जवाबात देने में **अल्लाह** पाक से डरते थे उन की तीन मिसालें : ﴾1﴿ सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने फ़रमाया : जो लोगों के हर सुवाल का जवाब देता है वोह मजनूं (या'नी पागल) है। और لَا اَدْرِی (या'नी मैं नहीं जानता) आ़लिम की ढाल है क्यूं कि अगर उस ने ग़लत़ मस्अला बता दिया तो हलाकत में मुब्तला होगा ﴾2﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स नैशापूरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "आ़लिम वोही है कि जब उस से सुवाल किया जाए तो वोह ख़ौफ़ज़दा हो कि बरोज़े क़ियामत उस से पूछा जाएगा तुम ने कहां से जवाब दिया ?" ﴾3﴿ हज़रते इब्राहीम तमीमी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से जब कोई मस्अला मा'लूम किया जाता तो रोने लगते और फ़रमाते : "तुम्हें मेरे इ़लावा कोई और नहीं मिला कि तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ गई।" (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 1, स. 241, احیاء العلوم ج۱ص۱۰۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾16﴿ अ़क़्ल मन्दी दूसरे की बात न काटने में है

हज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने एक दानिश्वर (या'नी अहले इ़ल्म) के बारे में येह सुना कि वोह कहा करते थे कि कोई शख़्स भी अपनी जहालत का इक़रार नहीं करता सिवाए उस शख़्स के कि जब कोई दूसरा बात कर रहा होता है तो उस की बात ख़त्म होने से पहले ही बीच में अपनी बात शुरूअ़ कर देता है। समझदार आदमी उस वक़्त तक अपनी बात शुरूअ़ नहीं करता जब तक दूसरे की बात ख़त्म न हो जाए। (گلستانِ سعدی، ص ۱۱۸)

ख़्वाह म ख़्वाह बीच में बोलने वाला ना समझ होता है : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस वाक़िए में येह बताया गया है कि जो ख़्वाह म ख़्वाह दूसरे की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ कर देता है वोह ख़ुद को ना समझ तस्लीम कर रहा है। वरना जो समझदार है वोह दूसरे की बात पूरी हो जाने तक बीच में नहीं बोलता। येह भी याद रहे कि दूसरों की बात काट कर अपनी बात

https://www.dawateislamiindia.org/

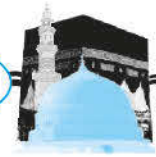

शुरूअ़ कर देना इस्लामी आदाबे गुफ़्तगू के ख़िलाफ़ है। मक्तबतुल मदीना के 36 सफ़हात के रिसाले : "एह़तिरामे मुस्लिम" सफ़ह़ा 30 पर है : (**अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) किसी की बात को न काटते अलबत्ता अगर कोई ह़द से तजावुज़ करने (या'नी बढ़ने) लगता तो उस को मन्अ़ फ़रमाते या वहां से उठ जाते। (شمائل ترمذی ص۱۹۹۔۲۰۰ سے خلاصہ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾17﴿ राज़दारी के लिये ख़ामोशी ज़रूरी है

ह़ज़रते सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़्नवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ख़ास ग़ुलामों में से चन्द ग़ुलामों ने बादशाह के एक ख़ादिमे ख़ास से पूछा की आज बादशाह ने फ़ुलां मुआ़मले में तुझ से क्या कहा ? बादशाह जो कुछ तुझ से कहते हैं वोह हम जैसों से कहना दुरुस्त नहीं समझते। इस पर उस ख़ादिमे ख़ास ने कहा : "बादशाह सलामत मुझ से इस लिये कहते हैं कि उन को मुझ पर भरोसा है कि मैं वोह बात किसी और को नहीं बताऊंगा।" (گلستان سعدی ص۱۱۸ بتغیر قلیل)

वॉट्सएप के पैग़ामात दूसरों को भेजना : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बात भी अमानत होती है, बा'ज़ अवक़ात कोई शख़्स किसी को बात बताते हुए इधर उधर देख लेता है कि कोई सुन तो नहीं रहा या जिस से बात कर रहा है उसे दूसरे को बताने से मन्अ़ कर देता है इन सूरतों में वोह बात किसी को बतानी नहीं होती। बसा अवक़ात वोह किसी से ऐसी बात करता है कि वोह दूसरे को बताने जैसी नहीं होती तो अब भी दूसरे को न बताई जाए। बा'ज़ लोग अपने दोस्तों वग़ैरा के वॉट्सएप के ज़रीए़ मिले हुए पैग़ामात बिला तक्ल्लुफ़ दूसरों को फ़ॉरवर्ड कर रहे होते हैं उन को भी मोह़तात़ रहना चाहिये।

किसी की बात दूसरों को न बताने के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **किसी** की बात दूसरे को न बताने के मुतअ़ल्लिक़ दो **फ़रामीने मुस्त़फ़ा**

https://www.dawateislamiindia.org/

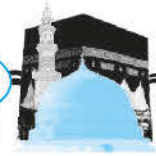

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये : (1) "जब कोई आदमी बात कर के इधर उधर देखे तो वोह बात **अमानत** है।" (ترمذی ج۳ ص۳۸٦ حدیث ۱۹٦٦)

शर्हे ह़दीस : "मिरआत" में है : या'नी अगर कोई शख़्स तुम से अकेले में कोई बात कहे और बात के दौरान या बात के दरमियान में इधर उधर देखे कि कोई सुन न ले तो वोह अगर्चे मुंह से न कहे कि येह किसी से न कहना मगर उस की येह ह़रकत बताती है कि वोह राज़ की बात है लिहाज़ा उसे अमानत समझो, उस का राज़ ज़ाहिर न करो, किसी से येह बात न कहो। سُبْحٰنَ اللهِ कैसी पाकीज़ा ता'लीम है! (मिरआत, जि. 6, स. 629) (2) मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : जब बात करे झूट कहे, जब वा'दा करे ख़िलाफ़ करे और जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे। (بخاری ج۱ ص۲٤ حدیث ۳۳) या'नी जब कोई उसे किसी बात का राज़दार बनाता है तो दूसरे लोगों को बता देता है या अमानत लौटाने से इन्कार कर देता है या अमानत की ह़िफ़ाज़त नहीं करता उसे अपने इस्ति'माल में लाता है वग़ैरा। (مکاشفة القلوب ص٤٤, मुकाशफ़तुल क़ुलूब (उर्दू), स. 95)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿ सलामती चाहिये तो चुप रहना ज़रूरी है

ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं एक ऐसे शख़्स को जानता हूं जो 20 साल से येह तमन्ना कर रहा है कि उस की ज़िन्दगी का कोई एक दिन (ताबेई बुज़ुर्ग) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दिनों की त़रह़ सलामती से गुज़रे लेकिन वोह ऐसा कर नहीं पाता वोह चाहता है कि ख़ामोश न रहे बल्कि बातें भी करे और ज़बान की आफ़त से इस त़रह़ मह़फ़ूज़ रहे जिस त़रह़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मह़फ़ूज़ रहते हैं।

(**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 3, स. 57, حلیة الاولیاء ج۳ص٤۳ मा'मूली फ़र्क़ के साथ)

https://www.dawateislamiindia.org/

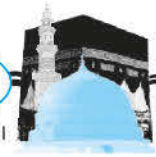

बहुत बड़ा धोका : **इस** वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि नेक बनने के लिये सिर्फ़ नेकियां करने की तमन्ना करते रहना काफ़ी नहीं, नेकियां करनी भी होंगी। "एह़याउल उ़लूम" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे नज़्दीक बड़े धोकों में से येह भी है कि आदमी मग़्फ़िरत की उम्मीद रखते हुए बिग़ैर किसी नदामत (या'नी शरमिन्दगी) के गुनाहों में मश्ग़ूल रहे और इ़बादत के बिग़ैर **अल्लाह** पाक के क़ुर्ब (या'नी क़रीब होने) की उम्मीद रखे और जहन्नम का बीज बो कर जन्नत की खेती का मुन्तज़िर रहे और गुनाह पर गुनाह किये जाने के बा वुजूद नेक बन्दों के घर (या'नी जन्नत) का उम्मीद वार रहे और नेक आ'माल के बिग़ैर सवाब का इन्तिज़ार करे और ज़ियादती के बा वुजूद **अल्लाह** पाक से (मग़्फ़िरत की) तमन्ना रखे। फिर आप ने येह अश्आ़र पढ़े : تَرْجُو النَّجَاةَ وَلَمْ تَسْلُكْ مَسَالِكَهَا اِنَّ السَّفِيْنَةَ لَا تَجْرِیْ عَلَی الْيَبَسِ

तरजमा : तुम नजात की उम्मीद तो रखते हो मगर इस के रास्तों पर नहीं चलते, यक़ीनन कश्ती ख़ुश्की पर नहीं चला करती। (احیاء العلوم ج٤ ص٤١٧ تا ٤١٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾19﴿ ह़िक्मत कैसे आती है ?

ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते अबू ख़ालिद رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को फ़रमाते सुना की **ह़िक्मत** तीन चीज़ों से आती है : (1) **ख़ामोश** रहने (2) ग़ौर से सुनने और (3) सुन कर याद रखने से। और तीन ख़स्लतों की वज्ह से **ह़िक्मत का फल** मिलता है : (1) हमेशा के घर (या'नी जन्नत) की त़रफ़ रुजूअ़ करने (या'नी जन्नत में ले जाने वाले आ'माल करने) (2) धोके के घर (या'नी दुन्या की मह़ब्बत) से दूर होने और (3) मौत से पहले मौत की तय्यारी करने से। (**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 7, स. 336, (حلیۃ الاولیاء ج٧ ص٣٣٠

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

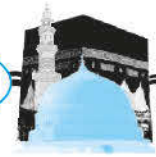

﴾20﴿ जवाब क्यूं नहीं देते ?

करोड़ों शाफ़िइ़य्यों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से एक बार कुछ पूछा गया तो **ख़ामोश** रहे। किसी ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! **अल्लाह** करीम आप पर रह़म फ़रमाए ! आप जवाब क्यूं नहीं देते ? फ़रमाया : "पहले मैं येह जान लूं कि मेरे जवाब देने में फ़ज़ीलत है या **ख़ामोश** रहने में।" (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 1, स. 102, احیاء العلوم ج ص ٤٤)

येह है बोलने से पहले तोलना : سُبْحٰنَ اللهِ ! येह है बोलने से पहले तोलना ! काश ! हम भी बात करने से क़ब्ल ग़ौर कर लिया करें कि जो बात करने जा रहे हैं उस में सवाब भी मिलेगा या नहीं ? ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : सह़ाबा व ताबिईन رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पांच चीज़ों में मश्ग़ूल रहते थे : "(1) तिलावते क़ुरआने करीम (2) मसाजिद आबाद करना (3) ज़िक्रुल्लाह (4) नेकी की दा'वत देना और (5) बुराई से मन्अ़ करना।" और इस की वज्ह येह थी कि उन्हों ने येह **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन रखा था कि "इन्सान का हर कलाम (या'नी बोलना) उस के लिये वबाल है मुफ़ीद नहीं, सिवाए नेकी की दा'वत देने या बुराई से मन्अ़ करने या ज़िक्रुल्लाह के।" [ترمذی ج ٤ ص ١٨٥ حدیث ٢٤٢٠] (احیاء العلوم ج ١ ص ١٠٠ بتصرف)

अल्लाह पाक क़ुरआने मजीद पारह 5 **सूरतुन्निसाअ** आयत 114 में इर्शाद फ़रमाता है :

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : उन के अक्सर ख़ुफ़्या मश्वरों में कोई भलाई नहीं होती मगर उन लोगों (के मश्वरों) में जो सदक़े का या नेकी का या लोगों में बाहम सुल्ह़ कराने का मश्वरा करें।

https://www.dawateislamiindia.org/

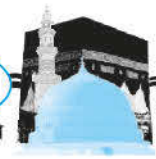

﴾21﴿ अ़क़्लमन्द गूंगा, ना समझ बातूनी से बेहतर है

ह़ज़रते का'बुल अह़्बार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने बेटे से फ़रमाया : बेटा ! "अ़क़्लमन्द गूंगा" बन जाना मगर "जाहिल बातूनी" न बनना, तुम्हारी राल सीने पर टपक रही हो (या'नी बोलने को बहुत ही जी चाह रहा हो) और तुम अपनी ज़बान को फ़ुज़ूल बातों से बचाए हुए हो तो येह तुम्हारे लिये इस बात से उ़म्दा व बेहतर है कि लोगों के साथ बैठ कर तुम फ़ुज़ूल व बे फ़ाएदा बातें करो। हर **अ़मल** की दलील होती है, अ़क़्ल की दलील ग़ौरो फ़िक्र है और ग़ौरो फ़िक्र की दलील **ख़ामोशी**। हर चीज़ की सुवारी होती है, अ़क़्ल की सुवारी तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) है, तुम्हारी जहालत के लिये येही काफ़ी है कि तुम अ़क़्ल की सुवारी को इख़्तियार न करो और तुम्हारी अ़क़्ल मन्दी के लिये येही काफ़ी है कि लोग तुम्हारे शर (या'नी बुराई) से मह़फ़ूज़ रहें। (**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 6, स. 13, حلیۃ الاولیاء ج٦ ص ٦)

लोगों को अपने शर से बचाओ : سُبْحٰنَ اللهِ ! इस वाक़िए़ में निहायत अनमोल **मदनी फूल** बयान हुए हैं और आख़िरी मदनी फूल "तुम्हारी अ़क़्ल मन्दी के लिये येह काफ़ी है कि लोग तुम्हारे शर से मह़फ़ूज़ रहें" भी ख़ूब है। इस सिल्सिले में कुछ मदनी फूल पेश किये जाते हैं : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللهُ عَنْه को इर्शाद फ़रमाया : "लोगों को शर (या'नी बुराई) से बचाए रखो क्यूं कि येह सदक़ा है जो तुम अपनी जान के लिये दोगे।" (بخاری ج٢ ص١٥٠ حدیث ٢٥١٨ مختصراً)

शर्ह़े ह़दीस : "मिरआत" में है : या'नी कोशिश करो कि तुम से किसी को नुक़्सान न पहुंचे। (मिरआत, जि. 5, स. 181)

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : बुराई का तर्क करना ऐसी चीज़ है जिस के ज़रीए़ तुम अपने ऊपर सदक़ा करते हो या'नी "किसी

https://www.dawateislamiindia.org/

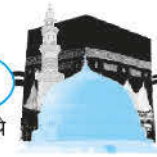

के साथ बुराई न करना" भी नेक काम है, जब कि बुराई पर क़ुदरत भी हो। लोगों पर सदक़ा करना दर अस्ल अपनी ज़ात ही पर सदक़ा करना है इस लिये फ़रमाया कि तुम अपनी ज़ात पर सदक़ा करते हो। (اشعۃ اللمعات ج۳ص۲۰۳)

शर से बचाने की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम्हारा भला शख़्स वोह है जिस से ख़ैर (या'नी भलाई) की उम्मीद की जाए और उस के शर (या'नी बुराई) से अम्न हो, और तुम्हारा बुरा शख़्स वोह है जिस से ख़ैर (या'नी भलाई) की उम्मीद न की जाए और उस के शर (या'नी बुराई) से अम्न न हो। (ترمذی ج٤ص١١٦حدیث ٢٢٧٠ سے مختصرا)

शर्हे हदीस : हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हदीसे पाक के इस हिस्से : "जिस से ख़ैर (या'नी भलाई) की उम्मीद की जाए और उस के शर (या'नी बुराई) से अम्न हो" की वज़ाहत में फ़रमाते हैं : या'नी क़ुदरती तौर पर लोगों के दिलों में उस की तरफ़ से इत्मीनान हो कि येह शख़्स किसी को तक्लीफ़ नहीं देता, हो सकता है तो ख़ैर (या'नी भलाई) ही करता है। इस हिस्सए हदीस : "जिस से ख़ैर की उम्मीद न की जाए और उस के शर से अम्न न हो" के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : या'नी क़ुदरती तौर पर लोग उस से डरते हों कि येह शख़्स ख़तरनाक है इस से बचो, इस से ख़ैर (या'नी भलाई) न पहुंचेगी शर (या'नी बुराई) ही पहुंचेगी। (मिरआत, जि. 6, स. 579)

जन्नत में ले जाने वाले तीन आ'माल : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स हलाल खाए, सुन्नत पर अ़मल करे और लोग उस के फ़ितनों से महफ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आज कल बहुत से ऐसे लोग हैं। इर्शाद फ़रमाया : "मेरे बा'द वाले ज़मानों में भी होंगे।" (ترمذی ج٤ص٢٣٣حدیث ٢٥٢٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

https://www.dawateislamiindia.org/

﴾22﴿ हर बेकार बात पर एक दिरहम ख़ैरात

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने नफ़्स से अ़हद किया कि मेरे मुंह से जो भी लाया'नी (या'नी बेकार) बात निकलेगी मैं उस के बदले दो रक्अ़त (नफ़्ल) अदा करूंगा, लेकिन येह काम मुझ पर आसान रहा, फिर मैं ने ख़ुद पर हर बेकार बात के बदले एक (नफ़्ल) रोज़ा रखना लाज़िम ठहरा लिया, येह भी मुझे आसान मा'लूम हुवा और बेकार बातों से रुका नहीं यहां तक कि मैं ने हर बेकार बात के बदले अपने ऊपर एक दिरहम ख़ैरात करना लाज़िम कर लिया तो येह काम नफ़्स पर मुश्किल बन गया और आख़िर कार मैं बेकार बातें करने से रुक ही गया।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), जि. 1, स. 461, قوت القلوب ج۱ص۲۰۲)

20 साल तक मुसल्सल कोशिश : **इस** वाक़िए़ में फ़ुज़ूल बातों की आ़दत निकालने का बेहतरीन नुस्ख़ा बयान हुवा। इन्सान अगर किसी बात को अपने ऊपर सन्जीदा ले और सच्चे दिल से कोशिश करे तो **अल्लाह** पाक के करम से काम्याबी मिल ही जाती है। कहा जाता है : مَا ثَبَتَ نَبَطَ या'नी "जो जमा रहा वोह उग ही जाता है।" मत़लब येह कि भरपूर कोशिश करते रहने से काम्याबी मिल जाती है। एह्याउल उ़लूम में है : बा'ज़ बुज़ुर्गों का कहना है : मैं ने 20 साल तक क़ुरआने करीम (पढ़ने में) रियाज़त (या'नी मेह़नतो मशक़्क़त) की और 20 साल तक इस से नफ़्अ़ उठाया। (देखिये : एह्याउल उ़लूम (उर्दू), जि. 1, स. 902)

कोशिश के मुतअ़ल्लिक़ आयते क़ुरआनी : **ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** किसी अच्छे या दीनी काम में काम्याबी मिलने में ताख़ीर (या'नी LATE) होने पर मायूस होने के बजाए सब्रो हिम्मत के साथ कोशिश जारी रखनी चाहिये। कोशिश के मुतअ़ल्लिक़ पारह 21 **सूरतुल अ़न्कबूत** आयत 69 में इर्शादे इलाही है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।

https://www.dawateislamiindia.org/

राहे ख़ुदा में कोशिश करने वालों को ख़ुश ख़बरी : "**सिरातुल जिनान**" में है : इस आयत के मा'ना बहुत वसीअ़ हैं, इस लिये मुफ़स्सिरीन ने मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में इसे ता'बीर किया है। यहां चार अक़्वाल बयान किये जाते हैं : (1) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : इस (मुबारक आयत) के मा'ना येह हैं कि जिन्हों ने हमारी इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) करने में कोशिश की, हम ज़रूर उन्हें अपने सवाब के रास्ते दिखा देंगे (2) ह़ज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस के मा'ना येह हैं कि जो लोग तौबा करने में कोशिश करेंगे, हम ज़रूर उन्हें इख़्लास के रास्ते दिखा देंगे (3) ह़ज़रते फ़ुज़ूल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस के मा'ना येह हैं कि जो लोग इ़ल्म ह़ासिल करने में कोशिश करेंगे, हम ज़रूर उन्हें अ़मल की राहें दिखा देंगे (4) ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस के मा'ना येह हैं कि जो सुन्नत को क़ाइम करने में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत के रास्ते दिखा देंगे। (تفسیر مدارک ص۸۹۹، تفسیر خازن ج۳ص۴۵۷ ملتقطاً)

येह आयते करीमा शरीअ़तो त़रीक़त की जामेअ़ है या'नी जो तौबा में कोशिश करेंगे उन्हें इख़्लास की, जो त़लबे इ़ल्म में कोशां (या'नी कोशिश करने वाले) होंगे उन्हें अ़मल की, जो इत्तिबाए़ सुन्नत में (या'नी राहे सुन्नत पर चलने की) कोशिश करेंगे उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे। ह़क़ तआ़ला तक पहुंचने के इतने रास्ते हैं जितने तमाम मख़्लूक़ के सांस हैं।

(सिरातुल जिनान, जि. 7, स. 409 ता 410)

कम ज़हीन त़ालिबे इ़ल्म बहुत बड़े इमाम बन गए (वाक़िआ़) : करोड़ों ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रत इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने शागिर्दे रशीद ह़ज़रत इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से फ़रमाया : "तुम तो बहुत कम ज़हीन (LESS INTELLIGENT) थे मगर तुम्हारी कोशिश और इस्तिक़ामत (या'नी मज़बूती से जमे रहने) ने तुम्हें आगे बढ़ाया।" (राहे इ़ल्म, स. 53) अ़रबी कहावत है : مَنْ جَدَّ وَجَدَ या'नी "जिस ने कोशिश की उस ने पा लिया।"

https://www.dawateislamiindia.org/

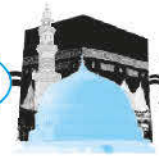

बादशाह और च्यूंटी (वाक़िआ) : कहते हैं कि एक बादशाह ने किसी अ़लाक़े को फ़त्ह़ करने के लिये छे से ज़ियादा बार ह़म्ले किये मगर वोह अ़लाक़ा फ़त्ह़ करने में नाकाम रहा। जब उस का आख़िरी ह़म्ला भी नाकाम हो गया तो वोह थक हार कर मायूसी की ह़ालत में कमरे में आराम करने की ग़रज़ से लैट गया। लगातार नाकाम हो जाने वाले ह़म्लों का सोचते हुए अचानक उस की नज़र कमरे की दीवार पर चढ़ती एक च्यूंटी पर पड़ी। जो बार बार गिरने के बा वुजूद दीवार पर चढ़ने का इरादा तर्क नहीं कर रही थी। कई बार तो वोह दीवार (Wall) के आख़िरी सिरे के बहुत ही क़रीब पहुंच जाती मगर फिर नीचे गिर जाती और दोबारा से दीवार पर चढ़ने की कोशिश में लग जाती। आख़िर दरजन भर (या'नी 12) से ज़ाइद कोशिशों के बा'द वोह अपने मक़्सद में काम्याब हो गई। कहा जाता है कि उस बादशाह ने जब च्यूंटी की ऐसी लगातार कोशिश देखी तो उस ने समझ लिया कि **कोशिश काम्याबी की कुन्जी है,** इस के बा'द उस बादशाह ने नए जोशो जज़्बे से फिर ह़म्ला किया और अपने मक़्सद में काम्याबी ह़ासिल की।

वोह कौन सा उ़क़्दा है जो वा हो नहीं सकता हिम्मत करे इन्सान तो क्या हो नहीं सकता

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : उ़क़्दा : गांठ, गिरह। **वा :** खुला हुवा, कुशादा।

शे'र का मत़लब : वोह कौन सी गांठ है जो खुल नहीं सकती, आदमी हिम्मत करे तो वोह कौन सा काम है जो नहीं हो सकता !

बिल्ली ने कमाल कर दिया ! : ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते शअ़बी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (सल्त़नते बनू उमय्या का गवर्नर) ज़ियाद के ग़ुलाम व दरबान (गार्ड) "अ़ज्लान" ने मुझे बताया कि ज़ियाद जब घर से निकलता तो मैं उस के आगे आगे मस्जिद तक जाता और मस्जिद में दाख़िल होने के बा'द भी उस की निशस्त गाह (या'नी बैठक) तक आगे आगे ही चलता, एक दिन वोह निशस्त गाह (या'नी बैठक) में दाख़िल हुवा तो एक बिल्ली (CAT) को देखा जो घर के एक कोने में बैठी थी, मैं उसे भगाने के लिये गया तो ज़ियाद ने कहा : इसे छोड़ दो, देखें क्या करती है। फिर उस ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी और लौट आया फिर हम अ़स्र पढ़ कर निशस्त गाह लौटे तो

https://www.dawateislamiindia.org/

बिल्ली को वहीं मौजूद पाया, गुरूबे शम्स (या'नी सूरज डूबने) से थोड़ा पहले एक चूहा निकला तो बिल्ली ने झपट्टा मार कर उसे दबोच लिया। ज़ियाद ने कहा : जिसे कोई ह़ाजत हो तो वोह इस बिल्ली की त़रह़ मुस्तक़िल मिज़ाजी से (या'नी ख़ूब जम कर) उस में लगा रहे (या'नी कोशिश जारी रखे) उसे काम्याबी मिल जाएगी (اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم)। (**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 4, स. 394)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾23﴿ तुम अपनी ख़ामोशी पर फ़ख़्र करना

ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने साह़िब ज़ादे को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! जब लोग अपने ख़ूब सूरत कलाम (या'नी बनी सजी गुफ़्तगू) पर फ़ख़्र कर रहे हों तो तुम उन के साथ मत मिल जाना बल्कि तुम उस वक़्त अपनी **ख़ामोशी** पर फ़ख़्र (या'नी नाज़) करना। (المستطرف ج ١ ص ١٤٧)

ख़ामोशी में कमाल है : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़िक्मत भरे मदनी फूल के भी क्या कहने ! वाक़ेई येह ह़क़ीक़त है कि चिकनी चुपड़ी लच्छेदार, ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ से सजी हुई बातें करना हरगिज़ कमाल नहीं, कमाल तो येह है कि फ़ुज़ूल बोलने की शदीद ख़्वाहिश के बा वुजूद आदमी सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये **ख़ामोशी** इख़्तियार करे। **अल्लाह** करीम हमें भी **ख़ामोशी** वाला कमाल नसीब फ़रमाए, आमीन। सवाब से ख़ाली, ख़ूब सूरत गुफ़्तगू किसी काम की नहीं। ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम कभी ऐसे शख़्स से मिलते हो जिस की गुफ़्तगू में (अ़रबी क़वाइद के ए'तिबार से) एक ह़र्फ़ की भी ग़लती नहीं होती मगर उस के आ'माल ग़लतियों से भरे पड़े होते हैं। (مسند ابراهيم بن ادهم ص ٣٣ قول نمبر ٢٤) ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने अपनी गुफ़्तगू को उ़म्दा बनाया और उस में कोई ग़लती न की, लेकिन अपने आ'माल में ग़लती की उसे दुरुस्त न किया।

(المجالسة وجواهر العلم ج ١ ص ٣٣٢ قول نمبر ٨٥١)

https://www.dawateislamiindia.org/

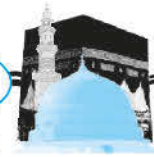

﴾24﴿ परिन्दा बोल कर फंस गया !

हज़रते मख़्लद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बनी इसराईल में एक शख़्स था जो अक्सर **ख़ामोश** रहा करता था। बादशाह ने इस की वज्ह पूछने के लिये किसी को उस के पास भेजा मगर उस ने कोई बात न की, फिर बादशाह ने लोगों के साथ उसे शिकार के लिये भेजा शायद कोई शिकार नज़र आए तो वोह बोले। लोगों ने एक परिन्दे को ज़ोर से चिल्लाते देखा तो जल्दी से उस की त़रफ़ बाज़ छोड़ा जिस ने जा कर उसे पकड़ लिया। येह देख कर उस शख़्स ने कहा : हर शै के लिये **ख़ामोशी** अच्छी (कि इस में सलामती) है यहां तक कि परिन्दों के लिये भी।

(एक चुप सो सुख (ख़ामोशी के फ़ज़ाइल), स. 22)

﴾25﴿ "बहुत अफ़्सोस हुवा" कहना

हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, (शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मौलाना) मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का जो भी जुम्ला ज़बान से निकलता वोह जचा तुला (या'नी ठीक, दुरुस्त) होता, जब भी किसी के बारे में सुनते कि उस का इन्तिक़ाल हो गया है तो फ़ौरन दुआए मग़्फ़िरत के लिये हाथ उठ जाता। इस त़रह़ के बहुत से ख़ुत़ूत़ भी ह़ज़रत की ख़िदमत में आते। एक मरतबा किसी के ता'ज़ियती ख़त़ का जवाब लिखना था, मुफ़्ती मुजीबुल इस्लाम साह़िब से फ़रमाया कि जवाब लिख दें, मैं दस्तख़त़ कर देता हूं। चुनान्चे मुफ़्ती साह़िब ने जवाब लिखा कि "आप का ख़त़ मिला, साह़िब ज़ादे के इन्तिक़ाल की ख़बर पढ़ कर **बहुत अफ़्सोस** हुवा।" ह़ज़रत ने जवाब सुनने के बा'द फ़ौरन टोका, **बहुत अफ़्सोस तो नहीं हुवा,** हां **अफ़्सोस** हुवा। (जहाने मुफ़्तिये आ'ज़म, स. 319)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! येह थी **वलिय्युल्लाह** और सच्चे आ़शिक़े रसूल की लिखने बोलने में एह़तियात़ ! हमें भी मोह़तात़ अल्फ़ाज़ बोलने की आ़दत बनानी चाहिये, मसलन किसी

https://www.dawateislamiindia.org/

के वालिद साहिब के इन्तिक़ाल पर इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ कहना कि मुझे आप के अब्बूजान के इन्तिक़ाल की ख़बर से सख़्त धचका लगा, बहुत सदमा हुवा, मैं बहुत उदास हो गया, मुझे सख़्त अफ़्सोस है, येह तमाम जुम्ले भी क़ाबिले ग़ौर हैं अगर दिल की कैफ़िय्यत ऐसी न होने के बा वुजूद किसी ने इरादतन इस त़रह़ के जुम्ले कहे तो उस ने झूट बोला और गुनाहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार हुवा।

"बेह़द बुख़ार है" कहना कैसा ? : **ह़ुज़ूर** मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه को अपने वालिदे मोह़तरम आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه के फ़ैज़ान से लिखने बोलने में एह़तियात़ की तरबियत ह़ासिल हुई थी, ह़ुज़ूर आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه भी निहायत मोह़तात़ अल्फ़ाज़ इस्ति'माल फ़रमाते चुनान्चे "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" सफ़ह़ा 325 पर है : बा'दे अ़स्र किसी साहिब ने एक मरीज़ का ज़िक्र करते हुए (आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه से) अ़र्ज़ किया कि "बेह़द बुख़ार है।" इस पर इर्शाद फ़रमाया : बेह़द बुख़ार के तो येह मा'ना हैं कि : उस की इन्तिहा ही नहीं ! कभी उतरेगा ही नहीं ! कोस्ते तो आप ख़ुद हैं। (फिर फ़रमाया :) **सूरतुल मुजादलह** जो 28वें पारे की पहली सूरत है बा'दे अ़स्र तीन मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाइये।

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! हमें अपने क़ीमती अवक़ात का क़द्रदान बना, फ़ुज़ूल कामों और बेकार बातों से बचा और ज़िन्दगी भर नेकियां करते रहने और गुनाहों से बचे रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمین بجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही !

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत
और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

रमज़ान शरीफ़ 1443 सि.हि.
एप्रिल 2022

https://www.dawateislamiindia.org/

मआख़िज़ो मराजेअ

	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ/سال اشاعت
1	قرآنِ پاک	کلامِ الٰہی	☆☆☆☆☆
2	ترجمۂ کنزالعرفان	مفتی ابوصالح محمد قاسم قادری مدظلہ العالی	
	کتبِ تفسیر		
3	تفسیر طبری	علامہ ابوجعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٠ھ
4	تفسیر بغوی	امام ابومحمد حسین بن مسعود رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٤ھ
5	تفسیر درمنثور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالفکر بیروت ١٤٠٣ھ
6	تفسیر خازن	علامہ علاء الدین علی بن محمد بغدادی رحمۃ اللّٰہ علیہ	مصر ١٤١٧ھ
7	تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی رحمۃ اللّٰہ علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
8	تفسیر ابوسعود	علامہ ابوسعود محمد بن مصطفٰی عمادی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالفکر بیروت
9	تفسیر مدارک	علامہ ابوالبرکات عبداللّٰہ بن احمد بن محمود نسفی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالمعرفہ بیروت ١٤٢١ھ
10	تفسیر صاوی	علامہ احمد بن محمد صاوی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالفکر بیروت ١٤٢١ھ
11	تفسیر خزائن العرفان	علامہ سید نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللّٰہ علیہ	
12	صراط الجنان فی تفسیر القران	مفتی ابوصالح محمد قاسم قادری مدظلہ العالی	
	کتبِ حدیث		
13	صحیح بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٩ھ
14	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالکتاب العربی بیروت ١٤٢٧ھ
15	سنن ترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالفکر بیروت ١٤١٤ھ
16	سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٦ھ
17	سنن ابوداود	امام سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللّٰہ علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ١٤٢١ھ
18	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالمعرفہ بیروت ١٤٢٠ھ
19	موطا امام مالک	امام مالک بن انس رحمۃ اللّٰہ علیہ	// ١٤٢٠ھ
20	مسند امام احمد بن حنبل	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالفکر بیروت ١٤١٤ھ
21	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢١ھ
22	الفردوس بمأثور الخطاب	امام شیرویہ بن شہردار دیلمی رحمۃ اللّٰہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤٠٦ھ

https://www.dawateislamiindia.org/

23	معجم کبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
24	معجم صغیر	//	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۳ھ
25	شرح السنۃ	امام ابو محمد الحسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
26	مصنف عبدالرزاق	امام ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام صنعانی رحمۃ اللہ علیہ	// ۱۴۲۱ھ
27	الزہد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ	دارالغد الجدید مصر ۱۴۲۶ھ
28	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
29	جامع صغیر	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ علیہ	// ۱۴۲۵ھ
30	مشکوٰۃ	علامہ محمد بن عبداللہ خطیب تبریزی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
31	حلیۃ الاولیاء	علامہ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ	// ۱۴۱۸ھ
32	اللہ والوں کی باتیں (ترجمہ حلیۃ الاولیاء)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	
33	کتاب التوبۃ	امام عبداللہ بن محمد، ابوبکر بن ابی دنیا رحمۃ اللہ علیہ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
34	حسن الظن باللہ	//	//
35	الصمت	//	//
36	عمل الیوم واللیلۃ	امام احمد بن محمد المعروف ابن السُّنّی رحمۃ اللہ علیہ	دارابن حزم بیروت ۱۴۲۷ھ
37	مسند ابراہیم بن ادہم	حافظ محمد بن اسحاق المعروف بابن مندۃ رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ القران

کتبِ شروحاتِ حدیث

38	الاستذکار	امام یوسف بن عبداللہ محمد بن عبدالبر رحمۃ اللہ علیہ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
39	التمہید	امام یوسف بن عبداللہ محمد بن عبدالبر رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
40	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
41	فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرؤف مناوی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
42	التیسیر	//	مکتبہ امام شافعی ریاض ۱۴۰۸ھ
43	اشعۃ اللمعات	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ	
44	مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی قاری رحمۃ اللہ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
45	السراج المنیر	علامہ علی بن احمد بن محمد عزیزی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ الایمان مدینہ منورہ
46	مراٰۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ علیہ	
47	نزہۃ القاری شرح صحیح بخاری	مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ علیہ	// ۱۴۲۴ھ

کتبِ فقہ

48	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ	
49	بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ المدینہ
50	غیبت کی تباہ کاریاں	(علامہ مولانا) محمد الیاس عطار قادری رضوی (دامت برکاتہم العالیہ)	مکتبۃ المدینہ

کتبِ تاریخ وسیرت

51	شمائل ترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
52	تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر احمد بن علی معروف بہ خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
53	ابن عساکر	علامہ ابوالقاسم علی بن حسن رحمۃ اللہ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
54	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ
55	مناقب امام احمد بن حنبل	امام عبدالرحمٰن ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ الخانجی مصر ۱۳۹۹ھ
56	سیرت ابن عبدالحکم	ابومحمد عبدُاللہ بن عبدالحکم رحمۃ اللہ علیہ	مکتبہ وہبہ
56	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فریدالدین محمد عطار رحمۃ اللہ علیہ	انتشارات گنجینہ تہران
57	الملفوظ	مفتی اعظم ہند مصطفیٰ رضا خان رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ المدینہ
58	جہانِ مفتی اعظم	علامہ محمد احمد مصباحی اعظمی، علامہ عبدالمبین نعمانی مصباحی، مولانا مقبول احمد سالک مصباحی	رضا اکیڈمی ممبئی

کتب تصوف واخلاق وغیرہ

59	ادب الدنیا والدین	ابوالحسن علی بن محمد بن حبیب الماوردی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۸ھ
60	کشف المحجوب	علامہ علی بن عثمان ہجویری رحمۃ اللہ علیہ	
61	قوت القلوب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
62	قوت القلوب (اردو)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ
63	تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ علیہ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۵ھ
64	احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ	دارصادر بیروت ۲۰۰۰ء
65	احیاء العلوم (اردو)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ
66	منہاج العابدین	امام ابوحامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
67	منہاج العابدین (اردو)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ
68	اتحاف السادۃ المتقین	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمۃ اللہ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
69	لواقح الانوار القدسیہ	امام عبدالوہاب بن احمد حنفی شعرانی رحمۃ اللہ علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت

https://www.dawateislamiindia.org/

70	المجالسۃ وجواہر العلم	حافظ ابوبکر احمد بن مروان دینوری مالکی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
71	حدیقہ ندیہ	علامہ عبد الغنی نابلسی حنفی رحمۃ اللہ علیہ	
72	اصلاحِ اعمال (ترجمہ حدیقہ ندیہ)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۱ھ
73	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی رحمۃ اللہ علیہ	
74	القول البدیع	امام حافظ محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی رحمۃ اللہ علیہ	مؤسسۃ الریان ۱۴۲۲ھ
75	مثنوی مولوی معنوی	مولانا جلال الدین رومی رحمۃ اللہ علیہ	انتشارات ایران یاران ۱۳۹۰ھ
76	مکاشفۃ القلوب	منسوب بہ امام ابو حامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
77	حسن التسمت فی الصمت	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۷ھ
78	ایک چپ سو سکھ (ترجمہ حسن التسمت)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۱ھ
79	باطنی بیماریوں کی معلومات	مؤلفین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	
80	المنن الکبری	علامہ عبد الوہاب بن احمد بن علی احمد شعرانی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
81	حصن حصین	امام محمد بن محمد بن محمد ابن جزری رحمۃ اللہ علیہ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۶ھ
82	الحرز الثمین	علامہ علی قاری رحمۃ اللہ علیہ	ریاض ۱۴۳۴ھ
83	صید الخاطر	امام عبد الرحمٰن ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ	
84	سرور القلوب	علامہ مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ علیہ	
85	المنبہات	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ	
86	المستطرف	علامہ شہاب الدین محمد بن احمد مَحَلّی شافعی رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
87	دین و دنیا کی انوکھی باتیں (ترجمہ مستطرف)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ
88	عیون الحکایات	امام عبد الرحمٰن ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
89	عیون الحکایات (اردو)	مترجمین شعبۂ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ ۱۴۲۸ھ
90	گلستان سعدی	شیخ سعدی شیرازی رحمۃ اللہ علیہ	انتشارات عالمگیر کتاب خانہ ایران
91	راہِ علم	مولانا علی اصغر عطاری مدنی مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ

کتب لغت

92	کتاب التعریفات	علامہ سید شریف علی بن محمد جرجانی رحمۃ اللہ علیہ	دار المنار لبنان

منظوم کلام

93	ذوقِ نعت	علامہ مولانا حسن رضا خان بریلوی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ المدینہ
94	وسائلِ بخشش	(علامہ مولانا) محمد الیاس عطار قادری رضوی (دامت برکاتہم العالیہ)	مکتبۃ المدینہ

जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है[1]

(26 रबीउ़ल अव्वल 1443 सि. हि./02-11-2021)

हम पे मौला का फ़ज़्लो करम हो गया, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
मरह़बा ! हो गई रह़मते मुस्त़फ़ा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
हर त़रफ़ इ़ल्म का नूर बढ़ने लगा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
कम है जितना करें शुक्र रब का अदा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है[2]
जो यहां आ के ता'लीम ह़ासिल करे, तेरा लुत़्फ़ो करम उस पे दाइम रहे
उस का सीना ख़ज़ीना बने इ़ल्म का, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
जामिअ़ातुल मदीना में पढ़ते हैं जो, या ख़ुदा ! ह़ाफ़िज़ा उन का मज़बूत़ हो
वोह न उक्ताएं उन का रहे दिल लगा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
जामिअ़ातुल मदीना में पढ़ने को जो, आए ख़ूब उस का ईमान मज़बूत़ हो
इ़श्क़े अह़मद की सौग़ात वोह पाएगा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
जामिअ़ातुल मदीना का हर मुन्सलिक, नेकियों में हमेशा रहे मुन्हमिक
या इलाही ! गुनाहों से उस को बचा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
आ़लिमे दीं बनो, दिल लगा कर पढ़ो, रब की रह़मत से तुम अच्छे मुफ़्ती बनो
ख़ूब ख़िदमत करो दीन की तुम सदा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
तुम यहां आ के पाओगे इ़श्क़े नबी, आलो अस्ह़ाब की चाह बढ़ जाएगी
आओ पाओगे तुम उल्फ़ते औलिया, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
त़ालिबे इ़ल्म जो भी मुबल्लिग़ बने, ख़्वाब में मुस्त़फ़ा की ज़ियारत करे
या ख़ुदा ! उस से राज़ी तू रहना सदा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
हर मुदर्रिस को और त़ालिबे इ़ल्म को, मौला मक्के मदीने का दीदार हो
अज़् पए ग़ौसो ख़्वाजा व अह़मद रज़ा, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है
जामिअ़ातुल मदीना की जो ख़िदमतें, करते हैं, उन पे **अल्लाह** की रह़मतें
ख़ूब बरसें येह अ़त्त़ार की है दुआ़, जामिअ़ातुल मदीना की क्या बात है

---

1 : اَلْحَمْدُ لِلّٰه जामिअ़ातुल मदीना के आग़ाज़ को 25 साल होने पर उस की "सिल्वर ज्यूबिली" के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर येह कलाम लिखा गया।

2 : मत़्लए़ सानी किसी और इस्लामी भाई का मौज़ूं कर्दा है। सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ

https://www.dawateislamiindia.org/